अक्टूबर - दिसंबर 2024, वर्ष : 5, अंक 18 ISSN: 2436-5017

हिंदी की गूँज

जापान से निकलने वाली
प्रथम हिंदी त्रैमासिक पत्रिका

विश्व रंग 2024

संपादक मण्डल

संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक,
डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा , जापान
(वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)

संरक्षक
इंद्रजीत शर्मा, न्यूयार्क(अमेरिका)
डॉ विदुषी शर्मा, (4 वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
नई दिल्ली,भारत

मुख्य संपादक
श्री विनोद पांडेय
हास्य कवि मंच संचालक
गाजियाबाद

संपादक
सुश्री कविता गुप्ता
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
प्रो स्वाति पाल
(जानकी देवी महाविद्यालय)

सह संपादक
डॉ अमित कुमार कौशल
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
डॉ विवेक शर्मा
(जानकी देवी महाविद्यालय)

विदेशी प्रभारी
संरक्षक इंद्रजीत शर्मा जी
1 – न्यूयार्क
+1(917)273-9744

डॉ श्वेता सिंह उमा
(वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
मॉस्को, रशिया

श्री सुरेश पांडेय
(वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
स्वीडन

सुश्री सुनीता चावला
आस्ट्रिया में
1100 vienna (Austria)

सारिका जैथलिया
जकार्ता, इंडोनेशिया
Ph: +62 896.9040.3536

भारतीय प्रभारी

1–प्रभारी पानीपत
श्रीमती कंचन सागर
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
1094, सेक्टर–13/17
किडने हॉस्पिटल के पास
पानीपत (हरियाणा)
पिन– 132103
9355472819

2 – प्रभारी भोपाल
श्री गीतेश्वर बाबू
125 जैन मंदिर के पास
पार्वती नगर वार्ड,1
जिला सीहोर मध्य प्रदेश 466 116
संपर्क–98933 21240 8319 321312

3–प्रभारी मैसूर
डॉ बी निर्मला
फ्लैट नं.–202, ए–4 ब्लॉक,
समुदाय पैलेसिया ग्रीन अपार्टमेंट,
(स्पीच एंड हियरिंग सिग्नल
सर्कल के पास),
मनसा गंगोत्री पोस्ट बोगादी मेन रोड,
मैसूर – 570006. कर्नाटक राज्य.
भारत. 9008253802

4– प्रभारी इंदौर
श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव
स्कीम न.78
विकास रो हाउस पिंक सिटी
म. न.674, पार्ट 1, फेज 2
नियर न्यू लोहा मंडी
निरंजनपुर (इंदौर), 98268 87380

विदेशी प्रतिनिधि
1– सुरेश पांडेय, स्वीडन
2– डॉ श्वेता सिंह उमा, मॉस्को
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
3–मौनीबिजय , नेपाल
4–सुनीता चावला, ऑस्ट्रिया
5– सारिका जैथालिया
जकार्ता, इंडोनेशिया

भारतीय प्रतिनिधि
1– अंशु जैन, (देहरादून)
2– ज्योत्सना गर्ग,(पानीपत)
3– डॉ कविता मल्होत्रा
(डबल वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
नई दिल्ली
4– कुलदीप बरतरिया
गाजियाबाद
5– विजयापंत तुली (मुंबई)

विशेष सहयोगी
ओमप्रकाश सपरा

स्वास्थ्य प्रतिनिधि
सुनीता चाँदला,अमेरिका

सैन्य परिशिष्ट प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा,महू

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज, बोध गया विश्वविद्यालय

रक्षा कवच प्रतिनिधि
श्री जय प्रकाश मिश्रा (पुलिस अधीक्षक),
पटना, बिहार

कानूनी सलाहकार
प्रवल माधुरी शर्मा
जयपुर,राजस्थान

मुख्य कार्यालय
टोक्यो, जापान
व्हट्सअप नंबर –
जापान
00818061658299
भारत
9289641577
Twitter @hindikigoonj
इंस्टाग्राम : @hindikeejoonj
@punjabidigoonj
YouTube: hindikigoonj, Tokyo, Japan
YouTube: punjabidigoonj, Tokyo,Japan
फेसबुक पेज :@ हिन्दी की गूंज,टोक्यो,जापान

ईमेल hindikigoonj.jp@gmail.com
hindikeegoonj@gmail.com

पत्रिका की सदस्यता लेने,रचना भेजने हेतु संपर्क करें
9289641577

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक हैं।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं । संपादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा । पत्रिका जापान के ISSN नंबर के साथ हर तीन माह बाद प्रकाशित होती है।

अनुक्रम

संपादकीय
अपनी बात– रमा पूर्णिमा शर्मा/5
अपनी बात–विनोद पाण्डेय/5

आलेख/शोधलेख/निबंध
ध्वनि सर्वव्यापक है–
डॉ मिथिलेश दीक्षित/6
बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और स्वस्थ्य–
डॉ बी निर्मला/33
आखिर क्यों चुप्पी साध गयी चिड़ियों की चहचहाहट–डॉ सत्यवान सौरभ/34–35
सम्पूर्ण विश्व को एक धागे में पिरोती हिन्दी भाषा–कुलदीप बरतरिया/51
क्षमा कल्याण द्वारा व्यवहार दर्शन से मनोगत पवित्रता–डॉ अजय शुक्ल/52–53

कहानी/लघुकथा/रम्य रचना
बेआवाज लाठी–डॉ कविता मलहोत्रा/7
तर्पण – लक्ष्मी शर्मा/8–9
सच कहूँ– डॉ राकेश छोकर/10
घोड़े वाले अंकल–डॉ संध्या गौतम/10–11
विजिटिंग कार्ड–मनीषा जोशी मनी/11–13
संस्कार–डॉ यती शर्मा/13
सरप्राइज–डॉ रमनिवास'मानव'/16
रावण का पुनर्जन्म–ओमप्रकाश प्रजापति/16
जुड़ाव–सतीश राठी/17
राधिका माँ–सुषमा श्रीवास्तव/17
डॉ विधी बिटिया–सुखमिला अग्रवाल 'भूमिजा'/17
कुछ दिन का बसेरा–साधना मिश्रा/18
फैसला– रागिनी वाजपेयी/24
भूख–सिमरन गिरधर/24
फेरीवाला–अन्नपूर्णा वाजपेयी आर्या/35
आस्था–मोनिका रुसिया/36
कठघरा–डॉ दीप्ति साहनी/36
सेवा भाव – डॉ मीना रवि/36
प्रयोजन–कर्नल आदिशंकर मिश्र 'आदित्य'/37
अन्तर्मन के प्रश्न–केशव राय/40
लौट के बुद्धु घर को आए –कंचन सागर /47

कविता/गीत/गजल
चलो माटी से मिलते हैं –सोनिया अक्स /14
कौन हूँ मैं – जयप्रकाश मिश्रा/14
मालवा का गौरव– शीला चन्दन /14
आदमी की आदमी से दूरी है– बी एल गौड़/15
मौत का उत्सव–ज्योति जुल्का/15
हत्या–डॉ कीर्तिवर्धन /15
मुक्तक–प्रीता वाजपेयी/18
हाइकु– मंजु श्रीवास्तव 'मन'/21
कुछ तो बोलो माँ–डॉ शिप्रा मिश्रा/22
एक राखी–नीतू कुमारी 'नितुंजली'/22
कैन्डल मार्च दृ खुसबू कुमारी/23
माँ– अतीश मिश्रा 'बुन्नू'/23
माँ–संजय शुक्ल /23
माँ– डॉ श्वेता सिंह 'उमा'/24
देश सम्मान के लिए जीते मरते–अभिमन्यु पाण्डेय /29
बुरा आगा, लगाने दो–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /30
माँ–गरिमा सूदन/30
बेटी जब मुसकाती है–बाल मुकुन्द पुरो. हित/30
शहीद की माँ–विजया माउंटेनियर/31
अक्सर हार जाती हूँ मैं–डॉ अलका भार्गव/32
सही दिशा में– रतन किर्तनिया/32
शुभ धनतेरस–प्राची गर्ग/32
जिंदगी–नीलम मेहता/37
इक नया सवेरा है–अमित कुमार कौशल/37
हमारी दीदी–गीताप्रिय सीमा बब्बर/38
रात–दिन–वंदना नाटेश्वरी 'योगी'/40
मेरी कविता न जाने कहाँ खो गयी–रश्मि अखोरी/40
फुर्सत–दिव्या माथुर/44
तजुर्बा–अनिल सुरेश मिश्र/44
बैठा है– अभिषेक त्रिपाठी/47

बाल कविता
मातृ भाषा हिन्दी–ज्योति यादव/31
मम्मी–पापा– विवान मल्होत्रा/31
हिन्दी – इंद्राक्षी वाजपेयी/31
माता–पिता– स्वस्ति मल्होत्रा/31

संस्मरण/स्मृति आख्यान
बचपन के वो दिन–गरिमा भाटी गौरी /19
अपना समारोह– प्रीतिदीप साहू/19

यात्रा संस्मरण
मारीशश की साहित्यिक यात्रा और सखियों की मस्ती–डॉ अंजना सिंह सेंगर/19–20

स्वास्थ्य
मानसिक स्वास्थ्यता EQ या IQ– सुनीता चाँदला/21

धारावाहिक उपन्यास
तलाश अस्तित्व की–डॉ अजय शर्मा/25&28

जापान की बात
नमस्ते इंडिया मेला– डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा/29
जापान में दशहरा–विकास रंजन /29

हिन्दी सूक्तियाँ
हिन्दी सूक्तियाँ–दीक्षा तिवारी/39

समीक्षा/पुस्तक चर्चा
अंतर्चेतना की अनंत यात्रा–संजय अनंत/41–44
ॐ तत् सत् : संकल्पना की नदी के भक्ति भाव
जल से छांदसिक भावांजलि– डॉ जयशंकर शुक्ल/48–51

व्यंग्य
आंटे में से गिरती कार– डॉ हरीश नवल/45–46

ज्योतिष
किस्मत को सुंदर बनाने का तरीका– डॉ विनय भारद्वाज/47

समाचार/समारोह
हिन्दी की गूंज का द्वितीय समारोह–कंचन सागर/54
हिन्दी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका की टीम का पानीपत में भव्य स्वागत– रमा पूर्णिमा शर्मा/54-55
हिन्दी की गूंज, टोक्यो जापान पानीपत में–कविता गुप्ता/55
पानीपत में हिन्दी की गूंज का समारोह– /56

अपनी बात

रमा पूर्णिमा शर्मा
जापान

विनोद पांडेय
संपादक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान

हिंदी भाषा, जो अपने आप में एक गहरी संस्कृति और समृद्ध इतिहास को समेटे हुए है, आज केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के विभिन्न कोनों में अपनी पहचान बना रही है। यह एक ऐसा समय है जब हिंदी न केवल संवाद का माध्यम बन रही है, बल्कि वैश्विक स्तर पर साहित्य, कला और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी बन चुकी है।

हम गर्व के साथ यह घोषणा करते हैं कि "हिंदी की गूँज" पत्रिका पिछले पांच वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही है और जापान में रजिस्टर्ड है। इस यात्रा के दौरान, हमने हिंदी भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रयास किए हैं और हमारे प्रयास निरंतर बढ़ रहें हैं । हमारा उद्देश्य इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और सम्मान को बढ़ावा देना है। हम चाहते हैं कि हिंदी के लेखन और साहित्य को जापान में एक नया मंच मिले, जहां लेखक अपनी रचनाओं को प्रस्तुत कर सकें और विश्व भर के हिंदी के पाठक उन्हें नए दृष्टिकोण से देख सकें।

आज के डिजिटल युग में, हिंदी ने तकनीकी क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। सोशल मीडिया से लेकर ब्लॉगिंग और ऑनलाइन साहित्य तक, हिंदी के रचनाकारों ने विविधता और नवीनता के साथ अपने विचारों को व्यक्त किया है। यह एक सकारात्मक संकेत है, जो दर्शाता है कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्कृति है।

इस पत्रिका में हम विभिन्न विषयों पर लेख, कविताएँ, कहानियाँ और समीक्षाएँ प्रस्तुत करते हैं , जो हिंदी के प्रति आपकी रुचि को और बढ़ाएंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि हम युवा लेखकों को एक मंच प्रदान करें, ताकि वे अपने विचारों को साझा कर सकें और हिंदी साहित्य में नई ऊर्जा का संचार कर सकें। बच्चों में हिंदी के प्रति जागरूकता आये इसके लिए यह पत्रिका सदा से प्रयासशील रही है । बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग पत्रिका का कवर पृष्ठ होता है और पत्रिका में जगह जगह पर बच्चों के चित्र और कविताएँ होती हैं ।

इस यात्रा में हम सभी का योगदान आवश्यक है। आइए, हम मिलकर हिंदी की गूँज को और भी विस्तारित करें, ताकि यह न केवल भारत में, बल्कि विश्व के हर कोने में सुनाई दे।

❑❑

संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान
hindikeegoonj@gmail-com
9289641577, +818061658299

सोशल मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता एक नई क्रांति को आगाह कर रही है । पत्र और पत्रिकाओं पर निर्भरता अब कम होती जा रही है । ऐसे में अब यह बहुत जरूरी है कि पारंपरिक मीडिया और आधुनिक मीडिया दोनों में सामंजस्य बनाया जाए । साहित्य और कविता के प्रसार और प्रचार में सोशल मीडिया की जबरदस्त भूमिका को विगत 10 वर्षों से अनदेखा नहीं किया जा सकता है । इसी तरह गं. भीर कविताएं और सार्थक चिंतन को समेटे हुए साहित्य के लिए पत्रिकाओं की भूमिका अब भी बड़ी है । सोशल मीडिया के बढ़ते दौर में काव्य की भूमिका एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिवर्तन का प्रतीक है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने कवियों और साहित्य प्रेमियों के लिए नए दरवाजे खोल दिए हैं, जिससे अब काव्य सिर्फ पुस्तकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह डिजिटल मंचों पर लाखों–करोड़ों लोगों तक पहुँचने लगा है।

मीडिया की इस भूमिका के बावजूद भी आज गंभीर रचनाओं के लिए पाठक पत्रिकाओं की ओर मुड़ते हैं । विस्तार होने के बावजूद भी सोशल मीडिया अभी भी गंभीर साहित्य के लिए अधिक कुछ नहीं कर पाई है । इसका एक महत्वपूर्ण कारण है युवा वर्ग का जुड़ना । अधिकतर युवा वर्ग आधुनिक साहित्य और हल्के फुल्के मनोरंजक काव्य में रुचि रखते हैं जो सोशल मीडिया पर आसानी से मिल जाती है । वो पत्र और पत्रिकाओं की ओर नहीं जा पाते । एक और कारण इंटरनेट का उपयोग उनके जीवन का हिस्सा है उससे इतर किताबों में अब बहुत कम लोग खोना चाहते हैं । ऐसे में पत्र–पत्रिकाओं के संपादक को और श्रम और दृष्टि की आवश्यकता पड़ जाती है ।

अब यह जरूरी हो गया है कि सोशल मीडिया को मनोरंजन से ऊपर उठकर अच्छे और गंभीर साहित्य से जोड़ा जाए, इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि पत्र–पत्रिकाओं के संपादक पुरानी धारणा को बदले और गंभीर साहित्य के साथ–साथ लोकरंजन विषय को भी प्रमु खता दें । युवा को पत्रिकाओं से जोड़ने का यह सुखद समय है, पारंपरिक मीडिया से उठकर पत्रिकाओं को इंटरनेट की दुनिया में पहुंचना होगा । काफी हद तक इस पर काम हो रहा है लेकिन और तेजी से काम की आवश्यकता है । सोशल मीडिया के महत्व को जानकर बड़े संपादक और ले खक भी उस पर सक्रिय हो रहे हैं । इससे युवा गंभीर साहित्य से भी जुड़ेगे और उन्हें साहित्य के मर्म का पता चलेगा । सोशल मीडिया एक स्वयं क्रांति है, देखा जाता है साहित्यिक लोग इससे दूर रहने का प्रयास करते हैं लेकिन इसके विपरीत यदि अच्छे और सार्थक साहित्य का बढ़िया प्रचार प्रसार हो तो आने वाले समय में सोशल मीडिया पर साहित्य को लेकर लोगों की मानसिकता भी बदलेगी और पत्र–पत्रिकाओं के प्रति लोगों का रुझान भी बना रहेगा क्योंकि आज भी अच्छे साहित्य को समझने वाले लोग किताब को एक अलग श्रेणी में रखते हैं भले इंटरनेट का दौर है । ❑❑

डॉ. मिथिलेश दीक्षित
लखनऊ

ध्वनि सर्वव्यापक है

अपनी सकारात्मक ऊर्जा का सभी के कल्याण के लिए सदुपयोग करना चाहिए, ताकि ईश्वर द्वारा अति कृपा पूर्वक विशेष उद्देश्य से दिया गया मनुष्य शरीर के रूप में यह जीवन सार्थक हो सके । इस शरीर के सभी अंगों का बहुत पवित्र और व्यापक महत्व है। हाथ छीनाझपटी, मारधाड़ , तोडफोड़ के लिए नहीं, श्रद्धापूर्वक नमन, प्रार्थना, वन्दना के लिए ,दान के लिए, अर्पण के लिए हैं। पैर सन्मार्ग पर चलने के लिए हैं । नेत्र अच्छा देखने के लिए हैं । इस प्रकृति में सर्वत्र सुन्दरता, सुषमा, सात्विकता व्याप्त है,जिनको देखने के लिए ये नेत्र मिले हैं, बुराई, कमी, मलीनता, खोजने और देखने के लिए नहीं। संसार में अनेक महान सन्त विचारक ,ऋषि–महर्षि, मनीषी,लेखक हमको विपुल ज्ञान–सम्पदा दे गये हैं, ये नेत्र उनको पढ़कर ज्ञान–अर्जन के लिए मिले हैं । ये कान अच्छी ध्वनि सुनने के लिए हैं, सद्विचार ,सत्संग, श्रेष्ठ–मधुर वाणी सुनने के लिए हैं।

चुगली, बुराई, परनिन्दा, झूठ–फरेब, प्रपंच फैलाने के लिए नहीं मिले हैं। वाणी का उपहार इस सृष्टि में केवल मनुष्य को मिला है। यह जीवन की सबसे बडी उपलब्धि है, जिसका प्रयोजन भी बहुत बड़ा है। इस वाणी के कारण ही अनेक मनुष्य महान हो गये। इस वाणी के सदुपयोग के लिए ईश्वर भी मनुष्य रूप में, अवतरित होते हैं । यह वाणी ही है, जो ध्वनि रूप में सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त हो जाती है । इसीलिए अक्षर को ब्रह्म कहा जाता है । यदि एक भी शब्द अशुद्ध, असत्य , अभद्र लिख दिया जाता है या बोल दिया जाता है, तो वह पूरे आकाश में व्याप्त हो जाता है और सबसे विशेष तथ्य यह कि वह कभी डिलीट नहीं होता, नष्ट नहीं होता जन्म–जन्मांतर तक उस व्यक्ति के दुखद अस्तित्व का कारण बना रहता है । कोई एक व्यक्ति जब अन्य व्यक्ति को अपशब्द कहता है , तो वह स्वयं के जन्म–जन्मान्तर को दुष्प्रभावों से ग्रस्त कर देता है, क्योंकि ध्वनि की एक अन्य विशेषता है ,प्रतिध्वनि । वह सब कुछ लौटकर उसी के पास आ जाता है। सृष्टि में तीन बातें अनिवार्य रूप में हैं–प्रतिक्रिया ,प्रतिध्वनि और प्रतिछाया, इसलिए अपने शब्दों के सम्बन्ध में बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है । ईश्वर मुकुट लगाये मूर्ति बनकर बैठा रहे और मनुष्य पूजा–पाठ कर ले और फिर कुछ भी करने को स्वतन्त्र हो जाये, ऐसा नहीं है। सृष्टि की पूरी व्यवस्था नियमित, व्यवस्थित, समरस, सुसंगठित सुसंचालित परस्पर सम्बद्ध है । एक सुई की नोंक के बराबर भी यदि कोई ग्रह अपना स्थान छोड़ दे, तो उथल–पुथल मच जायेगी। सभी ग्रह नक्षत्र अपनी–अपनी कक्षा में अवस्थित हैं और परिभ्रमण कर रहे हैं। मकड़ी के जाले की तरह पूरा विस्तार है इस सृष्टि का । यदि एक छोर भी हिलेगा तो पूरा जाला हिल जायेगा । किसी एक व्यक्ति के कुविचार ,अपशब्द की ध्वनि केवल उसी के समीप नहीं ,पूरे ब्रह्माण्ड में फैलकर , सभी को प्रभावित कर विचलित कर देने में समर्थ होती है।

ध्वनि तो सर्वव्यापक होती है, क्रिया की प्रतिक्रिया भी कई गुना अधिक होती है। कोई व्यक्ति यदि किसी का अहित करता है ,तो कभी न कभी उससे बहुत अधिक उसका स्वयं का अहित होना ही है । यह जीवन केवल अन्य का स्वत्व छीनने, अपने सुखों के लिए , अनुचित संग्रह करने, भोग–विलास के लिए नहीं मिला है । सब कुछ इसी प्रकृति से लेने वाला मनुष्य जब उसका ही हक छीनने पर उतारू हो जाता है, तब प्रकृति स्वतःउसका सब कुछ छीन लेती है और वह जैसे खाली हाथ आया था, वैसे ही चला जाता है , लेकिन अनेक प्रकार के पापों का बोझ अपने साथ संस्कार रूप में लिए चला जाता है , जिनसे उसका छुटकारा अनेकानेक जन्म में भी सम्भव नहीं होता । ऐसे व्यक्ति ईश्वर को नहीं मानते । वे नहीं जानते कि ईश्वर मुकुट लगाये मन्दिर में ही मूर्ति बना नहीं बैठा है,वह तो सर्वव्यापक है, वह तो इस प्रकृति में ही अपने विराट स्वरूप में विद्यमान है ,आकाश ,धरती , वायु, अग्नि जल –इन पाँच का समुच्चय ही तो उसका कलेवर है, वह ब्रह्मांड रूप है तो यह मनुष्य उसी का लघु स्वरूप पिण्ड रूप में है । वह समष्टि है, सभी का समुच्चय है, तो मनुष्य व्यष्टि है। उसका ही अंश है । चेतना के उच्च स्तर पर पहुँचकर मनुष्य में भी ईश्वरत्व सम्भव है । अनेक सन्तों ने ईश्वरत्व का साक्षात्कार किया और मनुष्य योनि को धन्य कर दिया । इसके विपरीत अनेक मनुष्यों ने मनुष्यता को भी छोड़कर राक्षसी रूप लेकर अपना और सभी का अहित किया । प्रवृति और चेतना की दिशा बदल जाने से कोई सन्त भी बन सकता है और पापी भी बन सकता है, यह विवेक भी मनुष्य को सहज ही प्राप्त है। निष्कर्ष रूप में ,केवल एक बात कहनी है कि सृष्टि की सबसे प्रभावी शक्ति ध्वनि है । संसार के अधिकांश झगड़े और युद्ध वाणी के दुरुपयोग से ही हुए हैं और हो रहे हैं । इसके प्रति इसलिए भी सभी को सचेष्ट रहना चाहिए क्योंकि जब अपशब्द बोला जाता है, तब वह आकाशरूपी ईश्वर को सीधे–सीधे चोट पहुँचाता है। हम सभी शून्य की तरह हैं , अच्छे विचारों, अच्छे व्यक्तियों, अच्छे कार्यों से जुड़ते जायेंगे, तो अगणित रूप में हमारा और संसार का सर्वतोमुखी कल्याण हो सकता है। ईश्वर अच्छाई को प्रसारित करता है। सभी दैवीय शक्तियाँ सत्कार्य की सहायक होती हैं । पापी क्षणिक लाभ भले ही प्राप्त कर ले, उसका विनाश अवश्यंभावी है । अच्छे व्यक्ति का कल्याण भी सुनिश्चित है। ईश्वरीय व्यवस्था बहुत सुनियोजित होती है, उसमें अविश्वास नहीं करना चाहिए ।

❑❑

डॉ. कविता मल्होत्रा
नई दिल्ली

बे आवाज लाठी

इतिहास गवाह है कि जब पांचाली को दांव पर लगाया गया तो साक्षात कृष्णा जी ने ही उनकी अस्मिता बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया था। प्रभु हर युग में नए अवतार में अवतरित होते हैं, लेकिन हरि का दर्शन केवल हरि की मौज में रहने वालों को ही मिलता है।

भोर की पहली किरण के साथ ही राहुल और राधिका के गठबंधन की खबर समूचे गाँव में आग की तरह फैल गई थी।

मुहल्ले का प्रधान हमेशा की तरह अपनी करतूतों को छुपाने का असंभव प्रयास करते हुए, पंचायत की बैठक में, बिन माँ बाप के युवा, राहुल की दादी को खरी खोटी सुनाकर समाज से बहिष्कृत करने की धमकी देता हुआ, मुहल्ले भर की औरतों की वाह वाही लूट रहा था। हालाँकि सबको पता था कि बिन माता–पिता की युवा होती बच्ची राधिका पर प्रधान की बुरी नजर थी। सिर्फ राधिका ही नहीं बल्कि हर उम्र की महिलाएँ, युवतियाँ, किशोरियाँ और बच्चियाँ, प्रधान की बुरी नजर और उसके अमानवीय कृत्यों से खौफ खातीं थीं। ये राधिका की बदकिस्मती ही तो थी कि उसके चाचा–चाची, राधिका की अनचाही जिम्मेदारी से पीछा छुड़ाने के लिए उसे दिन रात अपनी गृहस्थी के कामों के बोझ से दबाते रहते थे। जब कभी राधिका थकान से बेहाल होकर निढाल हो जाती तो उसे करंट लगाया करते और जान से मारने की धमकी दिया करते, ताकि वो फिर से काम में जुट जाए। करंट के झटकों का खौफ राधिका के मन में इस कदर बैठ गया था कि उसकी कभी इतनी हिम्मत ही नहीं हुई कि वो अपने चाचा–चाची के जुल्मों के खिलाफ आवाज उठा सके। रोजमर्रा का सामान लेने जाती राधिका पर प्रधान की बुरी नजर थी। पिछले महीने की ही तो बात थी जब दुकान पर काम करने वाले युवा लड़के राहुल ने गाँव के प्रधान को, अँधेरी गली में, राधिका से जबर्दस्ती करते हुए रंगे हाथों पकड़ा था और राधिका को उसके चंगुल से छुड़ाकर सुरक्षित उसके घर पहुँचाया था। तब से प्रधान इस ताक में था कि कैसे राहुल से अपनी बेइज्जती का बदला ले सके। उधर राधिका का राहुल के प्रति जायज सा झुकाव राहुल के मन में भी प्रीत के अंकुर प्रस्फुटित करने लगा था। पिछली रात अचानक उठे दर्द के कारण राधिका की चाची अपनी डिलीवरी के लिए चाचा के साथ अस्पताल गई तो एकांत के खौफ से राधिका ने राहुल को अपने पास बुला कर उससे अपनी पारिवारिक समस्याओं का समाधान करने की गुजारिश की। राहुल ने राधिका को मंदिर में ले जाकर भगवान को साक्षी रखते हुए पंडित जी की उपस्थिति में सात फेरों की रस्में पूरी करके राधिका को चाचा चाची के अस्पताल से लौटने के बाद बाइज्जत अपने घर ले जाने का आश्वासन दिया था। प्रेम के प्यासे दो युवा दिल सात जन्मों के बंधन में बँध गए थे। परिणाम स्वरूप, सुबह अस्पताल से लौटे चाचा का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया और राधिका का चाचा राहुल को घसीटता हुआ प्रधान के पास ले गया। राधिका ने अपने हालातों से लड़ते–लड़ते, समाज की गलतियों को बर्दाश्त करते हुए, अंजाने में जो गलती कर ली थी, उसके अंजाम का उसे अंदाजा भी नहीं था। उसकी सहनशीलता जवाब दे चुकी थी लेकिन राहुल के दिए हुए विश्वास और आश्वासन ने राधिका के मन में उम्मीद की जो किरण जलाई थी उसे जब समूचे गाँव का तिरस्कार मिला तो वो स्तब्ध रह गई। राधिका और राहुल ने अंजाने में समाज के ताने मोल ले लिए थे। सारी उम्र राधिका अपने परिवार के बड़ों की जान बूझकर की गई गलतियों पर पर्दा डालती रही, सिर्फ ये सोच कर कि शायद एक दिन सब सही हो जाएगा, लेकिन वो दिन आने से पहले ही राधिका ऐसी गलती कर बैठी थी जिसकी उनको ताउम्र माफी नही मिलने वाली थी। गलती, गलती होती है,बड़ी या छोटी नही होती है, लेकिन बड़ों की गलती को नजरअंदाज करके सारा दोष बच्चों पर ही क्यों मढ़ दिया जाता है,इसलिए कि वो मासूम होते हैं, सहना उनका मुकद्दर है। दरअसल बच्चे गलती नही करते, बल्कि उनको गलती करने पर मजबूर कर दिया जाता हैं।बड़प्पन का उम्र से कोई लेना देना नहीं होता राहुल ने राधिका की माँग में सिंदूर भरकर ये साबित कर दिया था। लेकिन अस्पताल से लौटे चाचा–चाची के हाथ से चौबीस घंटे की अवैतनिक नौकरानी निकल गई थी जिसकी तकलीफ उनसे सहन नहीं हो पा रही थी। सारे मोहल्ले की औरतों को राहुल के विरोध में खड़ा करने के बावजूद भी चाचा–चाची राधिका की खुशी को छीन नहीं पाए थे। सच है ऊपर वाले की लाठी में आवाज नहीं होती। समाज दोषी को सजा देना चाहता है और नियति दोष को ही जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए एक साधारण से मनुष्य को असाधारण प्रतिभा देकर पलक झपकते ही हर समस्या का समाधान कर देती है। राहुल के परिजनों ने राधिका को खुशी से अपना लिया था और राहुल के प्रेम ने राधिका के जीवन में वसंती पवन की दस्तक दे दी थी। राधिका के चाचा–चाची के कंधों पर उनकी गृहस्थी का बोझ आ पड़ा था, जिसकी उन्हें आदत नहीं थी। दिन तिलमिलाहट में गुजरने लगे और नवजात बच्ची की देखभाल के कारण रातों का जागरण उनके हिस्से में आया तो उन्हें मुफ्त में काम करने वाली भतीजी की सेवाएँ न मिलने की छटपटाहट होने लगी। पंचायत में बिन माँ–बाप की बेटी राधिका के बयान ने बचपन से उसके साथ हुए जुल्मों की पोल खोल दी थी, जिसके कारण राधिका को सबकी सहानुभूति और स्नेह मिलने लगा और उसके चाचा–चाची को उनके बर्ताव के कारण सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ा। उन्हें उनके किए की सजा मिल गई थी।

❑❑

लक्ष्मी शर्मा
सेवानिवृत्त सह आचार्य.
एम फिल, पीएचडी
राजस्थान विवि, जयपुर.

तर्पण

'कभी तो इधर से निकलेगा हरामजादा, आज मेरे हाथों से बच के नहीं जा सकता।' पुलिया के बीचो–बीच बिचले बास (वो स्थान जहाँ अंतिम यात्रा के लिए ले जा रहे शव को कुछ क्षण के उतार कर रखते हैं।) के लिए रखी पत्थर की बेंचनुमा पट्टी पर बैठे महेश की बेचैनी किसी तरह भी काबू में नहीं आ रही. उसने अपने कपडों में छुपाया हुआ गंडासा निकाला और पट्टी के किनारे पर घिसने लगा।

पानी की जरूरत उसे नहीं पड़ी क्योंकि आसमान और आंखों से टपकती पानी की बूंदे पत्थर को चिकना बनाए रखने के लिए काफी थी।

"मेरे बेटे की जान लेने वाले को एक ही वार में न मारा तो मेरा नाम महेश नहीं।" गंडासे की धार पहले ही खूब पैनी थी पर बदले के जुनून में बावला हुआ महेश लगातार घिसता रहा। अब पत्थर पर महेश की बूंदों और आँसुओं के साथ उसके माथे से गिरता पसीना भी टपक रहा है।

"एक ही बच्चा था मेरा, उसे भी मार डाला इन नीचों ने, छोड़ूंगा नहीं मैं... किसी को नहीं छोड़ूँगा। कानून जाने कब अपना काम करेगा। पर मैं एक–एक से बदला लेकर ही चैन से सो पाऊँगा।" बनैले सुअर की तरह गुर्राते महेश के होठों के किनारों से झाग गिर रहा है।

महेश बलाई का गुस्सा जायज भी है। उसके सत्रह साल के इकलौते बेटे की सियार–लोमड़ियों से नुची लाश पहाड़ों के जंगल में मिली थी, पुलिस को अब तक पक्का सुराग नहीं मिला है लेकिन उसे ही नहीं सारे गाँव को पक्का विश्वास है कि ये काम जमीन के बँटवारे की लड़ाई में उसी के चचेरे भाई ने किया है।

"मारना ही था तो मुझे मारते कमीनों, एक निहत्थे बालक की गरदन काट के कौन सी बहादुरी का काम कर दिया।' पत्थर पर चलते गंडासे की घिसिर–घिसिर आवाज पर महेश के दांत पीसने की किट–किट भारी पड़ रही है। 'अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि संतान के मरने का दुख क्या होता है।" और महेश पहाड़ से भी भारी और बादलों से भी बड़े दुख से पस्त महेश फिर रो पडा।

उतरती सांझ, बरसता पानी और पुलिया के नीचे हरहरा के बहती नदी के किनारे बने श्मशान घाट की छत के नीचे से उठती धुएँ की लकीर मिल कर एक डरावना रूपक रच रही है। रात के वक्त कोई भी इधर से गुजरना नहीं चाहता, और गुजरना पड़ ही जाए तो बिचले बास पर ठहरने की हिम्मत कोई नहीं करता। पहले महेश भी ऐसा ही था लेकिन आज उसे डर नाम की चीज छू तक नहीं रही। उस को चालीस दिन पहले की वो शाम याद आ रही है जब यहीं उसने मनीष, अपनी इकलौती सन्तान, की चिता को दाग दिया था। आग मनीष की चिता को लगी थी लेकिन उसमें जलने वाला महेश था। धू–धू करती आग में जल गई थी उसकी कोमलता, उसका सबके लिए प्रेम और करुणा। अब महेश जैसे साँस भर लेता प्रेत बचा है, ब्रह्मपिशाच जो बदले की आग में झुलसता अपने कंकाल को अपने ही कांधे पर ढोता हुआ भटक रहा है।

आज मनीष के लिए सवा महीने की धूप निकाली गई है। अपने ही हाथों से संतान का श्राद्ध करने का दुख शायद कंकाल को भी व्याप्त है. महेश का दुख भी आज पगला गया है, उसके माथे पर आज खून चढा है जो सोहन के छोरे देवेश का गला रेत कर ही उतरेगा।

सोहन उसके काका का बेटा, जिसने जरा सी जमीन के लिए उसके लाल की गरदन रेत दी थी।

शाम ढलते–ढलते पूरी तरह रात में बदल गई, गंडासे की धार पतली से पतली होती गई, इतनी कि पतली परत बन के झरने लगी। कोई फर्लांग भर दूरी पर नदी पर बने रेलवे पुल से दूधियों को लाने ले जाने वाली शटल भी गुजर गई, पर मनीष की साइकिल दूर दूर तक नहीं दिख रही।

'ऐसा तो नहीं कि किसी जलते–बलते ने बैरी को चेता दिया हो, केदार छीपा कल गंडासा देख के पूछ भी तो रहा था। और मैं भी तो कम नहीं, सारे गाँव में बदला लेने की बात करता फिर रहा हूँ, बैरी तो चेतेगा ही.' महेश को खुद पर खीझ आने लगी जो उसने पुलिया पार कर रहे धामण सांप पर ढेला फैंक कर उतारी।

'आधी रात को आएगा क्या ये छोरा। मेह–पानी की रात में इतनी देर कोई गाँव से बाहर रहता है भला, कैसे माई–बाप हैं इसके। रास्ते में जीव–जानवर हैं, रपट–कीचड़ है और ऊपर की हवाएँ भी तो अमावस की रात ज्यादा डोलती हैं। मिलने दे इस के बाप को, इस और इसके बाप दोनों की लू उतारता हूँ।' दूर परे के भतीजे की चिंता में महेश भूल ही गया कि वो उसके बैरी की औलाद है जिसे मारने के लिए ही वो यहाँ बैठा है।

पुलिया के नीचे से किसी गाड़ी की रोशनी ऊपर चढ़ती आ रही है। महेश ने घूघी (बरसाती) को माथे तक खींच लिया और गाँव की ओर चलने लगा जैसे कोई राहगीर खेत से घर लौट रहा हो।

मोटरसाइकिल वाले ने उसके पास से निकलते हुए मुड़ कर देखने की कोशिश भी की लेकिन अंधेरे, बरसते पानी और मोटरसाइकिल की तेज गति में देख नहीं पाया.। पर सोहन गूजर को महेश पहचान गया।

मोटरसाइकिल नीचे उतरते ही वो फिर से पुलिया के बीचोबीच आ कर बिचले बास की पट्टी पर बैठ गया।कैसा सुंदर सा संसार था मेरा, राजा के पूत जैसा मेरा मनीष....पढ़ने में अव्वल, खेती में काँधे से कांधा मिला के साथ देने वाला। मेरी तो दाहिनी भुजा ही काट ली हत्यारों ने, कहाँ से लाऊँ मेरे पूत को। इस बुढ़ापे में कौन बनेगा हम डोकरे–डोकरी का सहारा।

कहाँ चला गया मेरे मनीस्या रे।' आखिरी बात महेश के मन से नहीं होठों से निकली। जिसका दर्द नदी को भी छुआ और उसने जोरदार उछाल मार कर पुलिया की मुंडेर से अपना माथा फोड़ लिया।

उसी समय चिंघाड़ती हुई शताब्दी एक्सप्रेस गुजरी।

'आठ बजने आए, ये छोरा कहाँ अटक गया आज। और उसके द्वार के भी कैसे कठकरेजी हैं भाई, कोई ढूंढने तक नहीं आया. छोरे को बिगाड़ कर धूल कर रखा है अगर मनीष इत्ता लेट हो जाता तो उसकी माँ तो बेहाल ही हो जाती, और मैं जूत मार–मार के बच्चू की खोपड़ी खाली कर देता।

'और ये सोह्या तो हमेशा का डंगर, इसको कब बाल–बच्चों की फिक्र रही है जो अब होगी पर उसकी माँ को तो ध्यान रखना चाहिए न कि कमसीन भीगने की उमर में जवान बच्चे को बाहर सौ खतरे होते हैं।' महेश का ध्यान फिर से देवेश की ओर चला गया है और वो बेचैनी में पैर हिला रहा है।

अचानक उसे ऐसा लगा मानों पट्टी के नीचे से किसी ने उसके पैरों को छुआ है। "कौन है रे?" डर को जब्त करते, हाथ में पकड़े गंडासे को पट्टी के नीचे लहराते हुए महेश तेजी से उठ खड़ा हुआ। और पट्टी के नीचे से 'च्यां–च्यां–च्यां–च्यां' करता एक मरियल सा कुत्ता निकल कर भाग गया।

'मर भड़वे, तुझे भी यही जगह मिली थी." साँसों को ठिकाने लाते महेश ने कुत्ते को गाली दी।

लेकिन दो ही पल बाद उसे कुत्ते पर दया उमड़ आई। 'बापड़ा गरीब जीव इस मेह में कहाँ जाएगा।'

"आजा रे गंडक, तू भी बैठ जा भाई." और कुत्ता जैसे इसी बात की बाट जोह रहा था। वो अपने भीग गए मरियल बदन को फड़फड़ाता पास आ खड़ा हुआ जैसे पट्टी के नीचे जाने की बात की पक्की रसीद ले रहा हो।

"जा बैठ जा।" पूँछ हिलाता कुत्ता अपने ठीये पर जा ही रहा था कि पुलिया की ओर से आहट सी आई, कुत्ते ने नए–नए बने स्वामी के लिए पूरी वफादारी निभाई और दम लगाकर भौंकने लगा। ठीक उसी समय बादलों ने भी जोरदार हुंकार भरी और अब तक नरमाई से बरसता पानी भी मूसल की सी धार में गिरने लगा जिससे अँधेरे पर भी एक चादर और पड़ गई।

'अबकी जरूर वो ही है।' महेश ने चौकस होकर गंडासा सम्भाल लिया। आहट धीरे–धीरे पास आकर दिखने लगी है, दोनों हाथों को बगलों में दबाए एक दुबली–लम्बी देह तेजी से पग धरती उन्ही की तरफ आ रही थी।

देह, जिसे महेश नींद में भी चीह्न लेता। हूबहू उसके मनीष का रंग–रूप और कद–काठी ली है देवेश ने। और दोनों के बीच उम्र का अंतर ही कितना है, कुल डेढ़ महीने का। संग में खड़े होते तो लोग जुड़वां होने का धोखा खा बैठते थे।

"खाएँगे क्यों नहीं, तीन पीढ़ी का ही तो अंतर है। खून का असर कहाँ जाएगा, हाथों की रेख धोने से नहीं छूटती लाला।" मैया कहती भी थी।

उसका नाम भी तो महेश ने ही सुझाया था, गूजरों के कुलदेवता देवनारायण के नाम पर देवेश।

अंधेरे में काली घूघी ओढ़े बीच सड़क पर खड़ी आकृति को देखकर किशोर लड़के को डरना ही था। उसने जोर–जोर से हनुमान चालीसा पढ़ना शुरू कर दिया लेकिन ठहरा नहीं, न ही भागा।

'डर के भागने पर भूत जरुर पकड़ लेता है।'उसे अपने ताऊ की बात याद आ गई' थी।

"इत्ती रात तक कहाँ आवारागर्दी कर रहा था छोरे?" लड़के के मुँह पर जोरदार तमाचा जड़ने की इच्छा दबाते महेश ने कड़क कर पूछा।

"बड़दादा आप, इस बखत इत्ती बरसात में यहाँ क्यों खड़े हो?" लड़का पहचानते ही तुरंत ताऊ के पास आ गया।

"मेरी छोड़ नालायक, तू कहाँ घूम रहा था इतनी बरसात में? जरा भी शरम नहीं आई कि घर पर तेरी माई की रो–रोकर आँखें फूट गई होंगी और बाप बिचारा जंगल में हेरता डोल रहा होगा. और साइकिल कहाँ गई तेरी, कहीं किसी कुएँ–खाल में तो नहीं गिरा आया?"

"बड़दादा वो साइकिल पंचर हो गई उसी के फेर में देर हो गई. बड़ी मुश्किल से खींचते हुए कोचिंग क्लास के एक साथी के घर खड़ी कर के आया हूँ।"

देवेश और मनीष एक साथ ही पास के कस्बे में विज्ञान की कोचिंग लेने जाते थे। महेश का गुस्सा जरा ठंडा पड़ा। "और घूघी, वो क्यों नहीं लेकर गया? तुझे मालूम नहीं है कि चौमासे का टाइम है, मेह कभी भी बरसने लगता है। देख कैसे काँप रही है देह।" अब महेश देवेश को नहीं, अप. ने लाडले मनीष को डांट रहा है।

"गलती हो गई बड़दादा, आगे से ध्यान रखूँगा।' मनीष की आवाज और आंखों में माफी है।

"भीज गया सारा, बीमार पड़ गया तो सारी परीक्षा खराब हो जाएगी। ले इस को पहन ले।" महेश ने अपनी बरसाती लड़के के सिर पर डाल दी।

"बड़दादा, पर आप भीग जाओगे।" देवेश ने विरोध किया लेकिन महेश ने नहीं सुना, वो पीछे नदी की ओर झुका हुआ था, जहाँ उसने अभी–अभी कोई चीज फेंक दी है।

"क्या था बड़दादा, आपने क्या फेंका अभी।"

"कुछ नहीं रे, उस के कुछ फूल (अस्थियां) बचा रखे थे, आज उनका भी तर्पण कर दिया।" महेश की आवाज में जाने क्या था कि देवेश उसके कंधे से लग कर रो पड़ा उसके गले लगे महेश की आँखों में भी नदी का पानी उमड़ रहा है पर वो पिता है, रोते हुए बेटे को पुचकारते हुए अपने आँसू पी गया।

"चल अब, तेरी माई और मेरी लुगाई दोनों चिंता में बावली हो रही होंगी। और हाँ, कह देना तेरे बाप को कि मैं भूला नहीं हूँ, और बदला भी लेकर रहूँगा।"

महेश ने दुलार से लड़के की बाँह पर रखा। उसी समय गाँव की ओर से आती सड़क पर टार्च लेकर आ रहे कुछ लोग दिखाई पड़ने लगे जिन्हें देखते ही महेश ने अपने काँधे पर रखी लड़के की बाँह झटकी और मुड़ कर उल्टी दिशा में चल दिया।

बरसात अब भी जोरों से बरस रही है लेकिन नदी अब शांत, बहुत शांत बह रही है। श्मशान–घाट के उपर से उठा धुआँ पानी की बूंदों के पार ऊपर जाने किस लोक में जा समाया है मानों उसे मुक्ति की राह मिल गई हो।

महेश ने ऊपर देखते हुए हाथ जोड़ दिए, उसके जुड़े हाथों के साथ दो जोड़ हाथ और जुड़े है, उसके पीछे आ रहे देवेश और आँसू बहाते सोहन के हाथ।

कहानी/लघुकथा

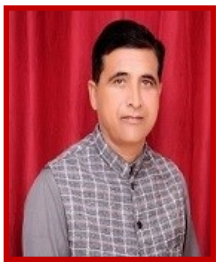

डॉ राकेश छोकर
विश्वकीर्ति धारक
साहित्यकार/पत्रकार
सहारनपुर

सच कहूँ

"सच कहूं तो यह सब रिश्ते विश्वास और समर्पण की डोर से बंधे हैं, तो रिश्ते हैं। अन्यथा अनुबंध सा बंधन हैं। आत्मीय भाव का ही अभाव है तो तभी वीनू, चंदन के ड्यूटी जाते ही मायके लौट जाती हैं। जिस दहलीज से चंदन का जन्म जन्मांतर का रिश्ता है, वह कैसे उसकी चाहत को बेगाना लग सकता हैं।जिस आशियाने का कोना कोना चंदन की यादों से महकता हो,वह कैसे उसके प्यार को सूनापन दे सकता हैं। लगता है कि चंदन, वीनू के बनावटी प्यार के मकड़जाल का शिकार ही हुआ है। उसका बड़ा ओहदा ही उसके रिश्ते की नींव हैं।यह रिश्ता, रिश्ता है क्या ? एक तुम थी चंदन की मां, जब मैं जर्मनी से तीन साल के बाद लौटा था। तुम तभी बीमार मां को देखने मायके गई थीं । चंदन के पालने पोसने और सास ससुर की सेवा में अपना जीवन ही झोंक दिया।" यह कहते कहते चंदन के पिता भावुक हो गए थे और पत्थर की मूरत बनी पत्नी शारदा को एकटक निहारे जा रहे थे। शारदा की चुप्पी टूटती ही कि वह फिर बोल उठे। "वक्त का तकाजा समझ,यह समझौते करने ही होंगे ।" यह कह अपनी छड़ी ले जयंत टहलने निकले ही थे कि शारदा की कॉल आई।

" सुनो,वीनू बहू लौट आई हैं, घर लौट आओ।"

बड़े ही आश्चर्य और हड़बड़ाहट में जयंत घर की ओर मुड़े ही थे कि वीनू के भाई को कार से लौटता देख थोड़ा सहम भी गए। थोड़ी घबराहट के साथ दहलीज से शारदा को आवाज दी कि बहू वीनू ने पैर छुए तो सहसा ही आशीर्वाद स्वरूप बहुत देर तक उसके सिर पर हाथ रखा ही रहा।तब शारदा ने ही टोका।"अब आगे भी बढ़ो जी, दूध ले आओ,बहू को ज्यादा दूध की चाय पसंद है।" शारदा ने खुशी के मारे कंपकपाते हाथों से जयंत के हाथों में डिब्बा थमा दिया। आज जयंत के पैरों को मानो हवा लग चुकी थी। कुछ ही समय में दूध से भरा डिब्बा घर ले आए । रसोई घर का नजारा देख जयंत की आंखों में आसूं भर आए।सास और बहू एक दूसरे को गहरे आलिंगन से जकड़े थीं। कई बार खखारने के बाद ही दोनों का आलिंगन टूटा। दोनों की आंखे आंसुओं से लबालब थीं। वीनू अपने अस्तित्व को समझ चुकी थी।वह लौट चुकी थी उसी आशियाने में, जिस आशियाने में पले बढ़े चंदन से शादी करने के लिए उसने सात सालों का लंबा इंतजार किया था। बड़े विरोध सहे थे। रातों की नींद खराब की थी।

एक लंबे अरसे के बाद सुकून से चाय की चुस्कियों से घर का उदासीपन टूट चुका था। तभी शारदा ने बेटे को कॉल कर जानकारी दी "बेटा,वीनू बहू घर आ गई हैं जल्दी लौटना।" वह आगे कुछ कहती वीनू ने जिद वश फोन लेकर जोर से कहा " चंदन अकस्मात कोई छुट्टी लेकर नहीं आना,जब भी वक्त मिले, तभी आना है। अपना ख्याल रखना। मम्मी पापा के पास मैं हूं।" उधर से चंदन के धीमे से बोल सुनकर वीनू सरमा गई। "सच कहूं, तुम मुझसे अथाह प्यार करती हो वीनू।"

❑❑

पार्थ
आयु– 13 वर्ष / कक्षा–7
चितकारा इंटरनेशनल स्कूल

घोड़े वाले अंकल

डॉ संध्या गौतम
पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
आर्य गर्ल्स कॉलेज, अंबाला

उमस भरी गर्मी में बेहाल हर्बल पार्क में सैर करते अंबाला शहर वासी , अपनी सेहत को लेकर जोश भरे, पसीने से लथपथ, गिलहरी के दौड़ने पर पेड़–पौधों की हिलती कुछ पत्तियाँ उनमें राहत की उम्मीद जगाती है। गर्मी अपने चरम पर है। वर्षा होने पर ही कुछ राहत मिलेगी, धरती की प्यास बुझेगी। वहां मुझे गूगल फिर ए० आई० युग में ज्ञान की उमस दिखाई दी, जहां ज्ञान का अपार भंडार तो है , लेकिन ज्ञान–गरिमा की वर्षा नहीं, जो आने वाली पीढ़ियों को शीतलता प्रदान कर सके। इस ठेस को मैंने सैर से लौटते समय तब अनुभव किया जब मोबाइल पर बात करती एक अपरिचित स्त्री की आवाज मेरे कानों में पड़ी –"वहीं आ जाना बेटा ,जहां घोड़े वाले अंकल हैं, मैं वहीं खड़ी हूं।" मैं उस युवा माँ को देखकर अचंभित थी, क्योंकि इतनी बड़ी मूर्ति के साथ मोटे–मोटे शब्दों में साफ लिखा था ' क्षत्रिय चक्रवर्ती सम्राट पृथ्वीराज चौहान' उसने उस ऐतिहासिक महान योद्धा को क्षण भर में ही अंकल बना दिया। यदि वह माँ केवल घोड़े का संकेत देकर उसे देशभक्त सम्राट का नाम बताती तो शायद अपनी भाषा,परंपरा और संस्कृति के प्रति अपने दायित्व का पूर्ण निर्वाह करती। मैं सोचने लगी क्या हम मानसिक रूप से इतने दुर्बल हो गए हैं कि हम सामान्य दिनचर्या में अपने बच्चों को भाषा और संस्कृति का सही ज्ञान नहीं दे पाते ।

सैर से लौटते समय राम मंदिर जाना मेरी दिनचर्या में शामिल है मंदिर पहुंची तो एक चार साल का बच्चा मोनू अपनी मां बबीता से मंदिर में लगी लोकनायक तुलसीदास की प्रतिमा के विषय में पूछ रहा था –" माँ यह कौन है ?"

माँ तपाक से बोली –"तुझे दिखता नहीं एक बंदा लिख रहा है ।" तब मैंने बड़े प्यार से बबीता को समझाया और

मनीषा जोशी मनी
नोएडा

विजिटिंग कार्ड

मोनू की जिज्ञासा को शांत करते हुए महानायक कवि तुलसीदास, 'रामचरित मानस' और हनुमान चालीसा के विषय में बताया । बबीता को कहा कि आज के युग में बच्चों को मंदिर लाना , उन्हें अध्यात्म से जोड़ना भी एक बड़ा कार्य है । हमें ऐसे ऊर्जावान स्थलों पर अवश्य ही सकारात्मक ऊर्जा का एहसास होता है , अन्यथा आज तो तनाव ही जीवन का हिस्सा बन चुके हैं । मन्दिरों में भी अत्यधिक कर्मकांड, लूटपाट या भगदड़ जैसी घटनाएं बच्चों को मन्दिरों से विमुख करती है । उनके प्रति भी हमें बच्चों को सावधान और सचेत करना है । बबीता ने मेरा धन्यवाद किया और बच्चों को सही जानकारी देने हेतु पढ़ने और सही बात बताने का संकल्प लिया ।

' घोड़े वाले अंकल 'वाक्य ने घर आने पर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा मैं विचार करने लगी कि आज पार्कों में घूमती, व्यायाम करती बूढ़ों की बढ़ती आबादी अपना ज्ञानवर्धन कर आने वाली पीढ़ियों तक अपने महानायकों के चरित्र वर्णन द्वारा इस ज्ञान–धारा को बड़ी सहजता से राष्ट्र प्रेम, विश्व प्रेम और मानव प्रेम में परिवर्तित कर सकती हैं । माता–पिता अपने बच्चों में श्रीराम, श्रीकृष्ण महाराणा प्रताप, शिवाजी, विवेकानंद आदि महापुरुषों के प्रेरक व्यक्तित्व के विषय में चर्चा कर उनमें राष्ट्रीय चेतना तथा देशभक्तों के प्रति मान–सम्मान की भावना भर सकते हैं। तब हमारे महानायक अंकल ना होकर हमारे अपने पूर्वज हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे, चौक–चौक लगीं बहुमूल्य ऐतिहासिक मूर्तियां भी सार्थक सिद्ध होगी। जब पार्कों में, चौपालों में बड़े–बूढ़े ,बच्चे खेल–खेल में मिलकर ज्ञान गोष्ठियां करेंगे तभी हमारे बच्चे भारत के मुक्त प्रांगण में तेजोमयी वीर बनेंगे।

❑❑

कविता––कमरे में प्रवेश के साथ ही नेहा पर बरस पड़ी।
कविता –क्या जरूरत थी तुम्हे बोलने की तुम चुपचाप नही बैठ सकती थी।
नेहा–ऐसा भी क्या बोल दिया मैने माँ तुम ही बताओ क्या गलत बोला !
कविता – क्या जरूरत थी बीच में बोलने की, कि हम दहेज नही दे सकते।

नेहा–तो क्या गलत बोल दिया कहती हो ना तुझे आगे नही पढ़ा सकते पढाई का खर्च नही उठा सकते ,तो फिर कहाँ से लाओगे इतना पैसा शादी का खर्च ही कितना होता है कपड़े गहने शादी की व्यवस्थाएँ रिश्तेदारों को लेना देना ना जाने क्या क्या ऊपर से इतना सामान के साथ कैश भी माँगते जब उन्हे शर्म नही आई तो मुझे क्यों आये ,माँ मैने जो किया ठीक किया।

कविता –क्या ठीक किया लड़का आईएएस है एक बार शादी हो जाती जिन्दगी भर राज करती हमारे कुछ फिक्स डिपैजिट है, कुछ उधार ले लेते और गहने तो मेरे है न,एक माँ गहने बनवाती ही इसलिये है कि जरूरत मे काम आये या उसके बाद वो गहने उसकी बेटी के काम आये। सब हो जाता पर तूने करे कराये पर पानी फेर दिया ।
नेहा–माँ क्यों परेशान होती हो ,छोड़ो भी ना फिर चुटकी लेती है ,कही तुम्हें मलाल तो नही कि आईएएस की बोली लगी और तुम अपनी रईसी नही दिखा पाई।

कविता –मजाक मत कर मुझे तुझ पर बहुत गुस्सा आ रहा है।
नेहा–क्यों माँ जाने दो न एक नम्बर के लालची थे वो लोग और तुमने दे खा फ्री का मिल रहा था तो कैसे ठूँस ठूँस कर नाश्ता खा रहे थे इससे ही उनका लालच दिख रहा था। माँ इतने लोभी लोग क्या तुम्हारी बेटी को दिल से अपना पायेंगे चलो छोड़ो माना वो अपना भी लेते है पर क्या मेरे मन मे उन लोगो के लिये वो श्रद्धा रहेगी जो एक सास ससुर के लिये बहू मे होनी चाहिये । क्या मैं उन्हे माता पिता सा दर्जा दे पाऊँगी। नही माँ ऐसे लोभियों को मै वो दर्जा कभी नही दे पाती। और होता क्या लड़ाई झगड़ा या तो वो लोग मुझे परेशान कर रहे होते या मै उन्हें परेशान कर रही होती। अब तुम ही बताओ कभी न कभी तो दिल का ज्वालामुखी फटता ही न?

कविता –हे भगवान क्या करूँ मैं इस लडकी का एक भी गुण लड़कियों के जैसे नही है इसमे।
नेहा– क्या माँ दिखती तो लडकी सी ही हूं और हूं भी लडकी और तुम जो गुण ढूँढ रही हो ना मुझमे उसे गुण नही कमजोरी कहते है। मैं आज के युग की लडकी हूं माँ ..मैं इन कुरीतियों का समर्थन नही करती।

तुम भी अपने विचारों को बदल दो आजकल दहेज देना और लेना दोनो अपराध है। हमें अपने अधिकारों की जानकारी होनी चाहिये।
कविता –तू मुझे मेरे अधिकार मत समझा जब चार पाँच साल तक शादी नही होगी और कोई भी अच्छा लड़का नही मिलेगा तब समझेगी कि मैं कितनी सही थी।
नेहा –मुझे शादी करनी ही नही है। खास कर ऐसे लालची से तो बिलकुल नही। तुम बस मुझे आगे की पढाई पूरी करवा दो फिर देखना चार पांच साल मे जब मै एक अच्छी नौकरी पर हुंगी। तब तुम समझोगी कि मै कितनी सही थी। और माँ मैं तुम्हे रानी की तरह रखूँगी कोई काम नही करने दूंगी तुम बैठकर हुक्म करना नौकरों को ठीक है. मां प्लीज अब तो मुझे पढ़ने दोगी न ।

कविता को ऐसा लगा जैसे छोटी सी बच्ची अपनी जिद पूरी कराने के लिए

अपनी माँ को प्रलोभन दे रही हो। और उसकी नाराजगी मुस्कुराहट मे बदल गई ठीक हैं बाबा तू आगे पढ़ ले. ले. किन अगर कोई अच्छा लड़का मिलेगा तो तुझे शादी करनी पड़ेगी ठीक है, हां हां कर लूँगी शादी वादी माँ और खुशी से माँ के गले मे झूम गई नेहा। आज कालेज का पहला दिन था नेहा जल्दी से तैयार हुई और एक छोटा सा टिफिन बैग मे डाला और घर मे बने मंदिर मे भगवान का आशीर्वाद लेकर बाहर आई माता पिता के पाँव छुए और बोली पापा मैं जानती हूं .. आप हमेशा से मुझे और पढ़ाना चाहते थे पर माँ की बातों से भी कही न कही सहमत रहते हैं पर अब जब माँ ने हां कह दी है तो मैं आप दोनों को कुछ बनकर ही दिखाऊँगी ,और यह कहकर वो घर से निकल गई । एक माह बीत गया नेहा की पढ़ाई भी अच्छी चल रही थी पर कॉलेज, प्रेम और यह उम्र यह तो उस सवाल की तरह होते है जिसका कोई जवाब नही । नेहा को भी कोई न कोई प्रस्ताव आ ही जाता कभी कोई लड़का खुद प्रेम पत्र दे देता तो कभी कोई अपने दोस्तों के हाथ नेहा को संदेश भेजते। उसे अपने उद्देश्य की चिन्ता होने लगी थी। एक दिन रात को उसने मन मे कुछ ठाना और सुबह कॉलेज मे जब कक्षा का एक लड़का अमित, नेहा विकास मुझसे तुम्हारा जवाब माँग रहा था बताओ क्या तुम उसकी दोस्त बनोगी ।

नेहा अमित मै तो सबकी दोस्त हूं इसमे पूछने की क्या बात है। नेहा तुम समझ नही रही या समझना नही चाहती देखो विकास तुमसे बहुत प्रेम करता है वह तुम्हे पसंद करता है यह पत्र तुम्हारे लिये, नेहा बोली ,देखो अमित मैं तुमको कुछ बताना चाहती हूँ मेरा विवाह तय हो चुका है। और अपने हाथ को आगे बढ़ाते हुए बोली यह अँगूठी मेरी मँगनी की है ,इसलिये प्लीज अब से न मेरे लिये ऐसे प्रस्ताव लाना न मुझे ऐसी बातों से तंग करना। धीरे धीरे ये बात सारे कॉलेज में भी फैल गई और एक ख्याल जो था ही नही उसने प्रेम त्रिभुज मे फँसने से उसे बचा भी लिया। साल बीतते गये। नेहा ने कालेज मे टॉप किया था..और पहले अटेंप्ट में ही आईएएस की परीक्षा भी... घर में उत्साह का माहौल था छोटी सी पार्टी रखी थी नेहा की सहेलियाँ और कुछ पड़ोसी घर में गीत संगीत चल रहा था, कमला ताई जो पड़ोस में ही रहती है। नेहा के लिये कितने रिश्ते बता चुकी थी। जब से वह आईएएस बनी मां कविता को कमला ताई का एक भी रिश्ता अपनी नेहा के लायक नही लग रहा।

कविता मेरी बेटी अफसर बन गई है। कोई ऐसे वैसे लडके से थोड़े ही ब्याह दूंगी उससे मेहनती सुशील सुन्दर है कोई लड़की इस रडौस में। कोई राजकुमार ही होगा अब तो मेरी बेटी का पति , मिसेज बतरा ,वो तो है। पर शादी तो एक उम्र में ही अच्छी लगती है वैसे मेरे भाई का लड़का इन्जीनियर है आप कहों तो बात चलवाऊँ ..कविता ने अनसुना कर दिया मिसेज बतरा मुँह टेड़ा करने लगी.. कविता और लोगो को उठकर नाश्ता देने लगी तो मिसेज बतरा बोली कैसे पर निकल आये है कविता के जैसे बेटी नही खुद अफसर बनी हो , घमंड दे खो एक वो समय था जब हमारे सामने गिड़गिड़ाती थी कोई लड़का बताओ हुँह और आज देखो कितना घमंड आ गया है। नेहा के कानों मे ये बातें सुनाई दी वह तुरंत वहाँ जाकर बोली आंटी आप कुछ लीजिए न मैं प्लेट लगा दूँ आपके लिये.. शायद वह यह जताना चाहती थी कि कुछ नही बदला वह वही नेहा है जिसकी प्रसंशा तो सब करते थे पर उनकी गरीबी के कारण शादी ब्याह करने मे सौ बहाने बनाते थे । मिसेज बतरा को वह उसके स्वभाव के कारण उस समय और अच्छी लगी बोली नही बेटा तुम अपनी सहेलियों के साथ ऐन्जॉय करो। हम ले लेंगे जो चाहिये होगा। और मन ममोस के रह गई काश नेहा उनके परिवार मे आ पाती।

नेहा मन ही मन सोच रही थी इंसान की भी अजीब फितरत है किसी के गुणों का आँकलन उसके ओहदे और रुतबे से करते है क्या एक गरीब इंसान के गुण कोई नही देखना चाहता ..तभी नेहा की सहेली निधि ने आवाज लगाई नेहा कहाँ खो गई डियर नेहा ने उसको देखा मुस्कुराते हुए बोली कही नही , निधी बोली चलो फिर तुम्हें किसी से मिलाना है।
नेहा बोली किससे ?
निधि चलो तो सही और हाथ खींचते हुए बाहर ले आई। सामने विकास हाथों मे फूल लिये खड़ा था।
नेहा थोड़ा सकुचाई ,
विकास ने फूल देते हुए बधाई दी ,और जाने लगा नेहा ने उसे अंदर बुलाया और चाय नाश्ता के बाद विदा करने के लिये बाहर आई तो विकास बोला। नेहा मुझे पता था कि तुम्हारी कोई मँगनी नही हुई है.. उस दिन जब तुमने मुझसे वो झूठ बोला तो मैं उदास होकर निधि के पास गया मैने उससे पूछा कि तुम्हारी शादी कहाँ तय हुई है सिर्फ इस तस्सली के लिये कि इतनी अच्छी लडकी को ब्याह कर ले जाने वाला परिवार व लड़का उसके लायक है कि नही। और निधि ने मुझे तुम्हारे बारे मे सब कुछ बताया तुम्हारी लगन और मेहनत के आगे मैने अपने प्यार को आगे बढ़ने से रोक दिया और तुम्हारी कामयाबी का इंतजार करने लगा। और आज तुम्हे कामयाब होते देख मै बहुत खुश हूँ। ईश्वर तुम्हें और कामयाब करे चलता हूं खुश रहो .कहकर वह एक बड़ी सी गाड़ी मे बैठकर चला गया।

निधि बोली नेहा इससे ज्यादाप्यार करने वाला साथी तुम्हें नही मिलेगा उसे सब पता था । मगर वह यही चाहता था कि तुम अपने मकसद मे कामयाब हो उसने अपने प्रेम को कभी तुम्हारे आड़े नही आने दिया कामयाब लडकी से तो हर कोई विवाह करना चाहता है। पर उसे आगे नही बढ़ाना चाहता यह चाहता तो रिश्ता लेकर तुम्हारे घर कब का आ जाता और आंटी मान भी जाती। क्योंकि शहर के जाने माने बिजनेस मैन का इकलौता बेटा

डॉ यति शर्मा
सेवानिवृत्त सहायक सूचना अधिकारी ,
संस्कृति मंत्रालय ,भारत सरकार

संस्कार

जो है विकास..

कई लड़कियों के रिश्ते आते है उसके लिये। और एक साल से अपनी कंपनी भी चला रहा है। मगर वो तुम्हें पसंद करता है। तुम्हारी इज्ज़त करता है मुझे जब भी मिलता है तुम्हारी ही बातें करता है और आज उसने तुम पर अपना इंतजार भी जाहिर नही किया । क्योंकि तुम गलत न समझ लो। मैं तो यही कहूँगी सच्चा प्रेमी वही है जो अपने साथी को आगे बढ़ाये। उसकी उन्नती मे खुश हो। और यह ऐसा ही लड़का है बाकी तुम समझदार हो। अगर तुम्हारा जवाब हाँ मे होगा तो ये विजिटिंग कार्ड लो और अगर ना में जवाब होगा तो इसे फाड़ देना मै पहले भी तुम्हारी दोस्त थी आगे भी रहूँगी अच्छा चलती हूं देर हो गई है बहुत।

नेहा मूर्ति की तरह उसे जाते देखती रही। जब वह चली गई। तो अंदर से माँ ने आवाज लगाई नेहा बेटा कहाँ रह गई मां की आवाज सुन नेहा जैसे नींद से जागी हाथ मे विजिटिंग कार्ड लिये। वह बोली आई माँ...और भीतर चली गई मां बोली सब चले गये चलो सबकी दावत अच्छे से हो गई । शाम होने को है पूजाघर में दीपक आरती कर लूं । मां पूजा कर रही 'ॐ जय जगदीश' की आवाज घर में ऊर्जा पंरदान कर रही थी नेहा ने धीरे से टेलिफोन उठाया। और विजिटिंग कार्ड से नम्बर मिलाने लगी।

❑❑

रुद्र भारद्वाज
कक्षा 8
अलीगढ़

गाड़ी अभी पूरी तरह से थम भी नहीं पाई थी कि सैकड़ो लोगों का एक हुजूम तेजी से दूसरी श्रेणी के डब्बे की ओर लपका सभी को यह डर था कि कहीं ऐसा ना हो की बैठने की सीट ही ना मिले एक व्यक्ति खिड़की से अंदर की तरफ कूदा उसके हाथ में एक अटैची थी वह व्यक्ति आसानी से भी उस डब्बे के अंदर बैठ सकता था किंतु न जाने क्यों उसके पीछे ही दो–तीन हैप्पी गोरे चिट्टे घुंघराले बाल वाले छ फुट लंबे शरीर के लोग उसे घसीटते हुए चढ़ गए ।

एक दो महिलाएं भी थी भीड़ के कारण स्वाभाविक तौर पर वह वहीं गिर गई। चढ़ने की मजबूरी के कारण वह व्यक्ति खिड़की से तो चढ़ा लेकिन वह लहू लुहान हो चुका था। यह सारी स्थिति से जूझने के बाद जब वह सीट पर बैठा तो उसने देखा कि घुंघराले बाल वाले हैप्पी भी क्रोधित अवस्था में एक दूसरे को धक्का दे रहे थे स्थिति अवलोकनार्थ मेरे सामने थी। एक ही क्षण में सीट की सोच को लेकर सब कुछ बर्बाद हो चुका था। सौभाग्य से मुझे एक सीट मिल गई थी ।

उस खिड़की से कूदने वाले व्यक्ति ने अटैची रखी और अटैची के ऊपर ही वह बैठ गया । मैंने भी संतोष की सांस ली । जैसे गोया मैंने कोई दुर्ग फतह कर लिया था । हमेशा की तरह खिड़की के समीप बैठना मुझे अच्छा लगता था किंतु उत्सुकतावश मैं देख रही थी वह जो हैप्पी थे उनके तीन–चार लोगों की टांगों से लगातार रक्त स्राव हो रहा था असमर्थता यह थी कि वह रो नहीं पा रहे थे । मैंने देखा कि जो खिड़की से व्यक्ति कूदा था वह खुद भी जख्मी था उसकी पूरी टांगे रक्त से भर गई थी । वह व्यक्ति कोई ग्रामीण लग रहा था जो खिड़की से ही कूद कर अंदर घुसा था । वह गिड़गिड़ा रहा था ,.....बाबूजी हम का अंदर ले लो बहुत जरूरी काम से जात हैं हम ,यह गाड़ी छूट गई तो हम कहूँ के ना रहब ....।

सीधा भोला भाला किंतु भारतीय परिवेश में संस्कारों से भरा हुआ व्यक्ति था । मैं चुपचाप टेंढ़ी आंखों से देख रही थी ।उसने सहानुभूति वश अटैची खोली और उसमें से दवा निकाल ली और एक धोती का साफ सुथरा टुकड़ा लेकर वह हिप की ओर बढ़ा और तुरंत उसने अपनी तकलीफ को छोड़कर उन लोगों की टांगों को साफ करना शुरू कर दिया । वह भी विनम्रता पूर्वक उस व्यक्ति से कुछ नहीं कह पाए । वह अकेला ही सबके लहू को साफ करके दवा दारू करने लगा । मैं हैरान थी उसकी हमदर्दी देखकर कि उसने खाली सीट उन लोगों के लिए छोड़ दी और खुद गाड़ी के जमीन पर ही अटैची के ऊपर बैठ गया था और बुरी तरीके से तिलमिला रहा था । धीरे–धीरे उसने सभी की टांगों को साफ करके दवा लगा दी गुस्से से भरे हुए तेज स्वर भी अब शांत हो गए थे । सभी के चेहरों की आकृतियां बदल चुकी थी। मैं हैरान थी तभी उनमें से एक ने उठकर उस मासूम भोले भाले देहाती व्यक्ति को पैसे देने की कोशिश करता है किंतु वह व्यक्ति पैसे लेने से इनकार कर देता है और व्यंग्य भरी दृष्टि से देखकर उन्हें कहता है ,''....बाबूजी हमने पैसे के लिए कुछ नहीं किया यह तो हमारे संस्कार है हम भारतीय हैं अतिथि संस्कारों के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं । एक जोरदार अट्टहास उस गाड़ी के डिब्बे में गूंज गया। सभी लोगों की करतल ध्वनि से वह डब्बा गूंज उठा ।सभी हतप्रभ होकर उस देहाती व्यक्ति को देख रहे थे। तभी बाकी के गाड़ी वाले उठकर खड़े हो गए और उसके लिए करतल ध्वनि से स्वागत किया आखिरकार भारतीय संस्कारों की जीत हुई । इस धक्का मुक्की ने यह साबित कर दिया था कि भारतीय प्रतिस्पर्धा अवश्य करते हैं लेकिन बुद्धिमत्ता और संस्कार कभी नहीं छोड़ते। भारतीय संस्कार भारत को ऊंचे शिखर पर आरूढ़ करते हैं।

❑❑

सोनिया अक्स
पानीपत

जयप्रकाश मिश्रा
पुलिस अधीक्षक
पटना, बिहार

शीला चंदन(शिक्षिका)
इन्दौर (म. प्रदेश)

चलो माटी से मिलते हैं

बुलाती है हमें माटी
चलो माटी से मिलते हैं।

सुलगती रात डसती है
ये तन्हा दिन सताता है,
नहीं जब गैस जलती है
तो चूल्हा याद आता है।
सिकी कल्ले पे सौंधी सी
वो रोटी याद करते हैं———

थकन दिन की मिटाने को
वो चौसर शाम को बिछना,
वो गिल्ली डंडे का झगड़ा
वो अंटी बंटी कह भगना,
कहाँ अब गाँव के कीचड़ में
अपने पाँव सनते हैं———

कहाँ वो दिन गये बोलो
जहाँ रोटी की चूरी थी
वो परियों की कहानी थी,
जहाँ दादी की लोरी थी
कहाँ अब डाल के झूलों पे
सावन पींग भरते हैं———

वो रिमझिम बारिशों की बूंद
मुठ्ठी में जकड़ने को
ये बाहें फैलती थी
आसमाँ अन्तस् में भरने को
मेरी साँसों में अब भी
गाँव के मौसम महकते हैं———

वो इक कट्टी वो इक अब्बा
फकत उंगली के छूने से
नजर का झट उतर जाना
वो इक काजल के टीके से
हसीं अपनत्व के साये
कहाँ अब जाने रहते हैं———
गाँव के मौसम मचलते हैं———

❑❑

कौन हूं मैं

सवालों के घेरे में मैं उलझ जाता हूं
पहेलियों के दिल में समा जाता हूं
पड़ोसियों को भी झेल जाता हूं
बच्चों की परेशानी से
रूबरू हो जाता हूं
घर वालों के ताने झेल जाता हूं
अपनी तन्हाइयों से
दिल बहलाता हूं
दो रोटी के लिए परेशान हो जाता हूं
किसी की फीस तो
किसी का ड्रेस तो
किसी की ख्वाहिश पूरी करते
थक जाता हूं
किसी की नजरों में
बेवजह गिर जाता हूं
परेशानियां आती जाती रहती हैं
फिर भी हिम्मत नहीं हारता हूं
ना कोई दिलासा देने वाला
ना कोई मोहब्बत करने वाला
ना कोई नाम लेने वाला
जिंदगी के अंतिम सांस तक जीने
वाला इंसान कहलाता हूं
फिर भी हर किसी के
चेहरे पर खुशी नहीं ला पाता हूं
मैं कुछ बच्चों का बाप कहलाता हूं।

❑❑

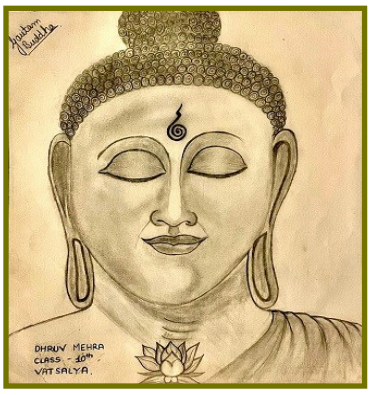

ध्रुव मेहरा , कक्षा-9

मालवा का गौरव

सौम्य सुवासित माटी मालवा की
खुशबू चन्दन सी देती है।
सुन्दर और सुगंधित धरती
हर जन की पीर हर लेती है।।

मां नर्मदा, क्षिप्रा,रेवा
जिसके पद रज वरण किये।
महादेव जहां स्वयं विराजे
स्वंमभू रुप धारण किए।।

तपोभूमि ऋषियों मुनियों की
वीरों का संसाधन है।
कला जहां प्रतिष्ठित होकर
हर दिल का करती अभिवादन है।।

इस माटी की गौरवगाथा
देवी अहिल्या मान करे।
जिनके तप संयम के बल पर
होलकर वंश अभिमान करें।।

शिव,योगीनी,सरला ,महादानी
न्याय प्रेम की माता है।
देवी!यह मालवा की धड़कन
मर्यादा की अधिष्ठाता है।।

इन्दौर की सिंदुरी सुबह
मालवा की शीतल शाम है।
हे! मातृरूप,हे सौम्य शिला तुम
तुमको कोटी प्रणाम है।।

❑❑

पार्थ, आयु– 13 वर्ष कक्षा–7
चितकाकारा इंटरनैश्नल स्कूल

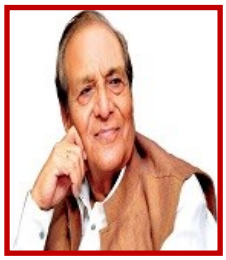

बी. एल गौड़
वरिष्ठ साहित्यकार
एवं उद्योगपति

ज्योति जुल्का
कवयित्री ,
अध्यापिका

डॉ कीर्तिवर्धन
वरिष्ठ साहित्यकार

आदमी की आदमी से दूरी है

प्यार की कहानी सदा आधी औ अधूरी है
लोग कहें पूरी है कि पूरी है कि पूरी है ।

हो रहे धरा पे आज कोने कोने युद्ध हैं
अब न आते याद हमें गांधी और बुद्ध हैं
येन केन प्रकारेण अपना देश है बचा हुआ
सीमाओं की चौकसी से दो पड़ोसी क्रुद्ध हैं

आदमी की सोच अब तो हो चली है आसुरी
इसलिए ही आदमी की आदमी से दूरी है

प्यार का दुर्भाग्य है कि शब्द ये अधूरा है
चांदनी का चांद भी तो एक दिन ही पूरा है
पूरी नहीं होतीं कभी आदमी की चाहतें
मायाजाल में इस ब्रह्म के कुछ भी न पूरा है

गगन के विस्तार का न होता कोई आदि अंत
इस लिए परवाज हर परिंदे की अधूरी है ।

❑❑

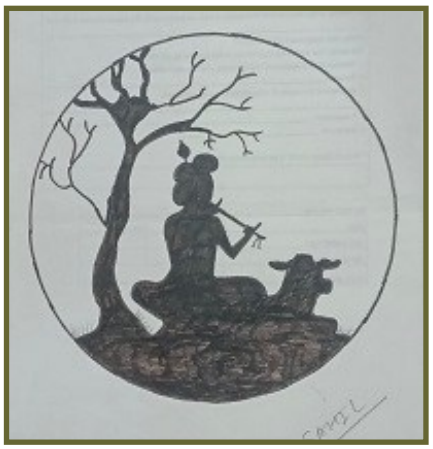

साहिल, कक्षा-9

मौत का उत्सव

मेरे जाने पर,
न मायूस होना,/न आंसू बहाना,
अपने हाथों में मेरा हाथ लेकर
बस मुस्कुराना.
फिर लौट कर आना है मुझे,
इक नए जन्म के लिए
मुझे विदा करना/मेरी रुखसती में
तुम उत्सव का कोई रंग भरना।

मैंने जिंदगी का हर पल
जिया है ....../हर रस चखा है
जीवन का आनंद लिया है,
दौड़ी हूं नंगे पांव घास पर....
तितलियों के पीछे भी भागी हूं ...
उनींदी रातों में तारे गिनते हुए भी
जागी हूं...।
महफिलों के कहकहों में अक्सर
खोई हूं....
यारों के दुख के अहसास में रोई हूं..
प्यार की पीड़ा में दिल डुबोया है....
किसी की जुदाई में पलकों को
भिगोया है.../उड़ती फिरी हूं खुली
फिजाओं में /याद रखना तुम मुझे
अपनी सदाओं में.....।

हर पल,हर क्षण
बस मुझे याद कर मुस्कुराना।
याद रखना/मेरी मस्तियां,
मेरा याराना ...
मिट्टी से उगी, मिट्टी में ही मिल
जाऊंगी,/खुशी का राग बनकर
हवाओं में घुल जाऊंगी,
सुनो/मुझे लौट कर भी आना है,
फिर कभी, कहीं, किसी जन्म में
शायद अपने को मिल जाना है,
सुनो/जब मैं जाऊं गहरी लंबी नींद
में /तो गमों को न बुलाना,
मेरी मौत का तुम उत्सव मनाना।
मेरी मौत का तुम उत्सव मनाना....!!

❑❑

हत्या

कल
उसकी हत्या कर दी गई,
हत्यारा कोई और नहीं
सबूतों और गवाहों के
बयानों पर विश्वास करने वाला
अंधा कानून ही था।

हत्या का मतलब
मात्र किसी हथियार से जान लेना
अथवा
जान से मार देना ही तो नहीं
अपितु
सामाजिक तथा मानसिक तौर पर
प्रताड़ित किया जाना भी तो
हत्या ही है।

कहते हैं प्रत्येक हत्या का
कोई उद्देश्य होता है,
हाँ
हत्या का उद्देश्य था
अन्याय के विरुद्ध
अपनी आवाज उठाना,
निर्भीकता और सच्चाई से
बिना यह समझे कि
सामने खडा न्याय का पक्षधर
कानून अंधा है,/वह सुनता है
आवाजें उन चंद गवाहों की
जिनकी आँखें जो देखती हैं
बोल नहीं सकती,
कान भी जो सुनते हैं
बता नहीं सकते,
और मुँह न कुछ सुनता है
न देखता है /परन्तु वही बोलता है
जो बुलवाया जाता है।

और कानून की कलम
सबूतों के अभाव में
दिल की आवाज के विरुद्ध उसकी
सामाजिक और मानसिक
हत्या कर देती है।

❑❑

कहानी/लघुकथा

डॉ. रामनिवास 'मानव'
वरिष्ठ साहित्यकार
नारनौल

सरप्राइज

पत्नी ने सारी सब्जी उसकी प्लेट में डालकर, पतीले को चुपके–से ऐसे ढक दिया, लगे जैसे उसमें उसके लिए काफी सब्जी है। लेकिन उसने नजर बचाकर देख लिया था कि पतीला खाली है। वह इसका कारण समझता था। कल की ही बात है। उसकी प्लेट में थोड़ी–सी सब्जी बची थी। वह मुश्किल से चार चपातियां ही खा सका था। पत्नी ने और चपाती लेने के लिए कहा, तो वह इतना ही बोला था कि खाऊंगा किस चीज के साथ। पत्नी भी इसके आगे कुछ नहीं बोली थी।

उसने खाकर देखा, तो सब्जी बड़ी टेस्टी लगी। आलू–मटर की सब्जी बहुत दिनों बाद बनी थी, वह भी थोड़ी–सी। वह मन–ही–मन सोच रहा था–'काश, आज तीन–चार प्लेटें होती सब्जी की, उसके सामने! वह सब चट कर जाता।' वह एक बार फिर अपनी पत्नी को सरप्राइज देना चाहता था, पहले की तरह।

जब नई–नई शादी हुई थी उसकी, यह बताने के लिए कि पत्नी का बनाया खाना उसे कितना टेस्टी लगता है, कई बार दोनों का खाना वह अकेले ही साफ कर जाता था। पत्नी को अपने लिए खाना दोबारा बनाना पड़ता था। इस क्रम में दोनों को ही बड़ी खुशी मिलती थी। वह आज उसी खुशी को दोहराना चाहता था।

लेकिन खाते–खाते उसकी गति अचानक धीमी पड़ गई। सारी सब्जी वही खा जायेगा, तो पत्नी खाना कैसे खायेगी? नहीं, अब ऐसा सरप्राइज ठीक नहीं रहेगा। और वह आधी प्लेट सब्जी छोड़कर उठ गया।

''आपने यह सब्जी क्यों छोड़ दी? चपाती और ले लेते।'' यह पत्नी थी।

वह जानता था कि यदि उसने कहा कि यह तुम्हारे लिए है, तो वह तुरंत कह देगी कि मेरे लिए पतीले में रखी है सिर्फ या फिर मुझे सब्जी अच्छी लगती, मैं तो अचार या चटनी के साथ खाऊंगी। उससे ऐसी बातें, पिछले दो वर्षों में, कई बार सुन चुका है। अतः मुंह बिगाड़कर बोला–''मुझे अच्छी नहीं लग रही है।''

उसने देखा, पत्नी का चेहरा एकदम उतर गया था। पति ने उसकी बनाई किसी चीज को पहली बार नापसंद किया था।

झूठ बोलकर वह भी पछता रहा था। पत्नी को उसकी बात इतनी बुरी लगेगी, यह उसने भी नहीं सोचा था। झूठ उसके गले में जाकर जैसे अटक गया था। ''जरा पानी देना।'' कहकर उसने गिलास पत्नी की ओर बढ़ा दिया। उसकी निगाहें खाली पतीले पर जा टिकी थीं।

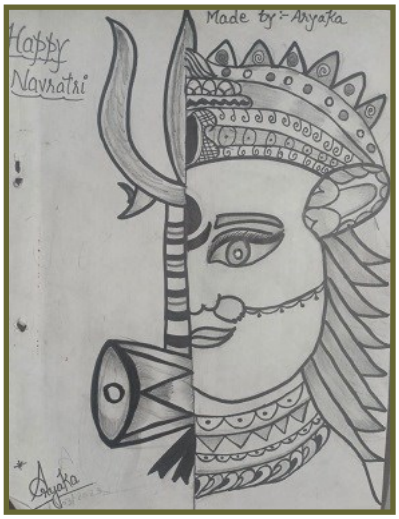

❑❑

आर्यका
11 वर्ष / कक्षा 6
बालाजी ग्लोबल अकेडमी
मैनपुरी

ओमप्रकाश प्रजापति
संस्थापक एवं संरक्षक
ट्रू मीडिया

रावण का पुनर्जन्म

गांव के छोटे से स्कूल में दशहरे का उत्सव मनाया जा रहा था। बच्चे रावण का पुतला जलाने की तैयारियों में जुटे थे। पुतला बड़ा और भव्य था, मानो इस बार रावण को सजीव कर दिया गया हो। स्कूल के प्रधानाध्यापक, मास्टर भावेश, अपने विद्यार्थियों को समझा रहे थे कि रावण का अंत अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

एक छात्र, हर्षित, हमेशा की तरह शांत बैठा था। वह सोच में डूबा हुआ था। मास्टर जी ने उसकी उदासी देखी और उससे पूछा, ''क्या हुआ राहुल? तुम खुश नहीं लग रहे।''

हर्षित ने सिर उठाया और बोला, ''मास्टर जी, क्या रावण सच में मर गया है? अगर वह मर गया है तो फिर हर साल उसे क्यों जलाना पड़ता है?''

मास्टर हर्षित को यह सवाल अचंभित कर गया। उन्होंने थोड़ा विचार किया और फिर बोले, ''हर्षित, रावण का पुतला तो हम प्रतीकात्मक रूप से जलाते हैं, लेकिन असली रावण आज भी जिंदा है।''
हर्षित चौंका, ''जिंदा है? कहाँ?''

मास्टर जी मुस्कुराए, ''रावण हर इंसान के भीतर बसा हुआ है – अहंकार, लालच, द्वेष और झूठ के रूप में। जब तक हम अपने भीतर के इन रावणों को नहीं जलाएंगे, तब तक असली रावण नहीं मरेगा। इसलिए हर साल दशहरे पर हम केवल प्रतीकात्मक रूप से रावण का पुतला जलाते हैं, पर असली युद्ध हमारे भीतर चलता रहता है।''

हर्षित को मास्टर जी की बात समझ आ गई। उसने सोचा, ''इस बार मैं दशहरे पर पुतला जलाने के साथ–साथ अपने भीतर के अहंकार को भी जलाऊंगा।''

उस दिन से हर्षित ने ठान लिया कि हर दशहरे पर वह अपने किसी बुरे स्वभाव को खत्म करेगा। उस साल दशहरा हर्षित के लिए सिर्फ एक उत्सव नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत बन गया।

❑❑

सतीश राठी
इंदौर

जुड़ाव

'साहब, आपकी बैंक में बचत खाता खोलना है, लेकिन उधर काउंटर पर बैठे बाबूजी मना कर रहे हैं।' उस मजदूर महिला ने आकर मुझसे कहा।

'क्यों मना कर रहे हैं तुम्हें?' मेरा प्रतिप्रश्न था।

'कह रहे हैं कि तुम परदेसीपुरा में रहती हो, तो वहाँ की बैंक में खाता खोलो। यहाँ वल्लभनगर में नहीं खोलेंगे।' उस महिला ने बताया।

'ठीक ही तो कह रहे हैं। यहाँ आना–जाना तो तुम्हें बड़ा दूर पड़ेगा। आखिर यहाँ पर ही क्यों खोलना चाहती हो तुम अपना बचत खाता?' मैंने पुनः प्रश्न किया।

'आप नहीं जानते साहब। जब इस बैंक की इमारत बन रही थी तो मैंने यहाँ पर ईंट उठाई थी। मेरे पसीने की बूंदें गिरी हैं इस भवन की भीत में।' महिला ने नम आँखों से स्पष्टीकरण दिया।

उसके स्पष्टीकरण से मेरी आँखें नम हो गई थी। बिना कुछ बोले उसे सामने बैठने का इशारा कर मैं उसके बचत खाते का फॉर्म भरने लगा।

❑❑

सिनचना एन
कक्षा–7 बी
मैरियानिकेतन इंग्लिश स्कूल

सुषमा श्रीवास्तव
इंडोनेशिया

राधिका माँ

घर में सुबह से ही चहल–पहल थी। राधिका मिठाइयाँ कहाँ रखवानी, राधिका मंडप कहाँ लगवाना, राधिका ये कहाँ, वो कहाँ? राधिका चकरघिन्नी–सी नाच रही थी, तभी उसके कंधे पर किसी ने हाथ रखा, पलटकर देखा तो लता मनमोहक मुस्कान के साथ दिखीं। उन्हें देखते ही वह अतीत के झरोंखों में विचरने लगीं। पति की दुर्घटना में मृत्यु होने से उसकी दुनिया उजड़ चुकी थी। रोते–रोते ही सोच लिया कि वह भी सती हो जायेंगी, अब जीवन निरर्थक है, तभी अबोध बच्ची के रुदन की आवाज आई। वो काँप उठीं। हे प्रभु! ये अनर्गल विचार? सच है कि पति बिना पत्नी का अस्तित्व नहीं, पर माँ का अस्तित्व? वो पत्नी नहीं, माँ बनकर जियेगी। पर कैसे? तभी समाचार मिला कि प्लास्टिक पर पाबंदी लग गई, तो बचपन के शौक कागज के लिफाफे को उन्होंने आजीविका का साधन बनाया। लता जी के सहयोग से कुटीर उद्योग कारखाने में और अबोध पुत्री प्राचार्या में तब्दील हो चुकी थी। माँ, माँ की आवाज से तंद्रा भंग हुई, पुत्री बुला रही थी, पर जेठानी का स्वर– नहीं, विधवा राधिका पूजा में सम्मिलित नहीं होगी। बेटी का शालीन स्वर माँ क्यों नहीं ताई जी? बच्चों के लिए तो माँ ही भगवान होती है, और पुत्री की इस बात से सभी सहमत थे, राधिका के नयनों में अश्रु थे।

❑❑

सुखमिला अग्रवाल
'भूमिजा'

डा. विधी बिटिया

आज मां को परलोक गये एक महीना हो गया।एक एक कर सभी रिश्तेदार व विदेश में बसे दोनों भाई भी आज लौट गये।विधी मां की तस्वीर पर माथा टेकते भावुक हो उठी। आंखों से अश्रु धारा बह निकली।माँ तुम मुझे छोड़कर क्यूं चली गयीं। तुम्हारे बिना कैसे जिऊँगी मैं।

दोंनो भाईयों के विदेश जाने फिर पापा के भी स्वर्ग सिधारने के बाद विधी अच्छा–खासा जॉब छोड़ दिल्ली में अकेली पड़ गयी माँ के पास हमेशा के लिये रहने आ गयी। उससे माँ का अकेलापन देखा नहीं गया। माँ –बेटी ने मिल घर से ही मसाले,आचार,चटनियों का बिजनेस शुरू कर दिया, जो दिन दुगुना, रात–चौगुना फलने–फूलने लगा। यह माँ के ही हाथ का जादू था जो अब दोनों के साथ काम करने पर बहुत ही मददगार साबित हुआ था।प. रम्परागतता व आधुनिकता का बेजोड़ संगम बन चुका था।

दोनों बहुत खुश थीं कि एक दिन अचानक मां का साथ छूट गया।

आँसुओं से भरी आँखें दोनों हाथों से ढके–ढके कहने लगी,'माँ तुम्हारे बिन मैं अकेली कैसे जिऊंगी।'' रोते–रोते याद आया,माँ ने एक पर्स देकर कहा था मेरे जाने के बाद इसे देखना।

विधी व्यग्रता से पर्स ढूंढ़ने लगी जिसे उसने लापरवाही से कहीं रख दिया था। ओह.. पर्स मिल गया। आतुरता से खोलकर देखा, एक कागज सा दिखा वो उसे पढ़ने लगी।

' मेरी प्यारी बिटिया, डा. विधी..!!

पढ़ते हुए विधी ने निश्चय किया अब अपने नाम के आगे डा. जरूर जोड़ेगी पी.एच.डी करके। बचपन से देखा उसका लिखने का सपना अब वह अवश्य पूरा करेगी।

माँ की तस्वीर मानों मुस्कुरा रही थी।

❑❑

साधना मिश्रा
लखनवी

कुछ दिन का बसेरा

सुबह की चाय , हमारा प्यारा बगीचा,और चिड़ियों के चहचहाहट , नन्हे कदमो से फुदकने और मीठी कलरव के साथ ही होती है.. मेरी नए दिन की खुशनुमा शुरुआत ।

यह प्राकृतिक तरीका वास्तव में सुखद और मनभावन होता है ,साथ ही एक नया अहसास भी ..चहचहाते पक्षियों का आनंददाई कलरव, जीवन को नित नए लेखन विषय ,अनुभव , और आगाह करने के संदेश भी दे जाता है । जो कि हम अपने ही घर के बगीचे में नित्य ही अनुभव करते हैं।।

अक्सर चार–पांच चिड़ा चिड़ियों के बीच एक प्यारी चुनमुन चिड़िया कभी पेड़ पर ,नीचे के गमलों पर ,यहाँ तक कि.. कभी मेरे आस–पास फुदक फुदक ,मेरी मेज पर या पझ में बैठ कर अपनी खुशी जताती, कुछ खुद खुश हो जाती। तो कुछ मुझे खुश कर जाती अपनी नन्ही शैतानियों से, फुदक फुदक कर।

मेरे पास सामने फुदकती ,उछलती आ जाती और कुछ अपने मतलब के दाने खा कर खुश होकर उड़ जाती। ऐसा प्रतिदिन का मनोरंजन हमारे साथ होता । जैसे वही हमारी प्यारी बेटी हो , वही हमारी दोस्त है।

पर आज बगीचे में बैठी मैं देख रही थी गौरैया की बेचैनी। चहल कदमी करते करते देख मैं भी बेचैन हो रही थी । मानो वह अपनी सहेलियों चुन्नी , तुंतन, रिमझिम, बुलबुल सभी सहेलियों से अपनी व्यथा कहना चाह रही हो । और आज मेरी चाय की मेज पर बार–बार आती तो जरूर थी । कुछ कहने का प्रयास भी करती, किन्तु दाना नहीं खा रही थी । बस बार बार अपने सर को टेबल पर पटक पटक कुछ बातें जरूरी समझ रही थी । तो उसके दाना न लेने पर और अधिक उदास होने से मैंने भी उससे पूछ लिया .....

क्या हुआ चुनमुन, क्यों परेशान हो? क्या बेचैनी है ?और क्या चाहती हो ? ऐसा पूछते ही चीं, चिं चीं ची की मधुर आवाज आज व्याकुल और उतार–चढ़ाव लेती हुई देर तक निकलती रही चुनमुन कुछ ज्यादा ही गौर से देखो चुनमुन को कुछ ज्यादा ही गौर से देखा तो आभास हुआ कि चुनमुन नए प्राणी को जन्म देने के लिए तैयारी कर रही है और बेचैन है कि अपना बसेरा कहां बनाएं !!

मैंने बहुत प्यार से उसकी आवाज की नकल करते हुए उसे विश्वास दिलाया कि चिं ची चुनमुन तुम्हें परेशान होने की क्या जरूरत है ? और पूछने की भी जरूरत नहीं है.। मैंने तो तुमसे दोस्ती ही इसी लिए बनाई और इतने सारे अशोक के बड़े–बड़े पेड़ , तुम्हारे लिए ही तो लगाएं, तो उनमें से किसी भी पेड़ पर अपना बसेरा बना लो ।

बस पंखे के अधखुले कटोरे में कभी ना बनाया करो । पता है अंबपंखों के होल से किसी भी तरह जब असुरक्षित अंडा नीचे गिर जाता है ना तब मुझे किसी की कोख उजड़ने का बड़ा ही दर्द होता है । कई दिनों तक मैं पंखे को देख देखकर बेचैन हो जाती हूँ । कितनी बार उसे पूरी तरह बंद भी करती हूं। जिससे फिर कोई चिड़िया यहां आकर अपना बच्चा छिन जाने की वेदना ना पाये। तुम निश्चिंत होकर अशोक के झुरमुट में अपना नीड़ बनाओ। और फिर एक नन्हा शैतान परिंदा हमारे बीच में कुछ दिनों में जल्दी घूमेगा, कलरव करेगा। हमें भी कितनी खुशी मिलेगी यह तुम नहीं सोच सकती हो चुनमुन।

चुनमुन ऐसा सुनकर जोर–जोर से चहचहाने लगी । उसकी चहचहाहट की आवाज से सभी चिड़िया आसपास आ गई। यह जानकर की चुनमुन खुश हो रही है । तो खुशी में साथ देने के लगी। मानो उनके मन मांगी मुराद मिल गई हो। अब सब अच्छा ही होगा यह सोचकर, चुनमुन की दौड़ भाग लगभग शुरू हो गई।

तिनका तिनका बटोरने में एक नया नीड़ जमाने में। एक नया '' कुछ दिन का बसेरा'' बसाने में अब इंतजार है .... उस नए बसेरे में जहां नन्हा परिंदा जन्म लेगा बड़ा होकर पहले तो हमारे बगीचे में ही फुदकेगा ना । खेलेगा हमारी प्यारी फुलवारी में और हमारी खुशी को दुगुना करेगा

अपनी मां के जैसे वह भी हमसे दोस्ती करेगा।हमारे पास आकर दाना चुगेगा।

❑❑

प्रीता वाजपेयी
प्रयागराज

मुक्तक

स्वयं भी टूट जाते हैं
वतन को तोड़ने वाले
खुदा से भी जुड़े होते
दिलों को जोड़ने वाले
हिमालय तान के सीना
यही एक बात कहता है
अमर वो हो गए सारे
तिरंगा ओढ़ने वाले ।

2

सिपाही को नहीं कुछ भी
यहां बलिदान से प्यारा
किसानों को कहां कुछ भी
भला खलिहान से प्यारा
बिना सोचे बिना समझे
वही है देश का बेटा
जिसे हर हाल में होगा
तिरंगा जान से प्यारा

❑❑

गरिमा भाटी "गौरी"
स्वतंत्र लेखिका एवं
सहायक आचार्या

बचपन के वो दिन

आजकल बच्चे इतने डिप्रेशन में रहते हैं और उनके माँ बाप उससे भी ज्यादा। कहते हैं कि कंपीटिशन बहुत बढ़ गया है। ये कम्पटीशन हमारे जमाने में भी होता था लेकिन उसको लेकर इतना शोर नहीं मचता था जितना आजकल होता है।

उस दौर में माँ को हाई फाई दिखने से ज्यादा अपने बच्चे को पड़ोस वाली के बच्चे से अच्छी बुनाई का स्वेटर बनाने की होड़ होती थी। शादी ब्याह में अपने बच्चों को हाथ के बने स्वेटर पहना कर भेजना एक माँ के लिए शान की बात होती थी। और जब दूसरी या तीसरी गली की आंटी हमारे स्वेटर को देख कर दो उल्टे फंदे और तीन सीधे फंदे का आईडिया लगाती तो गर्व के मारे हम भी फूले ना समाते थे।

परीक्षाओं का रिजल्ट ऐसे ऑनलाइन नहीं मिलता था बल्कि अखबार में आता था। और पड़ोस वाले अंकल अगर रोल नंबर पूछते तो उनको बताना मजबूरी होती थी।

उस दौर में हमारी कोई पीटीएम नहीं होती थी बल्कि जहां हमारे टीचर हमारे घरवालों से मिल जाते उसी दिन हमारी पीटीएम हो जाया करती थी। और अगर कोई शिकायत मिलती तो मम्मी के चप्पल से सॉफ्टवेर अपडेट किया जाता।

तब अगर बच्चे नाराज होते तो उन्हें मना मना कर खाना खिलाने का भी रिवाज नहीं होता था। और ना ही बच्चों को काउंसलिंग के लिए ले जाने का रिवाज होता था। डिप्रेशन को भगाने के लिए मम्मी की एक चप्पल या फिर पापा का एक झापड़ काफी होता था।

उस दौर में बच्चों को संसाधन देने के बजाय संस्कार देने पर ज्यादा जोर दिया जाता था। लेकिन आज बच्चों की संसाधन और सुविधाएँ देने की होड़ में रिश्तों की आत्मीयता खोती जा रही है।

❑❑

प्रीतिदीप साहू
उड़ीसा

अपना समारोह

बात तब की है जब हम बारवीं कक्षा में थे और हमारा विद्यार्थी जीवन का एक पड़ाव अपने अंतिम समय में थे। तो हमारे कक्षा के कुछ खुराफाती बच्चों ने (जिनमें आप हमे भी गिन सकती है) यह सोचा कि जाते जाते एक उत्सव और विदाई समारोह हो जाता तो लम्हे यादगार बन जाते । अब भले ही सर पर बोर्ड्स का बोझ था मगर बोलते है ना "जहां चाह है वहां राह है" । तो हम भी गाड़ी लेके मित्रों के संग निकल पड़े ठिकाना ढूंढने की कहां हम अपना समारोह कर पाएंगे। एक होटल से दूसरे होटल धक्के खाने के बाद हमे एक सही जगह मिला और २२ फरवरी को हमने अपना समारोह का तारीख ठीक किया ।

मगर बोलते है ना अगर अड़चन ना आए तो सफर का आनंद कैसा! तो पहाड़ भी टूटा हमपे, बहुत से बच्चों ने अंतिम समय में अपने कदम पीछे हटा लिए। बहुत ने तो तरह तरह की आनाकानी दिखाए। खैर वाजपेई जी ने बोला था "सरकारें आएंगी, जाएंगी, पार्टियाँ बनेंगी, टूटेंगी, मगर देश चलते रहना चाहिए", हम भी उन्हीं के मार्ग दर्शन का अनुसरण करते हुए अड़चनों के बावजूद समारोह धूम धाम से मनाया ।

(अंत में जिन बच्चों ने मना किया था वे भी आ गए)

❑❑

डॉ.अंजना सिंह सेंगर
नोएडा
उत्तर प्रदेश, भारत

मारीशस की साहित्यिक यात्रा और सखियों की मस्ती

जीवन में कभी–कभी ऐसे अवसर भी आते हैं जो हमारी स्मृतियों में सदा के लिए अंकित हो जाते हैं। साहित्य का संग, सखियों का साथ, और मॉरीशस की सुरम्य भूमि की साहित्यिक यात्रा–इन सबने मिलकर इस अनुभव को अद्भुत और अविस्मरणीय बना दिया। भोपाल की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था विश्व रंग और मॉरीशस के विश्व हिन्दी सचिवालय ने संयुक्त रूप 7, 8 और 9 अगस्त 2024 को एक भव्य तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। यह आयोजन हिंदी भाषा की वैश्विक महत्ता और साहित्यिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने का एक प्रयास था, जहाँ अनेक देशों के साहित्यकारों ने सहभागिता की।

जैसे ही हमें इस कार्यक्रम में भाग लेने का निमंत्रण मिला, हम सभी सखियाँ अत्यधिक उत्साहित थीं। सभी ने अपने दैनिक जीवन की व्यस्तताओं से समय निकालकर इस अद्वितीय अवसर को जीने का निश्चय किया। मॉरीशस पहुँचते ही वहाँ की हरी–भरी वादियाँ, स्वच्छ आकाश, और समुद्र की लहरें मानो हमारा स्वागत कर रही थीं। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्व हिन्दी सचिवालय के प्रांगण में शोभायात्रा से हुआ, जो गाजे–बाजे के साथ निकली। सभी सहभागी नाचते–गाते इस शोभायात्रा में शामिल हुए। तदोपरांत, मॉरीशस के गिरमिटिया मजदूरों की वर्तमान पीढ़ी द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ ही साहित्यिक कार्यक्रम शुरू हुए, जिनमें काव्य पाठ, महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा–परिचर्चा, पुस्तकों का लोकार्पण, और लेखकों से बातचीत आदि का सिलसिला चला।

साहित्य का संग और सखियों का रंगीन साथ :–

इस यात्रा के दौरान, हमारा परिचय मॉरीशस के विश्व हिन्दी सचिवालय की महासचिव श्रीमती माधुरी रामधारी जी से हुआ, जो भारतीय परिधान (सिल्क की साड़ी) में बेहद सौम्य और सरलता से भरी दिख रही थीं। उनकी मधुर वाणी और सरल स्वभाव ने हमें शीघ्र ही उनसे जोड़ दिया। रात को करीब दस बजे हम बस में बैठकर अन्य देशों से आए प्रतिभागियों के साथ परिचय करते हुए होटल पहुँचे। रास्ते में ही तय हो गया कि हम सभी जापान से आईं रमा दी के कमरे में इकट्ठे होंगे और खूब मस्ती करेंगे।

रमा दी, जो पंजाबी संस्कारों में रची–बसी हैं, जापान में रहते हुए भी भारतीय परंपराओं को सहेजे हुए हैं। उनके व्यवहार में इतनी आत्मीयता थी कि जो भी उनसे एक बार मिल लेता, वो उनका होकर रह जाता। उनकी रूम पार्टनर, अंजू पुरोहित, मलेशिया से आई थीं–सौम्य किंतु गंभीर स्वभाव की। लेकिन सखियों की मस्ती ने उन्हें भी जल्दी ही अपने रंग में रंग लिया।

मैं और मेरी रूम मेट सारिका जैथालिया, जो इंडोनेशिया से आई थी, हम दोनों रमा दी के कमरे में पहुँचे तो ग्रुप की सबसे प्यारी और चुलबुली जर्मनी की शिप्रा से पहली बार मिलना हुआ। हालाँकि मैं शिप्रा के नाम से पहले से ही परिचित थी, लेकिन इस पहली मुलाकात ने उसे और खास बना दिया। कतर से आईं शालिनी वर्मा और भारत के भोपाल की मुक्ति श्रीवास्तव जहाँ थोड़ी शांत और संकोची स्वभाव की थीं, वहीं नाइजीरिया की इशिता यादव और बहरीन की ममता तिवारी(मीतू) ने महफिल में चार चाँद लगा दिए। श्रीलंका की अथिला कोतलावल और रूस की सफरमो तोलीबी भी सबके साथ घुलने–मिलने में पीछे नहीं थीं।

रात का जलसा–सखियों का हंसी भरा ठीकाना :–

रात के करीब 11 बजे, जैसे ही रमा दी के कमरे का दरवाजा खुला, शिप्रा ने चुलबुले अंदाज में सबसे पहले आवाज लगाई, "आ जाओ जी, अब यहाँ न नींद है, न आराम। बस मस्ती ही मस्ती है!" कमरे में पैर रखते ही ऐसा लग रहा था कि हम किसी मस्ती के लोक में प्रवेश कर गए हों। रमा दी का कमरा अब एक छोटे से डिस्को थेक में बदल चुका था। किसी ने मोबाइल पर ही फिल्मी पार्टी के गाने चला दिए और फिर शुरू हुआ धमाल। जहां मीतू और इशिता ने जबरदस्त डांस किया, वहीं शिप्रा ने नाटकीय अन्दाज में नृत्य और हास्य प्रस्तुत किया, बाकी हम सब ताली बजाकर और हूटिंग करके उनका साथ दे रहे थे। हमने इन मोहक और आनंददायक पलों को कैमरे में भी सदा के लिए कैद कर लिया।

रमा दी ने मुझे शांत बैठे देखा तो घेरते हुए कहा, "अरे, वो 'कतरा–कतरा' वाला शेर तो सुना दो!" सबकी आँखों में शरारत की चमक देखकर मैं भी मुस्कुरा पड़ी। "कतरा–कतरा वाले शेर की कहानी एक दिन पुरानी थी, जब सभी सखियाँ मेरे कमरे में इकट्ठी हुई थी तो चाय और स्नैक्स के साथ ही हमने शेरो–शायरी का भी आनंद लिया था। मैं अपना "कतरा–कतरा" वाला शेर सुनाने की कोशिश करती, लेकिन हर बार हंसी के ठहाके सुनते ही खुद भी हंसी में लोटपोट हो जाती। हंसी–ठहाकों के बीच शेर तो पूरा न कर सकी लेकिन उस पल की याद में हमने अपने व्हाट्सएप ग्रुप का नाम "कतरा–कतरा ग्रुप" रख दिया।

रमा दी ने हंसते हुए कहा, "चलो, अब थोड़ी गंभीरता भी दिखाओ, सब लोग अपने–अपने दिल की बात बताए! " ममता ने तुरंत कहा, "मैं बताती हूँ, लेकिन एक शर्त है–जो भी बोले, बाकी सब उसे रोस्ट करेंगे!" और फिर सबकी शरारतें शुरू हो गईं। ममता ने एक प्यारी सी कहानी सुनाई, लेकिन शालिनी ने तपाक से कहा, "अरे वाह ममता, ऐसे बोल रही हो जैसे बॉलीवुड की कोई हीरोइन हो!" और सब हंसी में लोटपोट हो गए।

इतने में सफरमो ने याद दिलाया कि उसे रात के 12 बजे से पहले अप. ने होटल पहुँचना है क्योंकि वह यही समय होटल के स्टाफ को बता कर आयी है। उसका होटल हमारे होटल से करीब पाँच सौ कदमों की दूरी पर था। हम सब उसे छोड़ने के लिए एक साथ पैदल ही चल पड़े। मॉरीशस की सुनसान सड़कों पर, रात के सन्नाटे में, हमारी टोली अपनी ही मस्ती में चल रही थी–किसी ने गाना गाया, किसी ने चुटकुले सुनाए और बीच–बीच में मोबाइल से उन मोहक पलों को कैद भी करते रहे।

वापस लौटते हुए, हम ठंडी हवाओं का आनंद लेते हुए होटल पहुँचे। लेकिन हमारी मस्ती खत्म होने का नाम नहीं ले रही थी। हमने कमरे में लौटते ही वीडियो और रील्स बनानी शुरू कर दीं। और फिर, हंसी–ठहाकों के बीच हमने इस यादगार रात को सहेज लिया।

मॉरीशस की इस साहित्यिक यात्रा का सार :–

तीन दिनों के साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतिम दिन शाम को समापन के लिए हमें मॉरीशस के "महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट" ले जाया गया, जहां हॉल में हमने भोजपुरी गीतों की गायिका मालिनी अवस्थी के गीतों का आनंद लिया। अंत में मॉरीशस के प्रधानमंत्री माननीय प्रवीण कुमार जगनाथ जी ने समापन भाषण दिया। वापसी की तैयारी करते हुए हम सबका मन भारी था, लेकिन एक–दूसरे से गले मिलते समय आंखें नम होने के साथ–साथ दिल में खुशी और संतोष था।

यह यात्रा सिर्फ शब्दों का आदान–प्रदान नहीं थी, बल्कि यह दो संस्कृतियों का मिलन और सखियों के साथ बिताए गए अनमोल पलों का संग्रहण भी थी। इस यात्रा ने हमें सिखाया कि भाषा और साहित्य कैसे लोगों को जोड़ते हैं और सीमाओं को मिटा देते हैं। हमारे लिए यह यात्रा केवल साहित्य के नए आयामों से परिचित होने का जरिया नहीं थी, बल्कि सच्ची दोस्ती और स्नेह के उन पलों को जीने का मौका भी थी। सखियों की हंसी, ठिठोलियों और प्यार ने इसे और भी यादगार बना दिया। हम सबने इन लम्हों को अपने दिलों में सहेज लिया और भारत लौटते समय मन में एक ही ख्याल था–यह यात्रा हमारे जीवन की ऐसी अमूल्य धरोहर है, जो हमें सदैव प्रेरित करती रहेगी।

❑❑

सुनीता चाँदला
लंदन

मंजु श्रीवास्तव'मन'
वर्जीनिया

मानसिक स्वस्थता, EQ या IQ

आज के व्यस्त दौर में मनुष्य बाहर से तो गत समय काल की अपेक्षा सुन्दर, समृद्ध व स्वस्थ दिखाई देता है लेकिन उसके अन्दर का सच इससे बहुत भिन्न है या विपरीत भी कह सकते हैं । अपने भीतर वह ऐसे दर्द अथवा रोग छुपाये हुए है जिसका ना तो वह इलाज जानता है न ही मूल कारण। यह सच्चाई किसी विशेष उम्र के वर्ग से सीमित नहीं है, छोटा बड़ा सब समान है इस कष्ट में ।

होड़ केवल अंकों की है चाहे ये पैसों की हो , पढ़ाई में परीक्षा में प्रतिशत की या शारीरिक स्वास्थ जाँच में रक्त चाप या मधुमेह की । इन सब का उपचार या वर्धन, आसानी से बाहरी सहायता से हो जाता है ।लेकिन मानसिक सेहत का मापदंड क्या है ? इस युग ने हमे अपनी बुद्धिमता मापने की इकाई यानि आई क्यू IQ स्तर जानने के उपकरण व स्वीकृत अंक अवश्य दिये हैं किन्तु EQ के प्रति कितनों का ज्ञान है ?

EQ यानि इमोशनल इंटेलीजेंस – जिसका अभिप्राय व्यक्ति की भावनाओं को व्यक्त करने से है : क्रोध, भय , धैर्य , सहानुभूति इत्यादि।

कम EQ वालों का तालमेल अपने ही परिवार, समाज या कार्यस्थल के साथियों के साथ अच्छा या सही नहीं हो पाता । जिसके कारण वह अपने निजी जीवन में असफल रह जाते हैं और बहुत अकेला महसूस करते हैं अपने आप को । निराशा दुःख का कारण बन जाती है अपनी वृत्ति व भावनाओं को समझना और उन पर नियंत्रण रख पाना एक कला है तथा ये अत्यन्त आवश्यक भी है । यह ना होने पर उदासीनता बढ़ती है , जिजीविषा का क्षय । खुद को फाँसी लगाने की बढ़ती हुई संख्या का एक बड़ा कारण भी यही है।

ना स्वयं का सामना कर पाना , ना ही खुद का दयालुता से ध्यान रख पाना , विनाश को आमन्त्रण देना है, नकारात्मकता का शिकार बनना है।

रिश्ते निभाने के लिए दूसरों की भावनाओं को समझना, सम्भालना और प्रभावित करना भी बहुत जरूरी है । समय पर न सुलझाने से अक्सर बहुत देर हो जाती है ।

अपने और दूसरों की भावनाओं में सामंजस्य बनाये रखने के कुछ लाभ ये हैं:

1 पारास्परिक सम्बन्ध व बेहतर विचारों का आदान प्रदान
2 कठिन पारिस्थिति में कष्टग्रस्त न होने की क्षमता
3 विफलताओं से सीखने का अवसर ना खोना
4 आत्म सम्मान में वृद्धि , आंतरिक शक्ति
5 प्रभु से मिले जीवन का सदुपयोग कर पाना
6 विषम हालात में संभाव रह पाना

सुझावः आज IQ के साथ EQ को भी हमारी शिक्षा प्रणाली में शामिल करना अनिवार्य होना चाहिए ।

❑❑

हाइकु

मासूम चीखें
खण्डहर उक्रेन
कुछ तो सीखें।

मन डरता
युद्ध की विभीषिका
तन जलता।

सब टूटता
आर्तनाद गूँजता
क्या है मिलता ?

सैनिक मरे
शौक हुक्मरानों का
जनता डरे।

धुआं ही धुआं
तबाही का मंजर
युद्ध में हुआ ।

खाता मानव
युद्ध क्रूर दानव
कोई तो रोको ।

नहीं झुकेगा
अहंकार सभी का
युद्ध चलेगा ।

❑❑

आन्या रॉय
आयु - 11 वर्ष/कक्षा – 7
माउंट कार्मल स्कूल
द्वारका, नई दिल्ली,भारत

डॉ शिप्रा मिश्रा
कोलकाता

कुछ तो बोलो माँ

माँ! ओ माँ!
मेरी प्यारी माँ! दुलारी माँ!
कुछ तो बोलो ना!

क्यों रखती गई
रोज मेरे लिए
आटे की दो लोइयाँ?

ऐसे सिखाया मुझे
छुटपन से ही
गोल, फूली, नरम
रोटियाँ बनाना
और वहीं से सिखा दिया मुझे
दुरूह जीवन को साध लेना

फिर सिखाया मुझे
धीरे से छौंकना
कड़ाही में सब्जियाँ

कई–कई बार तो
छलक आए थे
कड़कड़ाते तेल
और पड़ गए थे फफोले
मेरे कोमल हाथों पर
शायद वहीं से सिखाया तुमने
असंगत परिस्थितियों से
स्वयं को सुरक्षित रखना

और तो और
क्यों सिखाया मुझे
अंदाज से नमक डालना?
मैंने सीख लिया जिन्दगी में
नमक का संतुलन

सिखाया मुझे
चौके को लीपना
गोबर माटी के पोंतने से
ऐसे सिखा गई मुझे
संस्कारों की शुचिता

राख और माटी से
चकाचक धोना
फुलहे बटुले और
पूजा की थाली
सीखा अथक परिश्रम की
अद्भुत चमक

माँ! ओ माँ! प्यारी माँ!
इससे अच्छा तो
कुछ और भी सिखाया होता

किसी घूरने वाले की
आँखें नोंच उसकी
हथेलियों में रख देना

जो हमारा मान न रखे
उसका सम्मान न करना
शोषण और अत्याचार
के विरुद्ध उठाना
एक मजबूत हथियार

कभी न जीना
घुट–घुट कर एक
जिल्लत की जिन्दगी
कभी न बनना
किसी बेगैरत के
पाँव की जूती

सिखाया होता चलना
फूँक–फूँक कर
जिन्दगी में रखना
एक मजबूत कदम
आत्मविश्वास से छलकता

हर आँधी–पानी में
सुरक्षित हिम्मत से
खुद की बेखौफ उड़ान

माँ! ओ मेरी माँ!
कुछ तो बोलो!

❑❑

संधि झंवर
कक्षा–9 / 13 वर्ष
चोइथराम स्कूल इंदौर

नीतू कुमारी "नितुंजलि"
चंडीगढ़

एक राखी

सरहद पर जो भाई खड़े,
उनको एक राखी भेजूंगी ।
राखी भेजूंगी संग यह विश्वास
दिलाऊँगी ,
तुम लड़ो भाई सीमा पर,
अंदर मैं सँभालूँगी।

कल के जो है भविष्य बच्चे–२
उनको मैं सँभालूँगी ।
देशभक्ति का पाठ पढ़ाऊँगी,
ध्यान रखूंगी उनका ,
उनको नशा से दूर रखूंगी।
तुम लड़ो भाई सीमा पर
अंदर मैं सँभालूँगी ।

सरहद पर जो भाई खड़े,
उनको राखी भेजूंगी।
देश के काम आ सके ,
उनको ऐसा नागरिक बनाऊँगी ,
तुम लड़ो भाई सीमा पर ,
अंदर मैं सँभालूँगी,

सरहद पर जो भाई खड़े
उनको इक राखी भेजूंगी ।

❑❑

आदवी पाडलिया
आयु- 8 वर्ष/कक्षा- 3
स्कूल - फुटस्क्रे सिटी प्राइमरी स्कूल,

खुशबू कुमारी
भागलपुर, बिहार

कैंडल मार्च

आज तुम एक बेटी के लिए
इन्साफ मांग रहे हो,
मोमबत्ती जला कर ,नारे लगा कर तो
कहीं धरने लगा कर
इन्साफ मांग कर तुम
ये दिखाने कि कोशिश मत करो
कि तुम अच्छे लोग हो और तुम
ऐसा नहीं करते
जब रास्ते पर एक अकेली लड़की
चलती हैं
तो वो तुम्हीं जो उस पर फब्तियाँ
कसते हो
वो तुम्हीं लोग हो जो उसे आजाद
होकर जीने नहीं देते
वो तुम्हीं लोग हो जो उसे एक कैद
खाने मे बंद रखना चाहते हो
वो तुम्हीं लोग हो जिसे सोचकर वो
अकेले जाने से पहले
हजार नहीं लाख बार सोचती है
तब तुम क्यों नहीं आवाज उठाते
जब रोज दिन तुम्हारे बेटियों ,
बहुओं पर फब्तियाँ कसते
क्या तब तुममें आवाज उठाने की
ताकत नहीं होती
तब तुम्हारी हैसियत नहीं होती !
तब तो तुम चुप रहने को कहते हो
कौन दूसरों के मामले में पड़े
जो जैसा है बस चलने दो हमें क्या?
सच बात तो ये है कि
तुम्हारी औकात ही नहीं है कि
तुम कभी आवाज उठा पाओ
इसलिए एक दिन तो क्या
365 दिन बेटियाँ लुट रही है
और तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे हो
कुछ खास मौकों पर
कैंडल मार्च निकाल कर
तुम दिखाते हो कि तुम जिंदा हो
तुम तो चलता फिरता
मुर्दों का झुंड हो
तुम क्या इन्साफ माँगोगे
तुम सुधर जाओ
अपने जानवर पन से बाहर निकल
तुम इंसान बन जाओ
इन्साफ मिल जाएगा
और तुम किससे
इन्साफ मांग रहे हो
उस पुलिस से जो अकेले चलती
बेटियों पर फब्तियाँ
कसने से बाज ना आए
तुम उससे न्याय की भीख
मांग रहे हो
अरे वो तुम्हीं हो
बस तुमने वर्दी पहन ली है
तुम सुधर जाओ
तब कैंडल मार्च निकालने की कभी
जरूरत नहीं पड़ेगी

❑❑

अतीश मिश्रा 'बुन्नू'
पुर्निया, बिहार

माँ

लुटाया होगा तुमने भी
मोहब्बतें
मिली होगी मुझे भी
कुछ नसीहतें पर
मैं छोटा था नासमझ भी
चली गई पता नहीं मुझे छोड़कर क्यों
किसके सहारे?
यह तुम ही जानो।
याद आती है मुझे तेरी
तुझे भी आती होगी मेरी
पर दूर हैं हम दोनों
एक दूसरे से
गुफ्तगू करता हूं दीवारों पर लगी
तुम्हारी तस्वीर से
ख्यालों में तुम आज भी
जिंदा हो मेरी मां
मेरे लिए तुम कभी
मर नहीं सकती
मर नहीं सकती।

❑❑

संजय शुक्ल
कोलकाता

माँ

माँ के चरणों को छू करके
जल गंगा हो जाएगा
मेरे जीवन का हर एक पल
खुशियों से भर जाएगा

माँ तेरा ए प्यार अमर है
तेरा दिल नूरानी है
तेरी चाहत की पावनता
निधिवन हो जाएगा ।
माँ के चरणों को छू करके जल,,,,,

तेरे आँचल की शीतलता
कल्पतरू कहलाती है ।
खुद के लिए पकाया पानी ।
खीर खिलाई बच्चों को ।
ऐसी माँ को छोड़ गये वो
वृद्धा आश्रम द्वारा को ।
माँ तेरा आशीष अमर है ।
घर चन्दन बन जाएगा ।।
माँ के चरणों को छू करके जल,,,,,

मोहन मुझको वर दे दो अब
कोई यशोदा न बेघर हो ।
जिससे अपना मन माँगा था
तन मन धन दे जाएगा ।।
माँ के चरणों को छू करके जल,,,,,

गोद में तेरे चलना सीखा
तुझ को क्यो चलना सिखाएं हम।
चोट मुझे गर लग जाए तो
तुझ में भर जाए है गम ।
इक तेरी मुस्कान अमर माँ
घर सारा महकाएगा ।।
माँ के चरणों को छू करके
जल गंगा हो जाएगा ।।

❑❑

हेमश्री एम /कक्षा–6

रागिनी बाजपेयी
नासिक

फैसला

बहू केतकी सुबह दस बजे सो कर उठी। दीना नाथ जी ने कहा बहू जब अपनी चाय बनाओगी तब मेरी भी बना लेना।

गुस्से से झुंझलाती हुई बहू केतकी ने जवाब दिया, सुबह से उठ कर आप क्या कर रहे थे, कोई काम तो सूझता नहीं आपको, मेरे उठने का इंतजार करते रहते है कि मैं कब उठूँ और आप आर्डर दे ।

दीना नाथ जी ने शान्ति से जवाब दिया सुबह उठकर एक कप चाय मैं खुद बना कर पी चुका हूँ । दूध ब्रेड लाकर रख दिया है। नहा कर पूजा भी कर चुका हूँ। एक कप चाय और पीने की इच्छा थी इसी लिये तुमसे कहा कि बेटी अपनी चाय बनाओगी तब मेरी भी बना लेना।

बहू झटके से बोली दूध ब्रेड ले आये तो क्या एहसान कर दिया, अपनी चाय बना ली तो क्या मुझ पर एहसान कर दिया। बहू की इस धृष्टता से दीना नाथ जी व्याकुल हो उठे, बेटे की पारिवारिक शान्ति एंव प्रसन्नता के लिये वे आज तक बहू का दुर्व्यवहार सहते आये है। किंतु अब नहीं।

दीना नाथ जी शान्त रहे और उन्होने अपने मन में कठोर निर्णय ले लिया, बेटे व पोते के प्यार के खातिर वो अब बहू के द्वारा अपमान व उपेक्षा नही सहेगे। उनके पास फंड है पेन्शन है, किसी अच्छे वृद्ध आश्रम में चले जायेगे, वे उठे और अपनी तैयारी करने लगे।

❑❑

सिमरन गिरधर
पानीपत हरियाणा

भूख

पायल को उसकी मां परांठा खाने की जिद कर रही थी।वह अनमने भाव से कभी इधर भागती, कभी उधर और कहतीं मां कितना खिलाओगी। अभी सुबह तो पहले बादाम खाएं थे, फिर एक सेब उसके बाद एक गिलास दूध।अब मुझे भूख नहीं है,पर मां प्यार से उसे बहलाने लगी , खाओगी तभी तो तंदरुस्त बनोगी।

वहीं दूर से काम वाली बाई की लड़की पूजा कातर नजरों से यह सब देख रही थी। उसके घर दो दिन से खाने को कुछ नहीं था।वह पायल के पास गई और मानों उसकी आंखें कह रहीं हों मैं भी भूखी हूं ,पर पायल की मां ने उसको डाट कर भगा दिया। पायल ने मां की नजरों से बचाकर परांठा बाहर सड़क पर फेंक दिया । पूजा इस उम्मीद से दौड़कर बाहर भागी यदि परांठे में मिट्टी भी लग गई होगी फिर भी वह उसे साफ करके खा लेगी लेकिन उसकी यह उम्मीद टूट गई जब उसने देखा सड़क का कुत्ता उसके पहुंचने से पहले ही वह परांठा साफ कर चुका था। उसकी आंखें भूख से नम् हो गई और अपलक वह पेट भरे कुत्ते को निहारतीं रही।

दोस्तों भूख सबकी एक जैसी होती है चाहे वह अमीर है या गरीब। हमें भूलकर भी अन्न का अपमान नहीं करना चाहिए और गरीबों की भूख को भी अहमियत देनी चाहिए।

❑❑

डॉ श्वेता सिंह उमा
मॉस्को, रशिया

माँ

मुझमें ये जो भी संस्कार है
मेरी माँ की दी हुई परवरिश का सार है
मेरी साँसो में साँस लेती है उसकी दुआ
माँ तू मेरी आराधना का वो आधार है
मेरी हर कामयाबी में छुपी है तेरी मेहनत
मैं तो कुछ भी नहीं
तू ही असली Rock Star है
माँ का रिश्ता मुझे खुद से मिलवाता है
तू स्नेह और ममता की ठंडी फुहार है
ईश्वर को तो देखा नहीं कभी
ममता की मूरत तुझे मेरा नमस्कार है

❑❑

आदवी पाडलिया
आयु- 8 वर्ष/कक्षा- 3
स्कूल - फुटस्क्रे सिटी प्राइमरी स्कूल,
मेलबर्न विक्टोरिया,
ऑस्ट्रेलिया

रचना आर
कक्षा–6
मारियानी के अंग्रेजी स्कूल मैसूर

अजय शर्मा
जयपुर,राजस्थान

तलाश अस्तित्व की

भाग 8/9/10

अगले कुछ दिन शांति से बीते। ऑफिस में भी सामान्य रूप से काम होता रहा। रहस्यमयी आकृति ने भी उससे संपर्क नहीं किया। उसके घर से अवश्य समाचार आया था। उसके मम्मी पापा ने उसके लिए एक अच्छी लड़की देखी थी और जल्दी ही विवाह की तैयारियां शुरू करने वाले थे। यश ने मैसेज कर दिया कि वह अपने काम में व्यस्त है। वे लोग जैसा चाहे कर सकते हैं।

वैसे भी उसका मन आजकल जाने किन विषयों का चिंतन करता रहता था। उसके पास पैसा खूब आ गया था। अब ऑफिस और नौकरी की जरूरत नहीं थी। फिर भी कुछ कारणों से ऑफिस जाते रहना जरूरी था। क्योंकि उसके पास जो पैसा आ रहा है उसका कोई जायज स्रोत भी तो बताना जरूरी था। बिना नौकरी के अगर ऊंची जीवन शैली जीता है तो सहज ही शक के दायरे में आ जाता है।

इसके अलावा समय बिताने के लिए और अपने दोस्तों के संपर्क में रहने के लिए भी ऑफिस जाते रहना जरूरी था। वैसे अब उस पर नौकरी का कोई दबाव नहीं था। सॉफ्ट ड्रिंक कैंपेन वाले मामले के बाद अब वहां भी काफी बदलाव आ गया था। अब कंपनी सुरक्षित तरीके से काम करने लगी थी। ऊपर से तो सब कुछ ठीक ही चल रहा था लेकिन यश के अंदर भीषण हलचल मची हुई थी।

उसे इंतजार था रहस्यमयी आकृति के अगले संदेश का, कि उसे क्या करना है और कब करना है? दिन का चैन और रात की नींद छिन चुके थे। वह बार–बार याद करता था उस घड़ी को, जब उसका पहली बार उस अदृश्य शक्ति से संपर्क हुआ था। उसके बाद से लेकर अब तक जिंदगी में कितना बदलाव आ गया था ,इसका अंदाजा किसी को भी नहीं था ।वह अपनी लड़ाई अकेले ही लड़ रहा था। आखिर एक दिन मुलाकात फिर हो ही गई। रहस्यमयी शक्ति ने उससे संपर्क किया और लिफाफे के जरिए उसे संदेश भेजें। हमेशा की तरह नीला लिफाफा उसे मिला जिसमें लिखा था कि कल अमावस की रात को शहर के बाहर बने कब्रिस्तान के अंदर जाकर पीटर नामक व्यक्ति की 412 नंबर की कब्र पर जाकर कुछ करना है। उसकी कब्र पर एक काला पत्थर लगा हुआ है जिस पर अपना दांया पंजा रखकर उसे बिना पीछे देखे लौट आना है। नीली गाड़ी वाला ड्राइवर उसके साथ रहेगा। और रास्ते में उसे कोई समस्या नहीं आएगी।

तो आखिर सामने आ ही गया उस रहस्यमयी शक्ति का असली उद्देश्य, उसके जरिए वह आत्माओं के संसार में प्रवेश करना चाहती है। पता नहीं क्या मकसद है उसका, बहुत संभल कर कदम रखना होगा यश को। मना करने का तो प्रश्न ही नहीं है क्योंकि पहले ही वह शक्ति उसे चेतावनी दे चुकी है कि ना करने का मतलब है उसकी मौत और परिवार की तबाही।

यश के लिए दिन बिताना मुश्किल हो गया। आज काफी दिनों के बाद उसने पूजा और ध्यान का मार्ग अपनाया। स्वच्छ और पवित्र मन से वह अपने फ्लैट के एक एकांत कक्ष में ध्यान मुद्रा में बैठा और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। कुछ हद तक वह मेडिटेशन तकनीक से परिचित था, किंतु कभी नियमित रूप से ध्यान नहीं किया था।

आज पहली बार उसने अपने मूलाधार चक्र पर फोकस किया और आश्चर्यजनक रूप से यह पाया जैसे उसकी चेतना नीचे के चक्रों से आरंभ होकर ऊपर की तरफ जा रही है। क्रम से मूलाधार ,स्वाधिष्ठान ,मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि,आज्ञा और सहस्त्रार चक्र। उसे महसूस हो रहा था मानो उसकी चेतना एक अज्ञात शक्ति की ओर खिची चली जा रही है। चारों ओर अंधकार था।

दूर एक प्रकाश का दिव्य स्रोत नजर आ रहा था। मानो उसे संकेत करके बुला रहा हो। चेतना की इस अद्भुत स्थिति में उसे महसूस हुआ मानो कोई उसे कह रहा हो कि चिंता की कोई बात नहीं है। मैं तुम्हारे साथ हूं। इसी के साथ यश वापस भौतिक संसार में आ गया। अब वह काफी हद तक रिलैक्स था। वापस उठकर वह अपनी आराम कुर्सी पर आकर बैठ गया और मोबाइल में कुछ देखने लगा।

शाम होने में अभी समय था। कुछ हल्का फुल्का खाया और नीली गाड़ी के इंतजार में लग गया।

जैसे ही रात के ठीक 9.00 बजे, यश को अपने फ्लैट के नीचे गाड़ी की आवाज सुनाई दी। वह तैयार बैठा था तत्काल नीचे आ गया। ड्राइवर ने बिना कुछ कहे दरवाजा खोल दिया और यश चुपचाप गाड़ी में बैठ गया, एक खौफनाक और अनचाहे सफर के लिए।

गाड़ी शहर की वीरान सड़कों पर सरपट दौड़ी जा रही थी। कार के अंदर एक अजीब सा मनहूसियत वाला माहौल भरा हुआ था। यश की इच्छा हुई कि आज वह ड्राइवर से कुछ बात करें लेकिन उसे रहस्यमयी शक्ति की कही बात याद आ गई कि एक शब्द भी नहीं बोलना है। यह गाड़ी और ड्राइवर भी यश के लिए रहस्यमयी बनते जा रहे थे। कुछ समय की ड्राइविंग के बाद गाड़ी शहर के बाहर बने हुए कब्रिस्तान के सामने जाकर रुक गई। इसी के साथ ही मानो यश की सांसे भी रुक गई। ड्राइवर ने गाड़ी का दरवाजा चुपचाप खोल दिया।

गाड़ी से नीचे उतर कर यश ने बाहर के वातावरण का जायजा लिया। अमावस की काली और भयानक रात थी। दूर कहीं कुत्तों के

रोने और उल्लू के चीखने की आवाजें आ रही थी। उसके पूरे शरीर में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई। हिम्मत करके
आखिरकार यश कब्रिस्तान के दरवाजे के अंदर घुसा। दूर–दूर तक कोई आदम जात नजर नहीं आ रहा था और आता भी कहां से? अमावस की इस काली और सर्द रात में ऐसी भयानक जगह कौन इंसान आने की हिम्मत कर सकता है, जब तक उसकी कोई विशेष मजबूरी ना हो। लेकिन यश की क्या मजबूरी थी, वह आखिरकार क्यों इस चक्रव्यूह में फंसता जा रहा था?

यश की सोचने समझने की शक्ति समाप्त हो चुकी थी। अब उसके अंदर केवल एक जुनून बचा था, उस रहस्यमयी सत्ता के हुकुम को पूरा करने का जुनून। धीरे–धीरे भारी कदमों से चलते हुए यश कब्रिस्तान के अंदर घुसता चला गया। उसके हाथ में एक टॉर्च थी जो उस वीरान और सुनसान अंधेरी जगह उसे रास्ता दिखा रही थी। सड़क के दोनों तरफ संकेतक लगे हुए थे। उनको देखते हुए यश 400वीं कब्र के पास पहुंच गया।

इसके बाद सधे हुए कदमों से चलते हुए वह पीटर नामक व्यक्ति की 412 नंबर की कब्र पर पहुंच गया। एक पत्थर लगा हुआ था, जिस पर लिखा था, "यहां सो रहा है पीटर नाम का आदमी, जिसकी जिंदगी की दास्तान अनोखी है। जिसे समझना और समझाना असंभव है। यश का दिमाग काम नहीं कर रहा था। वह दीवानों की तरह आगे बढ़ा और रहस्यमयी शक्ति के बताए हुए निर्देश के अनुसार उसने अपना दांया हाथ कब्र पर लगे हुए काले पत्थर पर रख दिया। पत्थर के किसी नुकीले कोने से टकराकर उसके हाथ के पंजे में एक छोटा सा कट लग गया जिस से निकलकर खून की 2–3 बूंदें उस पत्थर पर गिर गई। और इसी के साथ ही मानो कब्रिस्तान में कोई जलजला आ गया। पीटर की कब्र बड़ी तेजी से गोल गोल घूमने लगी , मानो कोई चक्की बड़ी तेजी से घूम रही है। यश डरकर पीछे हट गया। कुछ देर तक कब्र की वृत्ताकार गति का सिलसिला चलता रहा। उसके बाद अचानक से स्थिर होकर पहले की स्थिति में आ गई और उसमें से धुआं निकलने लगा। जैसे सर्दी के मौसम में धुंध छा जाती हैं। यश ने स्पष्ट देखा कि धुंध में से लिपटती हुई एक युवा मनुष्य की आकृति जिसने सफेद कोट पैंट पहन रखा था बाहर की ओर आ रही थी और धीरे–धीरे अमावस के काले वातावरण में लुप्त हो गई। और इसी के साथ यश को एक तेज चीख सुनाई दी। मानो कोई बहुत तकलीफ में हो।

यश को वहां के वातावरण में कुछ अदृश्य और अशरीरी आत्माओं की उपस्थिति का एहसास होने लगा मानो कोई तेज हवा उसके शरीर को छूकर निकल रही हो। अब इसकी हिम्मत जवाब दे चुकी थी वह तेजी से मुडा और बिना पीछे देखे दरवाजे की ओर तेजी से दौड़ लगा दी। उसे महसूस हो रहा था मानो उस के पीछे कोई दौड़ रहा हो। गजब की फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए वह तत्काल कब्रिस्तान के बाहर आ गया जहां नीलीगाड़ी उसका इंतजार कर रही थी।

वह झपट कर गाड़ी में बैठ गया और ड्राइवर ने तुरंत रफ्तार के साथ गाड़ी सड़क पर बढ़ा दी। सुनसान सड़कों पर बहुत तेजी से दौड़ती हुई गाड़ी में बैठे हुए यश को यह भी एहसास नहीं था कि उसके हाथ से खून निकल रहा है और उसके कपड़ों को भिगो रहा है। लगभग आधा घंटे की ड्राइविंग के बाद गाड़ी उसके फ्लैट के नीचे आकर रुक गई। ड्राइवर ने दरवाजा खोला और यश तेजी से उतर कर दौड़ते हुए सीधा फ्लैट में दाखिल हो गया। अब उसे ध्यान आया कि खून की बूंदे उसके कपड़ों को भिगो रही हैं। उसने तुरंत वाश बेसिन में हाथ धोकर ड्रेसिंग की और पलंग पर औंधे मुंह गिर कर सिसकने लगा। जिंदगी उसे किस मोड़ पर ले आई थी और एक अज्ञात शक्ति के इशारे पर नाचते हुए अभी उसे ना जाने क्या–क्या काम करने थे? बिस्तर पर गिर कर गहरी बेहोशी में कब डूबता चला गया, उसे पता ही नहीं चला।

सारी रात बीत गई और सुबह 9.00 बजे जब यश की आंख खुली तो उसे दुनिया कुछ अलग ही नजर आ रही थी। यश चुपचाप उठा और नित्य क्रिया से फारिग होकर नहा धोकर सीधे अपने पूजा कक्ष में चला गया। वह पद्मासन में बैठकर ध्यान की गहराइयों में उतरता चला गया। उसे अनुभव हुआ मानो कोई दैवी शक्ति उसे कुछ संकेत देना चाहती है किंतु उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। कुछ पलों के बाद ध्यान की प्रक्रिया समाप्त हुई और यश पूर्व वत अपने भौतिक संसार में लौट आया। नाश्ता करके तैयार होकर वह बाहर निकल गया।

सारा दिन यश इधर से उधर घूमता रहा। उसके मन की स्थिति कुछ अजीब सी हो रही थी। जिंदगी किस दिशा में जा रही है, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। कंपनी में काम के प्रति भी अब समर्पण और आकर्षण नहीं रह गया था। कुछ आवश्यक कार्य निपटा कर वह अपने फ्लैट पर दोपहर तक लौट आया। अभी बिस्तर पर बैठा ही था कि अचानक फोन बजा और दूसरी तरफ से जो समाचार मिला उससे उसके होश उड़ गए।

उसके पिताजी को अचानक हार्ट अटैक आया था और उनको अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। अर्जेंट ऑपरेशन हुआ है, अभी क्रिटिकल स्थिति है। उसे तुरंत वहां पहुंचना था। बेंगलुरु से जयपुर के लिए तुरंत अर्जेंट फ्लाइट टिकट लिया और तत्काल रवाना हो गया। वहां पहुंचकर उसने पाया कि उसकी मम्मी की स्थिति बहुत दयनीय हो गई थी। पापा के भर्ती होते ही मानो वे बिल्कुल असहाय महसूस कर रही थी। मेधा अभी छोटी थी, उससे समझदारी और जिम्मेदारी की उम्मीद करना उचित नहीं था। उसके पिताजी के दोस्त ने ही उन्हें वहां भर्ती कराया था। कुछ समय के बाद पिताजी होश में आ गए थे। तबीयत भी ठीक थी। उसकी मम्मी ने बताया कि वहां एक

मशहूर डॉक्टर थी, डॉ नेहा मालपानी जिन्होंने अच्छे तरीके से अटेंड किया था और जी जान लगाकर उसके पिताजी का इलाज किया था। अगर वह अपनी तरफ से कोशिश नहीं करती तो कुछ भी हो सकता था। वे लोग तो डॉक्टर नेहा के ऋणी हो गए थे। यश खुद भी मिलना चाहता था और शुक्रिया अदा करना चाहता था।

आज के जमाने में साधारण पेशेंट के लिए कौन इंसान इतना जी जान लगाकर कोशिश करता है डॉक्टरों के लिए तो ऑपरेशन एक रूटीन वर्क बन गया है। किसी का जीना और मरना एक साधारण बात हो गई है। स्ट्रेचर पर लेटा हुआ व्यक्ति सिर्फ एक बॉडी ही नहीं है बल्कि किसी घर का उजाला भी है, यह बात कौन समझता है? खैर, शाम को डॉक्टर नेहा अपने पेशेंट्स को संभालने के लिए आई और उसके पापा को भी देखा। यश इस समय नीचे चला गया था। डॉ नेहा उसके पापा और बाकी पेशेंट्स को संभाल कर अप. ने चेंबर में चली गई थी। जब यश लौटा तो उसकी मम्मी ने बताया कि डॉ आई थीं और अब अपने चेंबर में है। यश उनसे मिलने और शुक्रिया अदा करने के लिए चेंबर में चला गया।

जैसे ही वहां पहुंचा तो उसे आश्चर्य का जबरदस्त झटका लगा। डॉ नेहा के रूप में उसकी कॉलेज के जमाने की पुरानी साथी बैठी हुई थी। उन्होंने भी उसे तुरंत पहचान लिया और कुछ समय के लिए दोनों ही अतीत के गलियारे में खो गए। बोर्ड कक्षा में पढ़ते हुए दोनों एक दूसरे के अच्छे साथी थे। यश एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहता था जबकि नेहा एक कार्डियोलॉजिस्ट बनकर मानवता की सेवा करना चाहती थी। दोनों ने ही अपनी मंजिल को पाने के लिए रात दिन एक कर दिया था और दोनों को ही सफलता भी मिली।

पढ़ाई के दौरान ही एक दूसरे के व्यक्तित्व और गुणों के कारण दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो गए थे और यह आकर्षण कब प्रेम के रूप में परिणित हो गया , समझ में नहीं आया। लेकिन दोनों समझदार थे अपने माता–पिता का मान सम्मान और उनकी भावनाओं की परवाह करते थे । इसलिए अपने मन को समझा कर दोनों अपने–अपने लक्ष्य को प्राप्त करने चल दिए थे। उसके बाद काफी लंबी अवधि तक कोई संपर्क नहीं हो पाया क्योंकि वह अपनी पढ़ाई में डूब चुके थे।

पढ़ाई पूरी करने के बाद यश की मुलाकात याशिका से हुई थी। उससे ब्रेकअप के बाद वह इस दिशा में सोचना ही बंद कर चुका था। उसे लगा था कि प्यार और वफा उसके भाग्य में नहीं है। इसके अलावा निजी जिंदगी की परिस्थितियां और यथार्थ का कठोर धरातल भी उसके सपनों को चूर चूर करने के लिए काफी था। कब अपनी जिंदगी में व्यवसायिक रूप से मजबूर होता चला गया उसे पता ही नहीं चला।
आज कई सालों के बाद अपने सामने जब नेहा को देखा तो ऐसा लगा जैसे पतझड़ समाप्त होकर बहारों का मौसम आ गया हैं। खुशियां उसके दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं। लौट कर आया तो उसने कहा कि डॉक्टर से बात हो गई है अब सब ठीक हो जाएगा। चार–पांच दिनों में उसके पापा की तबीयत ठीक हो गई थी। और वो लोग घर लौटने की तैयारी करने लगे थे। इस दौरान डॉ. नेहा के साथ उसने काफी वक्त गुजारा था। भविष्य के सपने बुनने लगा था। एक शाम को जब छत पर घूम रहा था तो उसकी मां उसके सामने आई और कहा,''बेटा मैं देख रही हूं कि तुम्हारे चेहरे पर काफी दिनों बाद खुशी आई है। हम सब भी खुश हैं यह पूरा परिवार एक साथ है और तुम्हारे पापा की तबीयत ठीक है। आज मौका है तुम्हारे दिल की बात मेरे जबान पर लाने की। तुम्हें कैसी लगती है डॉ नेहा, अगर उनको बहू बनाकर इस घर में लाया जाए।''

यश शरमा गया और सिर झुका कर बोला ,''मां कैसी बातें करते हो? वह प्रोफेशनल डॉक्टर है। उसका कर्तव्य है अपने पेशेंट्स को ठीक करना। उसके समर्पण का मतलब यह नहीं कि हम उसके अंदर अपने घर की बहू तलाश करने लगे। और क्या वह खुद इस बात के लिए राजी होंगी ?''

''तुम चिंता मत करो बेटा ,मैं तुम्हारी मां हूं । मुझे मालूम है कि तुम्हारे भले के लिए मुझे क्या करना है ,और कैसे करना है? तुम बस हां कहो आगे सब कुछ मैं कर लूंगी। मैंने तो उनसे बात भी कर ली है। मुझे पता है कि तुम दोनों एक दूसरे के सहपाठी हो और एक दूसरे को चाहते भी हो।''
''कमाल करती हो मां।''यश आश्चर्य के स्वर में बोला,''इतना आगे तक बात पहुंच गई। और मुझे कुछ खबर ही नहीं है। खैर कोई बात नहीं , मुझे ईश्वर की इच्छा मंजूर है। आप लोगों की खुशी के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं।''कह कर यश ने अपना सिर झुका दिया और चुपचाप नीचे चला गया।

मां की खुशी का ठिकाना नहीं था। वो नीचे जाकर यश के पापा और मेधा को यह बात बताने चली गई। यश भी अपने कमरे में जाकर अपने बिस्तर पर लेट गया और मधुर सपनों में खो गया। जिंदगी पता नहीं किन मोड़ों से गुजर रही थी। आने वाला कल किस रूप में उसका इंतजार कर रहा था, वह समझ नहीं पा रहा था। भविष्य के बारे में सोचते सोचते कब नींद के आगोश में चला गया, उसको खुद भी पता नहीं चला।

रात को 3.00 बजे अचानक उसकी आंख खुली। अपने कमरे में अकेला ही था। अचानक उसने देखा कि सामने कमरे की दीवार पर वही रहस्यमयी आकृति प्रतिबिंबित होने लगी। यश के होश उड़ गए, तो आखिर यह बला यहां तक पहुंच गई है। यश की सांसे थम गई। दरवाजा बंद था। उस अदृश्य शक्ति ने धीरे – धीरे बोलना शुरू किया,''मुबारक हो यश। अपनी नई जिंदगी के सपने सजा रहे हो। लेकिन यह मत भूलना कि अभी तुम्हारी मंजिल के बीच मेरे लक्ष्य को तय करने का रास्ता बाकी है। तुम वही करोगे जो मैं चाहूंगी

इसी में तुम्हारी भलाई है।

और तुम्हें करना यह है कि कल सुबह की फ्लाइट से लौट आओ। तुम्हारा अगला और सबसे महत्वपूर्ण टास्क तुम्हारा इंतजार कर रहा है। अब तुम्हें कहां जाना है और क्या करना है यह वहां आकर ही पता चलेगा। तुम्हारे सिरहाने रखे नीले लिफाफे में कल सुबह 10.00 बजे की फ्लाइट का टिकट है। तुरंत लौट आओ। अगला संदेश वही मिलेगा।''आदेशात्मक स्वर में अपनी बात खत्म करके वह रहस्यमयी आकृति गायब हो गई।

यश के होश उड़ गए। उसे अपने सारे सपने चूर–चूर होते नजर आ रहे थे। लेकिन तभी उसके दिमाग में एक खौफनाक विचार आया। उसने नीले. लिफाफे को उठाया और सामने रखे डस्ट बिन में फेंक दिया।''बड़ी आई मेरी जिंदगी को तबाह करने वाली। अब तक वो जैसा नाच नचा आ रही है, मैं नाचता जा रहा हूं। अब ऐसा नहीं करूंगा, देखता हूं क्या होता है?''यश ने ऐसा सोचा ही था कि अचानक उसका मोबाइल बजा और उस पर एक लाइव घटना प्रसारित होने लगी।

एक काला साया हाथ में चाकू लेकर डॉ नेहा के घर में दाखिल हो गया था। सबसे पहले उसने डॉ नेहा की कार से छेड़खानी करके उसके ब्रेक फेल कर दिया। उसके बाद चाकू लेकर सीधा उनके बेडरूम की ओर बढ़ा अंदर डॉ नेहा गहरी नींद सो रही थी। यश की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसने चीखना चाहा लेकिन उसके मुंह से आवाज नहीं निकली। चटाक की आवाज के साथ अचानक उसके गाल पर एक भरपूर तमाचा पड़ा। पहली बार उसने अपने गाल पर एक अजीब सा स्पर्श अनुभव किया।

''बेवकूफ इंसान, देख रहा है तेरी आंखों के सामने तेरी नेहा की मौत का नजारा। एक पल और और हमेशा के लिए किस्सा खत्म। अगर मैं चाहूं तो पल भर में उसे जलाकर खाक कर सकती हूं। लेकिन उसकी मौत को नेचुरल डेथ दिखाने के लिए ऐसा कर रही हूं। अब देख मेरी ताकत का एक और नजारा।''

अचानक वह साया गायब हो गया। और जाने कहां से एक आग का गोला आकर सीधा डॉक्टर नेहा के घर के अंदर आकर गिरा। और पूरा घर धू–धू कर जलने लगा। चारों तरफ से चिल्लाने की आवाज आने लगी, ''आग आग बचाओ बचाओ।''

यश की आंखों से आंसू बहने लगे। वह दोनों हाथ जोड़कर घुटनों के बल बैठकर माफी मांगने लगा,''प्लीज मुझे माफ कर दो और रोक दो तबाही का मंजर। मैं तुम्हारी ताकत को भूल गया था। अब मुझे सब समझ में आ गया। तुम्हारी कही हर बात मेरे लिए पत्थर की लकीर है। अब मैं शिकायत का मौका नहीं दूंगा। प्लीज उसकी जिंदगी बख्श दो।''दीवार पर नजर आती परछाई एक मधुर लेकिन क्रूर हंसी हंसी और इसी के साथ आश्चर्य का एक मंजर यश को देखने को मिला। बड़ी तेजी से आग बुझने लगी।

भले ही काफी कुछ जल गया लेकिन डॉ नेहा को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। इसी के साथ ही लाइव प्रसारण बंद हो गया। यश ने चैन की सांस ली। उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी कि फोन करके नेहा से बात करता। अब तक सुबह के लगभग 4.30 बजने वाले थे। यश उठा और सीधा बाथरूम में चला गया। जल्दी तैयार होकर बाहर आ गया। सुबह जब उसकी मम्मी उठी तो वह जाने के लिए तैयार था। उनको समझ नहीं आया कि क्या हुआ जो वह अचानक जाने के लिए तैयार हो गया?

यश ने बड़ी सफाई से झूठ बोलकर कहा कि अर्जेंट कारण है उसे कंपनी में लौटना होगा। भरे हुए मन से मम्मी और पापा ने उसे विदा किया। नेहा के पास जाने और उससे बात करने की उसकी हिम्मत नहीं थी। टैक्सी में बैठकर जब वह एयरपोर्ट की तरफ जा रहा था तो उसने गाड़ी में रखे अखबार को देखा। आज की ताजा खबर थी– शहर की मशहूर डॉक्टर नेहा के घर में आग लगना, और कारण किसी को पता नहीं। शुक्र की बात यही रही कि कोई जनहानि नहीं हुई फिर भी काफी कुछ नुकसान तो हुआ ही था। यश के हाथों से अखबार छूट गया। उसे याद आ गई चेतावनी कि मैं तुम्हारा सब कुछ बना भी सकती हूं और मिटा भी सकती हूं। एयरपोर्ट कब आ गया उसे पता ही नहीं चला। फ्लाइट तैयार थी।

चुपचाप उस में बैठकर बेंगलुरु के लिए रवाना हो गया। आश्चर्य की बात तो यह थी कि इस दौरान उसके मोबाइल पर कोई नेटवर्क या कोई कॉल नहीं आया। जब विमान आधी दूरी तय कर चुका तब एक व्हाट्सएप मैसेज आया। नेहा ने लिखा था–accident happened unknown reasons- इसके बाद फिर नेटवर्क गायब हो गया।

यश को पता था कि यह सब क्या हो रहा है और कौन कर रहा है? लेकिन वह मजबूर था इसलिए चुप रह गया। एयरपोर्ट पर उतर कर सीधा टैक्सी लेकर अपने फ्लैट पर पहुंचा। कमरा बंद करके फूट–फूट कर रोने लगा। उसकी हिचकियां बंध गई लेकिन उसे रोकने और समझाने वाला कोई नहीं था। उसकी अपनी लड़ाई थी जो उसे अकेले अपने दम पर लड़नी थी। लेकिन क्यों कूदा उस लड़ाई में और क्यों चुना गया उसे? यह सवाल एक सांप की तरह उसके जहन को लगातार डसे जा रहा था।

रोते–रोते जब कुछ ठीक हुआ तो वाश बेसिन के सामने जाकर मुंह धोया। एक कप कॉफी बनाई और अपनी स्टडी टेबल पर आकर बैठ गया। अब भी फोन से नेटवर्क गायब था। कॉफी का पहला घूंट लिया था कि अचानक उसका हाथ सामने रखें नीले लिफाफे की ओर चला गया। जैसे ही उसने धड़कते हुए दिल और कांपते हुए हाथों से लिफाफे को खोलकर पढ़ना शुरू किया उसके होश गायब होते हुए चले गए.....

❑❑

रमा पूर्णिमा शर्मा,
टोक्यो जापान

नमस्ते इंडिया, मेला

28 और 29 सितंबर को टोक्यो जापान में योयोगी पार्क में नमस्ते इंडिया नाम से बहुत बड़ा मेला लगा । जिसमें पूरे जापान में भारतीय रेस्टोरेन्ट चलाने वालों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया । ऐसा लग रहा था कि जैसे टोक्यो पूरा भारत में परिवर्तित हो गया है । इसमें चाट पकौड़ी, गोल गप्पे, डोसा , छोले भटूरे इत्यादि अनेक प्रकार के व्यंजन भारतीयों ने ही नहीं जापानी लोगों ने भी चटखारे लेकर खाए।

❑❑

विकास रंजन ,
टोक्यो जापान

जापान में दशहरा

श्री राम मंदिर बांदो, इबाराकी में आयोजित रावण दहन कार्यक्रम अत्यंत भव्य और आकर्षक रहा। इस ऐतिहासिक आयोजन में टोक्यो सहित विभिन्न स्थानों से लोग भारी संख्या में एकत्रित हुए। जैसे ही रावण के पुतले का दहन हुआ, उपस्थित जनसमूह ने उत्साहपूर्वक ''जय श्री राम'' और ''जय हनुमान'' के नारों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। रावण दहन के इस दृश्य ने सभी का मन मोह लिया, और पूरे आयोजन ने भारतीय संस्कृति और धर्म के प्रति आस्था को और प्रबल किया।

श्री राम मंदिर बांदो, इबाराकी में रावण दहन जैसे भव्य आयोजन को सफल बनाने के लिए मंदिर के ट्रस्टी टीम के सदस्यों का विशेष धन्यवाद। उनकी अथक मेहनत और समर्पण से यह कार्यक्रम सभी के लिए अवि. स्मरणीय बन गया। इसके साथ ही, विजयादशमी के अवसर पर आयोजित डांडिया नाइट ने इस पर्व की रौनक को और बढ़ा दिया। इन आयोजनों ने न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत किया, बल्कि समुदाय को एकजुट होकर उत्सव मनाने का अवसर भी प्रदान किया।

❑❑

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
गाजियाबाद,(उ0 प्र0)

बुरा लगा, लगने दो

कहते यह सब सुने गए
बुरा लगा , लगने दो ।।

उजड़े नीड़ , बसंत का पतझड़
निरीह घटा की उमड़ – घुमड़
देखा जब कृषक की पीड़ा,
बुरा लगा , लगने दो ।।

छुई – मुई , डरती सकुचती
कठिन राह , पर चलती जाती
देखा जब नारी की पीड़ा ,
बुरा लगा , लगने दो ।।

सब अलमस्त लुटेरे जग में
जहर भरा उनके रग रग में
जाना , राजनीति की क्रीड़ा,
बुरा लगा , लगने दो ।।

संप्रदाय का डर है किसको
सत्ता का अभिमान है जिसको
बुत बन गयी , मन की पीड़ा,
बुरा लगा , लगने दो ।।

घायल पड़ा बीच सड़क पर
देखा , पूछा , निकल गए ।
मानवता की मृत्यु है यह
पत्थर को आँसू निकल गए ।

समझा, मैंने सच की पीड़ा ,
बुरा लगा , लगने दो ।।

❑❑

यशस्विनी एम
कक्षा–6
मैरियानिकेतन इंग्लिश स्कूल मैसूर

गरिमा सूदन
बहरीन

माँ...!

कहते हैं जन्म देते समय
औरत का दूसरा जन्म है होता
पर आज एक अलग–सा
एहसास हुआ माँ..!
मुझे जैसे एक और जन्म मिला!
बहुत कुछ नया–नया सा लगा जब
तुम्हारे ठीक होने की
अच्छी खबर सुनी,
खुशी की लहर मेरे घर में
फिर से खिलखिला उठी!
दिन भर की थकान मानो
उड़न छू हो गई,
तुम्हारा मासूम–सा चेहरा मुझे रुलाते
हुए फिर से हंसाने लगा।
हर काम घर का पूरा किया,
पर ध्यान तुम्हारी तरफ ही था।
मैं तुम्हारे पास उड़ कर आ
जाऊं ऐसा लगा,
पर मेरी परछाईं थी वहीं श्लोक
के रूप में,
सब की फिक्र में और
उनकी प्रार्थनाओं में !
सच, आज एक अलग–सा
एहसास हुआ माँ
मुझे बहुत कुछ नया–नया सा लगा !
हम सब की दुआएँ रंग लाईं
शुक्रिया उन दुआओं वाले हाथों का
जिनकी वजह से तुम्हारे ठीक होने की
अच्छी खबर सुनी
आज माँ मुझे जैसे एक
और जन्म मिला!
बहुत कुछ नया–नया सा लगा!
————तुम्हारी बेटी गिन्नी

❑❑

बाल मुकुन्द पुरोहित
नागौर, राजस्थान

बेटी जब मुस्काती है

दुनिया की हर खुशी मेरे
घर में आ जाती है।
बेटी जब मुस्काती है

तुतलाती भाषा में करती
बातें मीठी–मीठी
जैसे सर्द रात में लगती
प्यारी हमें अंगीठी
नानी दादी सम बातें कर
बहुत हँसाती है।

बेटी जब
नवधा भक्ति सी
और शक्ति सी
नई भोर की अभिव्यक्ति सी
छुई मुई सी है पर
जग का आधार कहाती है।

बेटी जब
जैसे ही बीतें बचपन तो
बेटी लगे पराया कोष
खुशी खुशी डोली चढ़ जाती
नहीं दिखाती कोई रोष
मंगल परिणय की बेला पर
बाबुल को बहुत रूलाती है।

बेटी जब
बेटी तो जग में ईश्वर की
एक अद्भुत अनुपम सौगात
वेद ऋचाएँ भी कहती हैं
बेटी की खातिर यह बात
फिर भी ना जाने क्यों
बेटी कोख में मारी जाती है।
बेटी जब मुस्काती है ।

❑❑

ज्योति यादव
आयु– 17 वर्ष
कक्षा– 12
विद्यालय– एस ए सी
प्रयागराज

इंद्राक्षी बाजपेयी
आयु–15 वर्ष
कक्षा :– 10
विद्यालय– एस ए सी, प्रयागराज

विवान मल्होत्रा

मातृभाषा हिंदी

अलौकिक दिखती भारत के द्वार पर,
मानो मां के माथे की बिंदी ।
बोली जाती भारत के हर द्वार पर,
वह भारतीयों की भाषा है हिंदी ।

भारत के द्वार–द्वार सजी हो मानो रंगोली,
प्रतीत होती है जैसे ईश्वर की बोली ।
संस्कृत भाषा की जो हमजोली,
फैली है विश्व में मानो रंगों की होली ।

ले रहा मनुष्य अनेक भाषाओं का ज्ञान,
जिससे हो रहा मातृभाषा का अपमान।
हो रहा भेदभाव जिस भाषा से आज,
पर वह है भारतीयों के सिर का ताज।

❑❑

हिंदी

ललाट दुर्ग पर शोभित प्रकोष्ठ,
एक रूपसि, शोणित लाल,
शुष्क थे जिसके ओष्ठ,
देख रही थी पथराई आँखों से
दृश्य विहंगम,
मुद्रा थी मानो सुख–दुख व
स्वीकृति का संगम।

मैंने उस अप्सरा को देखा,
जिसके माथे पर थी
दुःखों की रेखा,
प्रतीत होता मानो थी
कभी अत्यंत विकीर्ण,
अब लगती मुरझाई सी,
प्रताड़ित और शीर्ण।

पूछा मैंने उस सुंदरी से,
"कि तुम तो प्रतीत होती हो
भारत माँ की शृंगार रुपी बिंदी?"
थोड़ी झिझक मायूसी से,
कहा उसने, "हाँ, मैं हूँ हिंदी।"

❑❑

मम्मी–पापा

मम्मी–पापा का हो सर पर हाथ
हर मुश्किल में यही तो देता साथ

दिन–रात खूब मेहनत करते
ताकि चमकें हम आगे बढ़ते

उनके सपने पूरे होंगे तब
पढ़ेंगे लिखेंगे हम जम कर जब

है सँग उनके आशीर्वाद का हाथ
करें हम मेहनत जोश के साथ

❑❑

स्वस्ति मल्होत्रा
कक्षा – 9
आयु – 13 वर्ष

माता–पिता

माता–पिता है जीवन के सच्चे सारथी
निर्देशक,मार्गदर्शक, हैं हमारी शक्ति

उनकी कृपा से हमारी
हर राह है रोशन
उनके प्यार में छुपा है
जीवन का दर्शन

उनका प्यार है अनमोल,
अद्वितीय,अपार
करना है जीवन भर उनका
आदर–सत्कार

है शुक्र भगवान का
जो मिला उनका प्यार
नतमस्तक तन–मन से करूँ
वंदन बारम्बार

❑❑

दानिशा वर्मा
किशनगंज, महू (मप्र)

डॉ अलका भार्गव
प्रधानाचार्या, इंदौर

अक्सर हार जाती हूँ मैं

मेरे जीतने की जिद में,
एक अनोखा अंदाज है।
किसी को जीतते देखने के लिये ,
अक्सर हार जाती हूँ मैं।

पता नहीं क्यूँ ?
ये हार, जीत से ज्यादा सुखदाई है।
बिटिया की किसी जिद के आगे ,
ना, ना करते, हारना,
जीत जाने से बेहतर।
पति के मुखिया के बोध को ,
बचाने के लिए ,
गलती ना होने पर भी ,
गलती मान लेना अक्सर ।
सहयोगी जब इसरार करें कुछ,
ना चाहते हुये भी ,
उन्हें खुश करना बराबर।
कर्मचारी की निष्क्रियता पर
डाँट कर नहीं पुचकारकर ,
अक्सर हार जाती हूँ मैं ।

मलाल नहीं है,
कि जीतना था ।
इस सुख का अपना आंनद ,
इस सुख को पाने को ,
अक्सर हार जाती हूँ मैं ।

दूसरों को बड़ा बनाने को ,
अक्सर हार जाती हूँ मैं ।।

❑❑

विवान मल्होत्रा
कक्षा–5

रतन किर्तनीया
छत्तीसगढ़

सही दिशा में

लोहा आग में तपकर
लोहार की मार –
बनाता है मनोहर ,
इन्सान से होता है
इन्सानियत बढ़कर ,
जीवन की बेला /देख लो सच्चाई की
पथ में चल कर
खुद को पा के अकेला !
भटक ना जायें ! तेरा पथ –
थाम ले गुरु का हाथ !
चल ले दो कदम गुरु के साथ ,
सोना बन के चमकना ,
माटी बनकर
कुम्हार के हाथों में सजकर ,
खुद को आग में तपाकर
बेला है तेरे हाथ में –
सुधार जाओं सही दिशा में चलकर ।
चारु कर हिना को
शिला में घिसकर ,
जीवन को संवार लो !
थोड़ा पसीना बहाकर ,
बनाने वाले जग को/अद्भुत बनाया है,
काँटें वाली डाली पे –
पुष्प को खिलाया है ,
पुष्प खुशबू को छुपाकर –
फिर महकया है
भटक ना जायें – तेरा पथ !
जगा ले उस शक्ति को –
तू ने जो ! तेरी अंतर में छिपाया है !
गुजार ले जीवन के दो पल
सच्चाई के साथ ।
नव तैर रहा है/अत्रु की सागर में ,
मसल गया सपनों की पुष्प
मत होना निराशा/मनस्थ हो अभिलाषा,
बेला ने मारा /कौन देगा सहारा
परछाई भी होता विलुप्त !
सृष्टि जब तिमिर में लिप्त ,
मत डर निशा में !
चल तू सही दिशा में ,
आने वाला है ! कोई पूरब दिशा में ।

❑❑

प्राची गर्ग
जकार्ता, इंडोनेशिया

शुभ धनतेरस

सभी को मिले यह अमूल्य धन।
स्वास्थ और शक्ति से परिपूर्ण हो तन।

दया और परोपकारी हो जीवन।
प्रेम और सम्मान का सदैव हो चयन।

विद्या और संस्कारों का हो नमन।
अच्छे विचारों पर केंद्रित हो मन।

कभी व्यर्थ न जाए पौष्टिक अन्न।
कभी प्रदूषित न हो हमारा पर्यावरण।

अपनी धरती पर करे
अधिक से अधिक वृक्षारोपण।
क्योंकि यही तो है
वास्तव में अमूल्य धन।

खुशी से जगमगाए आपका
घर, परिवार और अंतर्मन।

❑❑

आन्या रॉय
आयु - 11 वर्ष/कक्षा – 7
माउंट कार्मल स्कूल
द्वारका, नई दिल्ली,भारत

डॉ बी निर्मला
डॉ बी निर्मला
वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर
प्रभारी
हिंदी की गूँज, मैसूर

बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और स्वास्थ्य

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमन्ते देवताः 'अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारत एक सुसंस्कृत देश है। एक समय में भारत में नारी की पूजा की जाती थी, नारी के बिना घर को श्मशान माना जाता था। आज समय ने नारी की अस्मिता पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। समय बदल गया है, लोग बदल गए हैं, संस्कार और विचारों का सर्वनाश हो चला है। एक ओर आज हम विवश हो गए हैं इस बात को लेकर कि लड़की होना क्या अभिशाप है? गुनाह है? क्या उसे जीने का अधिकार नहीं है? क्या वह केवल उपभोग की वस्तु ही रह गई है? आए दिन उस पर होने वाले हिंसा, अत्याचार, शोषण और भ्रूण हत्या की घटनाओं को देख, सुनकर दिल दहलने लगा है।

दूसरी ओर देखें तो हमें लगता है कि हम जरूरत से ज्यादा ही आगे बढ़ गए हैं हर क्षेत्र में। शिक्षा,तकनीकी तंत्र, ज्ञान, विज्ञान, कला, खेलकूद, राजनीति आदि हर क्षेत्र में लड़कियां बढ़ चढ़ कर भाग ले रहीं हैं और देश का नाम रोशन कर रही हैं।कहने का तात्पर्य यह है कि अब हमें समाज में लड़के और लड़की में कोई भेद भाव करने की जरूरत नहीं है।दोनों को ही समान अधिकार है। हालांकि अभी हम बहुत दूर नहीं है, इस बात पर अमल करना। हमारे पास सबसे बड़ी दौलत शिक्षा और स्वास्थ्य है जिसे हमसे कोई छीन नहीं सकता।जिसके पास ये दोनों दौलत हो वह जीवन में सब कुछ प्राप्त कर सकता है। इसके लिए समाज में परिवर्तन लाना जरूरी है और इस काम की शुरुआत सिर्फ महिलाएं ही कर सकती हैं। माताओं को बेटों के मोह से बाहर आना होगा। बेटियों के जन्म पर फक्र करना होगा। बेटियों का भी शिक्षा, सुरक्षा और स्वास्थ्य पर उतना ही अधिकार है जितना बेटों का।बेटे और बेटियों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। आज बाटियां हर क्षेत्र में आकाश को छू रही है। कोई ऐसा काम नहीं जिसे वह न कर सके।अर्थी को कंधा देना, दाह संस्कार कार्य भी आज बेटियां, महिलाएं निभा रहीं हैं। बेटों और पुरुषों को भी सभी कार्य सीखना चाहिए।दोनों ही परिवार के अंग हैं, दोनों को ही भरपूर प्यार, स्नेह, आदर, सम्मान, संस्कार, शिक्षा के अवसर दिए जाने चाहिए।

समाज में फैले अंध विश्वास, दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों को उखाड़ फेंकना चाहिए। शिक्षा ही इसका एकमात्र विकल्प है।आज की बेटियों को आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना होगा। अपनी शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य के बलबूते अपने सुंदर भविष्य का निर्माण करना उसे ही करना होगा। सकारात्मक सोच से, आगे बढ़कर उसे जमीन नहीं, आसमान को छूना होगा।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा, इस दिशा में एक प्रयास है। विद्यालय और महाविद्यालयों में, स्काउट्स एंड गाइड्स, राष्ट्रीय सेवा योजना, एन सी सी, कराटे, मार्शल आर्ट आदि के माध्यम से लड़कियों को अपनी सुरक्षा हेतु ट्रेनिंग दी जाती है। सहूलियत के अनुसार लड़कियों की शिक्षा हेतु सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं से उचित हॉस्टल्स, स्कॉलरशिप की व्यवस्था भी है। आजकल घर बैठे बैठे ऑनलाइन के माध्यम से हर चीज की जानकारी प्राप्त की जा सकती है,नौकरी, व्यवसाय भी की किए जा सकते हैं। लड़कियों को अपने आप को स्वावलंबी बनाने हेतु अधिक प्रयास करने की जरूरत है। बेटों को भी माता पिता उचित शिक्षा, संस्कार दें।दोनों में कोई भेद भाव न करें।

जीवन में शिक्षा के साथ साथ उत्तम स्वास्थ्य का भी होना जरूरी है। जिस प्रकार आज कल पुरुष वर्ग इस दिशा में अति जागरुक हैं।महिलाएं भी धीरे धीरे इस ओर अपना कदम उठा रही हैं।उन्हें भी अहसास हो चला है कि बिना स्वास्थ्य के, जीवन में कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता।वे भी जिम,योग और एरोबिक एक्सरसाइज आदि के माध्यम से अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना रही है।अब महिलाएं एक साथ कितने ही काम कर लेती हैं।अब उन्हें डटकर हर चीज का सामना करना चाहिए। तभी वे अपने जीवन में कामयाब हो सकेंगी। इसके उन्हें शिक्षा और स्वास्थ्य रूपी दौलत की अति आवश्यकता है अपनी सुरक्षा हेतु।

❑❑

आन्या रॉय
आयु - 11 वर्ष/कक्षा – 7
माउंट कार्मल स्कूल
द्वारका, नई दिल्ली,भारत

आखिर क्यों चुप्पी साध गई पक्षियों की चहचाहट ?

डॉ सत्यवान 'सौरभ'

सूना–सूना लग रहा, बिन पेड़ों के गाँव।
पंछी उड़े प्रदेश को, बांधे अपने पाँव।।

पक्षियों को पर्यावरण की स्थिति के सबसे महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक माना जाता है। क्योंकि वे आवास परिवर्तन के प्रति संवेदनशील हैं और पक्षी पारिस्थितिकीविद् के पसंदीदा उपकरण हैं। पक्षियों की आबादी में परिवर्तन अक्सर पर्यावरणीय समस्याओं का पहला संकेत होता है। चाहे कृषि उत्पादन, वन्य जीवन, पानी या पर्यटन के लिए पारिस्थितिक तंत्र का प्रबंधन किया जाए, सफलता को पक्षियों के स्वास्थ्य से मापा जा सकता है। पक्षियों की संख्या में गिरावट हमें बताती है कि हम आवास विखंडन और विनाश, प्रदूषण और कीटनाशकों, प्रचलित प्रजातियों और कई अन्य प्रभावों के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

बदल रहे हर रोज ही,
हैं मौसम के रूप ।
सर्दी के मौसम हुई,
गर्मी जैसी धूप ।।
सूनी बगिया देखकर, '
तितली है खामोश' ।
जुगनूं की बारात से,
गायब है अब जोश ।।

हाल ही की एक रिपोर्ट, 'स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स बर्ड्स' के अनुसार, दुनिया भर में मौजूदा पक्षी प्रजातियों में से लगभग 48% आबादी में गिरावट के दौर से गुजर रही है या होने का संदेह है। प्राकृतिक प्रणालियों के महत्वपूर्ण तत्वों के रूप में पक्षियों का पारिस्थितिक महत्व है। पक्षी कीट और कृंतक नियंत्रण, पौधे परागण और बीज फैलाव प्रदान करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप लोगों को ठोस लाभ होता है। कीट का प्रकोप सालाना करोड़ों डॉलर के कृषि और वन उत्पादों को नष्ट कर सकता है। पर्पल मार्टिंस लंबे समय से हानिकारक कीटनाशकों के स्वास्थ्य और पर्यावरणीय लागत (आर्थिक लागत का उल्लेख नहीं) के बिना कीट कीटों की आबादी को काफी हद तक कम करने के एक प्रभावी साधन के रूप में जाना जाता है।

आती है अब है कहाँ,
कोयल की आवाज ।
बूढा पीपल सूखकर,
ठूठ खड़ा है आज ।।

जब से की बाजार ने,
हरियाली से प्रीत ।
पंछी डूबे दर्द में,
फूटे गम के गीत ।।

पक्षी प्राकृतिक प्रणालियों में कीड़ों की आबादी को कम करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पूर्वी जंगलों में पक्षी 98% तक बुडवार्म खाते हैं और 40% तक सभी गैर–प्रकोप कीट प्रजातियों को खाते हैं। इन सेवाओं का मूल्य 5000 डॉलर प्रति वर्ष प्रति वर्ग मील वन पर रखा गया है, संभावित रूप से पर्यावरण सेवाओं में अरबों डॉलर में अनुवाद किया जा सकता है। पक्षियों और जैव विविधता के नुकसान का सबसे बड़ा खतरा आवासों का विनाश और क्षरण है। पर्यावास के नुकसान में प्राकृतिक क्षेत्रों का विखंडन, विनाश और परिवर्तन शामिल है, जिन्हें पक्षियों को अपने वार्षिक या मौसमी चक्र को पूरा करने की आवश्यकता होती है।

फीके–फीके हो गए,
जंगल के सब खेल ।
हरियाली को रौंदती,
गुजरी जब से रेल ।।

नहीं रहे मुंडेर पर,
तोते–कौवे–मोर ।
लिए मशीनी शोर है,
होती अब तो भोर ।।

1800 के दशक के बाद से अधिकांश पक्षी विलुप्त होने के लिए आक्रामक प्रजातियां जिम्मेदार हैं, जिनमें से अधिकांश समुद्री द्वीपों पर हुई हैं। उदाहरण के लिए, अकेले हवाई में, आक्रामक रोगजनकों और शिकारियों ने 71 पक्षी प्रजातियों के विलुप्त होने में योगदान दिया है। कुछ पक्षियों का अवैध शिकार वाणिज्यिक और निर्वाह उद्देश्यों के लिए, भोजन के लिए, या उनके पंखों के लिए किया जाता है। ऐतिहासिक रूप से, कुछ प्रजातियों का अत्यधिक शिकार विलुप्त होने का प्रमुख कारण रहा है। स्थानीय स्तर पर निर्वाह के शिकार के परिणाम स्वरूप शायद ही कभी प्रजातियों का विलोपन होता है। व्यावसायिक शिकार से किसी प्रजाति के मरने की संभावना अधिक होती है।

अमृत चाह में कर रहे,
हम कैसे उत्थान ।
जहर हवा में घोलते,
हुई हवा तूफान ।।
बेचारे पंछी यहाँ,
खेलें कैसे खेल ।
खड़े शिकारी पास में,
ताने हुए गुलेल ।।

जलवायु परिवर्तन से आवास के नुकसान और आक्रामक प्रजातियों के खतरों के साथ–साथ नई चुनौतियों का निर्माण करने का खतरा है, जिन्हें पक्षियों को दूर करना होगा। इसमें आवास वितरण में बदलाव और चरम खाद्य आपूर्ति के समय में बदलाव शामिल है जैसे कि पारंपरिक प्रवासन पैटर्न अब पक्षियों को नहीं रख सकते हैं जहां उन्हें सही समय पर होने की आवश्यकता होती है। अन्य मानव निर्मित संरचनाओं के साथ टकराव भी एक इनकी मौत का कारण है। उदाहरण के लिए, पावरलाइन पक्षियों के लिए एक खतरा पेश करती है, विशेष रूप से बड़े पंखों वाले, और हर साल 25 मिलियन पक्षियों की मौत का

अनुमान है। संचार टावरों का अनुमान है कि हर साल 7 मिलियन पक्षियों की मौत हो जाती है और रात में प्रवास करने वाले पक्षियों के लिए एक विशेष खतरा पैदा होता है।

वाहन दिन भर दिन बढ़े,
खूब मचाये शोर ।
हवा विषैली हो गई,
धुआं चारों ओर ।।
बिन हरियाली बढ़ रहा,
अब धरती का ताप ।
जीव–जगत नित भोगता,
कुदरत के संताप ।।

कीटनाशक और अन्य विषाक्त पदार्थ के कारण यूएस फिश एंड वाइल्ड लाइफ सर्विस का अनुमान है कि हर साल लगभग 72 मिलियन पक्षी कीटनाशक विषाक्तता से मर जाते हैं। पक्षियों पर कीटनाशकों के वास्तविक प्रभाव का आकलन करना मुश्किल है: प्रदूषण और विषाक्त पदार्थ उप–घातक प्रभाव पैदा कर सकते हैं जो सीधे पक्षियों को नहीं मारते हैं, लेकिन उनकी लंबी उम्र या प्रजनन दर को कम करते हैं। कीटनाशकों के अलावा, भारी धातुओं (जैसे सीसा) और प्लास्टिक कचरे सहित अन्य संदूषक भी पक्षियों के जीवन काल और प्रजनन सफलता को सीमित करते हैं। तेल और अन्य ईंधन रिसाव का पक्षियों, विशेष रूप से समुद्री पक्षियों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। तेल पक्षियों के पंखों का सबसे बड़ा दुश्मन है है, जिससे पंख अपने जलरोधक गुणों को खो देता है और पक्षी की संवेदनशील त्वचा को अत्यधिक तापमान में झुलसा देता है।

जीना दूभर है हुआ,
फैले लाखों रोग ।
जब से हमने है किया,
हरियाली का भोग ।।
शहरी होती जिंदगी,
बदल रहा है गाँव ।
धरती बंजर हो गई,
टिके मशीनी पाँव ।।

दुर्लभ, लुप्त प्राय और संकट ग्रस्त पक्षी प्रजातियों की रक्षा करें, महत्वपूर्ण जैव विविधता वाले क्षेत्रों में पक्षी सर्वेक्षण करना, पक्षियों की रक्षा के लिए आर्द्रभूमि की रक्षा करें संरक्षण रणनीति में जनसंख्या बहुतायत और परिवर्तन का विश्वसनीय अनुमान लगाना शामिल है। अधिक कटाई वाले जंगली पक्षियों की मांग में कमी के लिए नए और अधिक प्रभावी समाधान बड़े पैमाने पर लागू किए गए। हरित ऊर्जा संक्रमणों की निगरानी करना जो अनुपयुक्त तरीके से लागू किए जाने पर पक्षियों को प्रभावित कर सकते हैं।

रोज प्रदूषण अब हरे,
धरती का परिधान ।
मौन खड़े सब देखते,
मुँह ढाँके हैरान ।।
हरे पेड़ सब कट चले,
पड़ता रोज अकाल ।
हरियाली का गाँव में,
रखता कौन ख्याल ।।

पक्षी पर्यावरणीय स्वास्थ्य के अत्यधिक दृश्यमान और संवेदनशील संकेतक हैं, उनका नुकसान जैव विविधता के व्यापक नुकसान और मानव स्वास्थ्य और कल्याण के लिए खतरे का संकेत देता है। इस प्रकार, हमें तेजी से बड़े पैमाने पर विलुप्त होने की गति को कम करने के लिए प्रकृति पर बढ़ते मानव पदचिह्न को कम करने के लिए सरकार, पर्यावरणविदों और नागरिकों के समन्वित कार्यों की आवश्यकता है।
सच्चा मंदिर है वही,
दिव्य वही प्रसाद ।
बँटते पौधे हों जहां,
सँग थोड़ी हो खाद ।।
पेड़ जहां नमाज हो,
दरख्त जहां अजान ।
दरख्त से ही पीर सब,
दरख्त से इंसान ।।

❑❑

लघुकथा

डॉ अन्नपूर्णा बाजपेयी आर्या
कानपुर

फेरीवाला

गली की कुछ महिलाओं ने उसकी आवाज सुनते ही उसे घेर लिया और मोल भाव करने लगीं। जैसे सभी उसके इंतजार में ही थीं। वो हमेशा कुछ नया सामान ही लेकर आता।

कुछ ड्रेस मैटीरियल उलट पलट कर देखने के बाद य महंगा है , डिजाइन अच्छा नहीं है, ये मुझ पर नहीं फबेगा इत्यादि जुमले उछालती हुई सभी महिलाएं किनारे हो लीं। वो भी बहुत हो. शियार था जानता था ये महिलाएं क्या चाहती हैं!

कुछ ड्रेस मैटीरियल उसने अंदर के बैग में रखे हुए थे, निकालते हुए बोला, 'मैडम ये आज के ट्रेंड में है बहुत सुंदर पीस है ये देखिए !' कहते हुए उसने कुछ पीस अपनी साइकिल पर ही फैला दिए।

कुछ महिलाएं तो लपकी लेकिन कुछ मुंह फेर कर फिर चल दीं। उसने दूसरे बैग से कुछ और पीस निकाले और जाती हुई बाकी महिलाओं को पुकारा, ' ये पीस देखिए चाची जी! इसमें तो आप बिल्कुल हीरोइन लगेंगी।'

जो चाची टाइप महिला थीं वो पलटी और मुस्कुराते हुए उसके पास आकर बोली, ' तू नहीं सुधरेगा न, कितनी बार कहा है मुझे भाभी कहा कर चाची नहीं , क्या मैं चाची की उमर की लगती हूं।' और पास आकर वो पीस देखने लगीं। और देखते ही देखते उसके सारे ड्रेस मैटीरियल बिक गए और वो मुस्कुराता हुआ चल दिया।

अपने घर की बालकनी में खड़ा ध्रुव काफी देर से ये सब देख रहा था , उस फेरीवाले को आवाज दी, ' ऐ!रुको!'

वो हड़बड़ा कर रुक गया, ' साहब आपको भी कुछ लेना है, लेकिन मेरे पास केवल लेडीज के ही ड्रेस मैटीरियल हैं!'

ध्रुव ने कहा , ' नहीं! ये बताओ तुमने इन लोगों को अपना माल कैसे बेचा ?'

वो हंसता हुआ बोला, ' साहब फेरी वाला हूं इतना समझता हूं कि कब किसको कैसे अपना माल बेचना है।' और गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ गया।

ध्रुव की आँखें चमक उठीं आखिर वो बीमा वाला जो ठहरा!

❑❑

मोनिका रूसिया,
भिलाई, छत्तीसगढ़

आस्था

नव विवाहिता रमा लगातार अपनी सास की बुराई करे जा रही है—"हमेशा टोकती हैं। उनको मेरे काम करने का तरीका, पसंद ही नहीं आता। शक्कर, नमक, डालते समय तो, अक्सर कहेंगीं–ध्यान से बहू। अब बताईये, क्या मुझे इतना भी अंदाजा नहीं है? उनके संग ज्यादा दिन नहीं रह पाऊँगी।"

माँ सरिता को, अपने संयुक्त परिवार की आस्था पर, बिखराव का अंदेशा होने लगा। सरिता, अपनी बहू सीता को, आँख से इशारा करते हुए उठ गईं। सीता ने बड़े प्यार से ननद रमा की पीठ सहलाते हुए कहा—"रमा, तुमने अपनी नौकरी बदली है न।"

रमा ने हाँ में सिर हिलाया। सीता बोली–"क्या, तुम वहाँ, पुरानी कंपनी की तरह ही, काम करती हो।"

रमा, अपनी भाभी की अनुभव. हीनता पर मुस्कुराई और बोली—"अरे! नहीं भाभी। नई कंपनी ने, पहले एक महीने की ट्रेनिंग देकर, काम सिखाया है। ताकि, परिणाम सही आये।"

अब सीता की बारी थी, मुस्कुराने की। वो बोलीं—"रमा, अपनी सास का बोलना–बताना, अपनी ट्रेनिंग का हिस्सा समझो। खुशकिस्मत हो कि तुम्हें अनुभवी और सुयोग्य ट्रेनर मिलीं हैं। थोड़े धैर्य से काम लो।"

रमा का संतुष्ट मुख देखकर, सरिता को अपनी, संयुक्त परिवार की आस्था पर, फिर से विश्वास होने लगा।

❑❑

जी. प्रदन्या /कक्षा–6

डॉ दीप्ति साहनी
अमृतसर

कटघरा

रिया और रितिक की उम्र में सवा दो साल का फासला था। दोनों बच्चे मां की जान थे।

एक को बांहों के आगोश में सुलाती तो दूसरे बड़े बेटे को अपनी गोद में सुलाती। दोनों को बहुत प्यार से पालती पोसती है।

17 वर्ष का ऋतिक अपने जन्मदिन पर मां को कहता है, "मां अभी दोस्तों के साथ बर्थडे पार्टी मनाने जाना है।"

मां उसके साथ केक काटने की प्रतीक्षा करती है। रात 11.00 बजे जब वह वापस घर लौटता है तो बीयर के नशे में होता है और मां के डांटने पर चिल्लाकर बात करता है।

दूसरी तरफ रिया मां के डांटने पर कहती है, "मां यह आज का चलन है। आप का जमाना और था और आज का जमाना और है। आज के समय में बर्थडे पार्टी ऐसे ही होती है।

पिता भी रितिक का पक्ष लेते हुए कहता है कि बच्चे अब बड़े हो गए हैं। उन पर अंकुश मत लगाओ। इतने वर्ष अपने प्यार, ममता, दया एवं सेवा भावना के साथ घर को सींचती हुई आंखों में आंसू भरे टुकुर–टुकुर बस सबकी ओर देख रही थी। उसे ऐसे कटघरे में खड़ा कर दिया जाएगा। ऐसा तो कभी सोचा नहीं था।

❑❑

श्रीमती मीना रवि
अमृतसर

सेवा भाव

एक समय की बात है कि कबूतरों का झुण्ड भोजन की तलाश में इधर–उधर भटक रहा था, वहीं दूसरी तरफ एक शिकारी पक्षियों को पकड़ने की योजना बना रहा था। बहुत कोशिश करने के बाद भी कबूतरों का झुण्ड भोजन तलाश नहीं कर पा रहा था। कुछ देर बाद थक–हार कर एक पेड़ की डाल पर सभी कबूतर बैठ गये और आपस में बात करने लगें।

आज किसकी नजर लग गयी, जिस कारण हम में से किसी को भी भोजन प्राप्त नहीं हुआ। लगता है, आज का दिन भूखे रहकर गुजारना होगा। भूख से हम लोगों का हाल इतना बेहाल है कि अब हम लोग उड़ने की कोशिश भी नहीं कर सकते। सुबह से ही हम लोग भोजन की तलाश में हैं, शाम होने को आयी। एक तो भोजन भी नहीं मिला और कुछ शिकारी हम लोगों का पीछा भी कर रहे हैं। देखो, वह लोग इधर ही आ रहे हैं। अब हमें कौन बचाएगा? हम लोग इतना थक गये हैं कि उड़ने की हिम्मत नहीं हो रही है।

जिस पेड़ की डाल पर बैठे सभी कबूतर एक दूसरे से बातें कर रहे थे, उसी पेड़ पर एक बन्दर रहता था। बन्दर चुपचाप सभी की बातें सुन रहा था। बन्दर बहुत दयालु था, उसे कबूतरों पर दया आयी। उसने अपने आस–पास के सभी साथियों को आवाज लगायी। उसके सभी साथी आ गये। साथियों की मदद से कुछ ही देर में बन्दर ने शिकारियों को भगा दिया। बन्दर के पास बहुत सारा भोजन था। उसने सभी कबूतरों को भरपेट भोजन खिलाया और थोड़ा भोजन घर ले जाने के लिए भी दे दिया। सभी कबूतर बहुत खुश हुए। उन्होंने जी भरकर बन्दर को दुआ दी और अपने घर आने का निमन्त्रण भी दिया। इस तरह से सभी कबूतरों ने बन्दर से दोस्ती कर ली।

जाते–जाते कबूतरों ने उसे धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिये।

❑❑

नीलम मेहता
पानीपत

जिन्दगी

कितनी प्यारी हैं वो.....
कभी हंसाती हैं तो कभी
रुलाती हैं
कभी दुःख देती हैं तो
कभी मरहम लगाती हैं वो
कितनी प्यारी हैं वो....

कभी टूट कर बिखर जाती हैं
तो कभी खुद ब खुद ही
सिमट जाती हैं।
कभी जब मैं खुश होकर इससे
प्यार करने लगूं तो
धोखा दे जाती हैं।
कितनी प्यारी हैं वो.....

बहुत कुछ सिखाया है
इसने जीवन में
बार बार अपनों से
मोह में पड़ना सिखाया हैं।
बार बार अपनों से मिलाकर
बिछड़ना सिखाया है।
जब भी अपनों से धोखा खाया
तो इसी ने मर मर कर
जीना सिखाया हैं।
फिर भी कितनी प्यारी हैं वो.....

आपकी मेरी और हम सब की
जिन्दगी।

❑❑

अमित कुमार कौशल
सह संपादक ,
हिंदी की गूंज
अम्बाला कैंट

इक नया सवेरा है

अब कश्मकश है जिंदगी,
रातों का अँधेरा है,
धुंध में खोजती आँखें, फिर वही,
इक नया सवेरा है।

कपकपाते तन में,
अनजाना सा एक चेहरा है।
इक कंबल की आस लिए, फिर वही,
इक नया सवेरा है।

ना पुरुष है, ना ही स्त्री,
बच्चा है वो, जख्म उसका गहरा है।
कपकपाती सी जिंदगी में, फिर वही,
इक नया सवेरा है।

रिश्तों की मासूमियत में,
हाथ फैलाए, न जाने क्या कह रहा है?
जलती हुई ज्वाला है मन में, फिर वही,
इक नया सवेरा है।

मैली सी फटी चादर ओढ़े,
ममता की छाँव में वो अकेला है।
रोज कपकपाती रातें हैं उसकी, फिर वही,
इक नया सवेरा है।

नशे की राह पकड़ता,
सपना भी उसका कितना गहरा है।
सरकारी वादों में उम्मीद रखे, फिर वही,
इक नया सवेरा है।

❑❑

कर्नल आदिशंकर मिश्र
'आदित्य'
लखनऊ

प्रयोजन

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें सत्य व प्यार भरे बोल बोलने के लिए मुँह, होंठ व जिह्वा दी है न कि दूसरों की आलोचना करने के लिये, उसने हमें आँखे दी हैं वास्तविकत परिस्थिति और उसकी सच्चाई समझने के लिये न कि किसी को निरुत्साहित व अपमानित करने के लिये, उसने हमें किसी की दर्द भरी आवाज सुनकर उसकी मदद के लिये कान दिए हैं न कि संवेदनहीन होकर तटस्थ रहने के लिये, उसने हमें हाथ इसलिए दिए कि किसी जरूरतमंद की सहायता कर सकें न कि सोने व हीरे के आभूषण धारण कर शोभायमान बनाने के लिए। इस प्रकार जो कुछ हमें हमारे सौभाग्य से विधाता ने दिया है वह सभी कोई न कोई उत्तम कार्य करने के उद्देश्य से ही दिया है। भावार्थ यही है कि हम जो भी करें उसमें रचनात्मकता का प्रयोजन होना चाहिये।

❑❑

विहान.पी.गौड़ा
उम्रः15 साल / कक्षाः 10
स्कूलः साध्विद्या स्कूल,
मैसूरु.

कृत्विनी विजय
छठी कक्षा
भारतीय विद्या भवन मैसूर

गीताप्रिय सीमा बब्बर
पानीपत

हमारी दीदी

धीमे धीमे कदमो से जो आज आये हैं
इनकी सोच की रफ्तार सबसे तेज थी
कभी सूखे से शहर में
रिक्शा पर पौधे लगवाती
कभी भरी सर्दी में घुमन्तु बच्चों को
जूते कपड़े पहनाती
सैकड़ो चेहरों पर हल्की सी
मुस्कान कारण बनी
ना जाने कितनो को
शिक्षा दे तारण बनी
जीवन का एक ही ध्येय मेरा नगर
हँसता रहे
सदा हरा भरा मेरे नगर का
हर रस्ता रहे
कोई ना दीन कोई ना हो दुखी
सब सम्पन्न हों सब सुखी
तिनका तिनका जोड़ कर इन्होने
आशियाँ सजाया है
अनगिनत नारिओं को संग
सेवा कार्यों में लगाया है
आंसू पोंछने को हरदम तैयार रहती हैं
इनके दिल में ममता की नदी बहती है
अपने बच्चों पर लुटाने के बाद प्रेम
स्कूल के बच्चों पर भी लुटाया है
अथक प्रयासों से बहुतों का
भविष्य जगाया है
राजे राजे कह कर जो मीठे बोल
बोलती हैं
मन की हर गिरह प्रेम से
शनैः शनैः खोलती हैं
सफल पुरुष के पीछे
महिला की बात होती है
एक बच्ची तब बढ़ती है जब पिता का
कंधे पर हाथ होता है
बचपन से ही पिता ने
जिनका होंसला बढ़ाया
जिनको घर के बड़ी बेटी
नहीं बेटा बनाया
सुसंकृत माँ की ममतामयी मिली छाया
कोई ना घर से खाली गया
जो उम्मीद से आया
दो भाई दो बहनो का गर्व कहलाये
सब को प्यारी बड़ी दीदी बन सहलाये
सब भाई बहनो ने
जिनका दिया हमेशा साथ
आज भी उनके लिए सब खड़े यहां ले
हाथों में हाथ
मायके की लाड़ली ने
ससुराल में भी प्रेम पाया
सास ससुर के सेवा कर यश कमाया
बड़ी ननदों का सदा किया सम्मान
छोटी को दिया अपनी बेटी सा मान
जेठ हों या देवर सब करते गुणगान
इन्होने बढ़ाई परिवार की
आनबान और शान
घर से बाहर निकल कर स्त्री जब
करती समाज कल्याण
इस कार्य में सबसे बड़ा रहता है
पतिदेव का योगदान
ना जाने पथ में कितनी
बाधाएं आयी होंगी
कभी घरेलू कभी आर्थिक सब मिल
सुलझाई होंगी
कभी प्यार कभी तकरार
कभी किया होगा लम्बा इंतजार
कभी तार पर टँगे सूखे कपड़े
हुए होंगे गीले
कभी थक कर तन के सब पेंच हुए
होंगे ढीले
तब परिवार ने ही साथ निभाए होंगे
थकी माँ के दोनों बेटों ने
पाँव दबाये होंगे
जब बाहर पेट जरूरतमंदों का
भरा होगा
शायद उस दिन अपने घर पर ना
कुकर चढ़ा होगा
जल्दी में बच्चों को मैग्गी खिलाई होगी
पढ़ाते निर्धन बच्चों को
छूटी अपने बच्चों की पढ़ाई होगी
अपने लिए सब जीते हैं
जो औरों के लिए जीते हैं
देते हैं अमृत सब को
स्वयं जहर के घूँट पीते हैं
ऐसे ही इक व्यक्तित्व को
हम सराह रहे
ऐसे ही एक परिवार के गुण गा रहे
हर संस्था जिस का सम्मान करे
हर समाज सेवक जिसका मान करे
उस अनोखी प्रतिभा का
स्वागत हम करते हैं
उस सेवक हृदय को नमन
हम करते हैं
नारी शक्तियों को जिसने एकजुट किये
समाज को दो सेवा संगठन दिए
शिक्षा दे बच्चों का उद्धार किया
अनाथों को माँ सा लाड़ प्यार दिया
ठंड से कांपते चेहरों को हसाया है
रक्तदानी बन कर सब को
रक्तदान सिखाया है
कभी कहानी ,कभी कविता
सुनाया करती हैं
कभी लिख कर कभी बोल कर अनुभव
बताया करती हैं
साहित्य से लगाव ने नया आयाम
दिलाया है
जापानी पत्रिका में हिंदी की गूँज में नाम
चमकाया है
इनरव्हील पानीपत मिडटाउन की भीष्म
पितामह कहलाती हैं
समय समय पर माँ बन कर सब को
ऊंच नीच समझाती हैं
यह वो शमा है जो खुद पिघल कर
महफिल रोशन कर जाती है
नारी समिति की संस्थापक
सजग चरित्र निभाती हैं
ज्यों पौधे के फूल जैसे
पौधे में ही झड़ जाते हैं
ऐसे व्यक्तित्व समाज के लिए ही
मर मिट जाते हैं
आर्य कॉलेज से स्नातक को
आज समय ने यहीं पहुंचाया है
यह व्यक्तित्व केवल परिवार का नहीं
हम सब का सरमाया है
कितने हैं लोग यहां जो
इस मुकाम तक जाते हैं
अपने जीते जी अपने ही
शौर्य की गाथा सुन पाते हैं
देवदूत बन जो रातों को भी
सड़कों पर समय बिताते हैं
कभी भोजन कभी वस्त्र
कभी कंबल पहुंचाते हैं
सेवा के दीवाने ही ऐसा सम्मान पाते हैं
वो दिल के शहंशाह जीते जी
अमर कहलाते हैं
सेवा की उस सुगंध से
यहां सब की पहचान है
उस रजनीगंधा से यहां
कोई नहीं अनजान है
सागर सी ममता हृदय में है
सेवा का ध्येय कंचन सा जिनका
हम सब की प्रेरणा स्त्रोत हैं जो
आईये आज मिल कर करें
स्वागत उनका
इस ग्रंथ ने जिस का
पूरा व्यक्तित्व उजागर है
वो सुंदर व्यक्तित
हमारी दीदी कंचन सागर है

❑❑

दीक्षा तिवारी
कानपुर

हिंदी सूक्तियाँ

- हिन्दी एक सरल भाषा है। उसका साहित्य भी समृद्ध है। उसे बोलने वालों की संख्या भी बहुत बड़ी है, अतः मेरी दृष्टि में हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया जाना चाहिए– गोदार्द हेद्रिक (हॉलेण्ड)
- हिन्दी सीखने का कार्य ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को राष्ट्रहित में करना चाहिए– एनी बेसेन्ट
- भारत की सच्ची आत्मा का ज्ञान हिन्दी के द्वारा ही हो सकता है– ग्रियर्सन
- संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की आवाज हिन्दी में ही सुनी जानी चाहिए– चीनी साहित्यकार प्रो. जिंग दिंग हाँग
- जो लोग हिन्दी को कठिन भाषा मानते हैं वे लोग हिन्दी से परिचित नहीं हैं.– रूसी कवि वारान्निकोव
- भारत को तुरंत अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त होकर प्रेम के साथ हिन्दी को विकसित करना चाहिए –जोनिया मिजो (जापान)
- लगभग सौ वर्षों से फिजी में हिन्दी चल रही है– राम नारायण गोविंद (फिजी)
- मॉरिशस में गाँव–गाँव में राम चरित मानस के द्वारा हिंदी की शिक्षा दी जाती है – रविन्द्र धरबरन (मॉरीशस)
- हिन्दी सब भाषा की जननी। साहस भरनी पातक हरनी।।
  –डॉ० ब्रजेन्द्र भगत (मॉरीशस)
- आओ प्यारे गफलत छोड़ो, माँ पुकारती मुँह मत मोड़ो ।
  उठो, शक्ति पाओ, हरसाओ,
  भाषा माँ को फूल चढ़ाओ ।।
- जय हिन्दी जय भाषा माँ, तू है देश की आशा माँ ॥ – (गयाना हिन्दी प्रचार सभा का प्रार्थना गीत)
- अगर हिन्दुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है, तो राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है– महात्मा गाँधी
- देश के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने बाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है। – सुभाष चन्द्र बोस
- उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिन्दी – गुरुदेव रविन्द्र नाथ
- मैं अपनी मातृभाषा बंगला में लिखकर मैं 'बंगबन्धु तो हो गया किंतु भारत बंधु' मैं तभी हो सकूंगा जब भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखूँगा –बंकिम चन्द्र चटर्जी
- हिन्दी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।– राजाराम मोहन राय
- भारत की प्रभुसत्ता और अ खण्डता बनाये रखने के लिये हिन्दी का प्रचार अत्यंत आवश्यक है– महाकवि शंकर कुरुम
- हिन्दी अपने गुणों से ही देश की राष्ट्र भाषा है – लालबहादुर शास्त्री
- राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे
- अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें कोई दो राय नहीं । – पं. जवाहरलाल नेहरु
- प्रत्येक भारतीय को हिन्दी सीखनी चाहिए– डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी
- हिन्दी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी लोगों ने किया है वह हमारी राष्ट्र भाषा है – चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
- हिन्दी हमारे देश की भाषा और प्रभावशील विरासत है–माखनलाल चतुर्वेदी
- हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्रोत है– सुमित्रानन्दन पन्त
- सभी भारतीयों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा समझकर अपनायें – डॉ. भीमराव अम्बेडकर
- हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समावेशी हो सकती है– राष्ट्रकवि मैथली शरण गुप्त
- हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती और दृढ़ करती है – राजर्षि टंडन
- मैं दुनिया की समस्त भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो मैं सह नहीं सकता– आचार्य विनोबा भावे
- भारतीय जनता के बीच काम करने का एक मात्र साधन हिन्दी है – जय प्रकाश नारायण
- हिंदी से किसी भाषा को भय नहीं है, यह सबकी सहोदर है – महादेवी वर्मा

वन्दना नाटेश्वरी 'योगी'
मध्यप्रदेश

रात – दिन

ये सबक हर शख्स को,
पढ़ना पडेगा रात दिन।
प्यार से ही अमन का,
दरिया बहेगा रात दिन।

शांति का संदेश तुम,
देते चलो हर एक को।
रंग लाएगी बहारें,
जग कहेगा रात दिन।

नाचता गाता जमाना ,
जब सफर में हो खुशी।
राम तेरे आँसुओं में,
तर रहेगा रात दिन।

भूल जाता है जमाना,
नाम तो कुछ देर में।
पर करम तेरा यकीनन,
साथ देगा रात दिन।

तुम भला करते चलो,
जितना सफर में हो सके।
देर से मुमकिन सही पर,
फल मिलेगा रात दिन।

❑❑

आन्या रॉय
आयु - 11 वर्ष/कक्षा – 7
माउंट कार्मल स्कूल
द्वारका, नई दिल्ली,भारत

रश्मि अखोरी
पानीपत

मेरी कविता न जाने कहाँ खो गई

मेरी कविता न जाने कहाँ खो गई
न हर्ष न विषाद न भावातिरेक
फिर कहाँ से,कैसे रचूँ मैं कविता?
न लगाव न दुराव न उम्मीद
न प्रेम न नाराजगी
फिर कहाँ से,
कैसे रचूँ मैं कविता?
बस भावशून्य हूँ
न द्रवित हूँ न हर्षित
फिर कहाँ से,
कैसे रचूँ मैं कविता?
काश,मैं एलेक्सा सी होती
बस ऑर्डर फॉलो करती
मनोभाव महसूस न करती।
जीवन स्वयं में सिमटे
स्वयं में उलझे स्वयं में सुलझे
मुझे नहीं रचनी कोई कविता।

❑❑

केशव रॉय, मुंबई

अंतर्मन के प्रश्न

रद्दी वाला जब अपने ठेले पर बहुत ही सस्ते दामों पर साहित्य जगत में कालजयी साहित्य को लिखने वाले लेखकों की खरीदी हुई पुस्तकें लेकर घरों के सामने से निकलता है तो ऐसा लगता है कि बेघर पुस्तकें अपने लिए घर को ढूँढ रही हैं कि कोई तो हमें शरण दे दो। भारतीय घरों में ज्ञानवर्धक पुस्तकों के लिए अलग से अलमारी या पुस्तकालय वाला कमरा होना कितना जरूरी है ? क्या पुस्तकों के लिए घर में जगह बनाने के लिए परिवार के हर सदस्य की सहमति होती है ?

❑❑

संजय अनंत

अंतर्चेतना की अनंत यात्रा

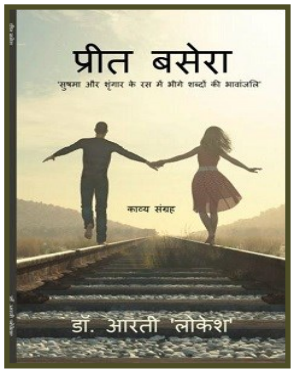

वे अंतरिक्ष सम अनंत हैं जिसकी कोई सीमा नहीं। मनन–चिंतन के गहरे सागर में वे रसातल तक जा चुकी हैं। यहाँ शब्द उनके विचारों के, भावों के अनुचर बन चुके हैं, सब कुछ लयबद्ध मानो सती ने सहस्र युगों के तप के पश्चात नेत्र खोले हों। ये निस्सीम साधना के स्वर हैं। किसी ने बड़े कैनवास पर सधे हुए हाथों से बिखेरी हो रंगों की अद्भुत छटा जैसे। वर्षों के रियाज के बाद रंगमंच पर किसी नृत्यांगना ने मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति दी हो। सब कुछ सधा हुआ, समझा हुआ, वर्षों से ज्ञान प्राप्त करते–करते, समस्त योग सिद्ध करते–करते, शाक्य मुनि मानो अब विश्राम की कामना से बोधि वृक्ष के तले शांत बैठे हों और अनायास ही उनकी आत्म ज्योति प्रकाशित हो गई हो।

यहाँ शिव और सती एक दूसरे में समाहित, मानो अर्धनारीश्वर हैं। डॉ. आरती 'लोकेश' जी की साधना में संसार भी है और अंतर्मन भी। आरती जी के रचना संसार में कुछ नहीं छूटता, सब कुछ स्वीकार्य है, मानो जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय साथ–साथ हों। ये अनंतता, विषय व चिंतन का बंधनमुक्त होना, उनकी वर्षों की साधना का फल है, विस्तृत अध्ययन का परिणाम है। इतनी विविधता दुर्लभ है, मानो हेमलेट की ओफिलिया व दुष्यंत की शकुंतला साथ–साथ हों। इसका कारण है उन्होंने हिन्दी साहित्य के साथ–साथ अंग्रेजी साहित्य भी पढ़ा है। कई वर्षों से यू.ए.ई. में हैं। जीवन की पाठशाला में विस्तृत अनुभव का पाठ भी उन्होंने किसी होनहार विद्यार्थी सम पूरे मनोयोग से पढ़ा है। यही कारण है वे विस्तृत हैं, बंधन मुक्त हैं। डॉ. आरती 'लोकेश' एक स्थापित रचनाकार हैं, काव्य व कथा, दोनों में प्रवीण हैं, अनेक सम्मान उन्हें मिले हैं। हिन्दी साहित्य में उनकी अपनी पहचान है। उनके अब तक चार काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इनमें से तीन काव्य संग्रह 'छोड़ चले कदमों के निशाँ,' 'प्रीत बसेरा' व 'षड्गंधा' को पढ़ने का सौभाग्य हमें मिला है।

आरती जी के सृजन संसार में हम प्रवेश कर रहे हैं। ये यात्रा लंबी है किन्तु आनंद से परिपूर्ण है इसलिए आपको मेरे साथ–साथ धीमी गति से धीरज रख आगे बढ़ना है। इस यात्रा में हमें जीवन के, अंतर्मन के, विविध रूप दिखाई देंगे।

डॉ. आरती 'लोकेश' के काव्य सृजन को हम दो भागो में विभक्त करते हैं। आरती जी जब अंतरमुखी है, अपने अंतर के हर्ष को, आनंद को, पीड़ा को, संताप को शब्द प्रदान करती हैं, इन कविताओं में हम उनकी अंतर्चेतना के दर्शन करते हैं। इसमें केवल और केवल उनका अंतर्मन है और उसके अंतर की स्व प्रस्फुटित शीतल जल की काव्य धारा है। दूसरे भाग में उनकी सृजनशीलता में ये भौतिक संसार है, सांसारिक अनुभव हैं, रिश्ते–नाते हैं, सामाजिक विषय हैं, देशप्रेम है, अपनी विरासत से लगाव है, अतीत का आकर्षण है, जो प्रवासी साहित्यकारों के सृजन में हम सहज देखते हैं।

संग्रह 'छोड़ चले कदमो के निशाँ' में एक कविता है 'स्याही', इस रचना में वे अपनी सृजनशीलता को परिभाषित करने का प्रयास करती हैं–

नटखट मन ने उंडेल दी
स्याही की अनुकृति
या किसी विज्ञ ने है रची,
यहाँ अनन्य सुकृति
वे आगे कहती हैं–
बाहर बिखेरे गए जो थे
दवात में डूबे अक्षर
या उकेरे गए पृष्ठ पर,
शांत अंतर्मन के निर्झर

शांत मन से अनायास ही, उपवन में बिखरे जूही सम या किसी पहाड़ी की वक्ष से निकले झरने की तरह, उनके अंतर्मन से बहते हुए उनकी लेखनी से शब्द बन संसार में अवतरित हुए हों...। यहीं उनकी उन कविताओं का मर्म है, जो उनके अंतर्मन से सहज ही प्रस्फुटित होती हैं। हम उनकी मन और बुद्धि से लिखी कविताओं के अंतर को समझ सकते हैं।

इसी संग्रह में अपनी कविता 'मेरी अभिलाषा' में पुनः उन्होंने अपने लेखन के मर्म को, अपनी सृजनशीलता से जुड़ी अपनी कामना को, अभिलाषा को परिभाषित किया है। वे लिखती हैं–

मेरी अभिलाषा मैं अपने
शब्दों में घुल जाऊँ
काव्यमय कर के स्व तन को,
सुर में बंधती जाऊँ

वे चाहती हैं उनकी ये शब्द साधना ही उनकी पहचान बने, वे आगे लिखती हैं–

शब्द मेरी पहचान बने,
चेहरा मैं बदल भी आऊँ
उपन्यास मेरी हर साँस रचे,
मैं उस में रच बस जाऊँ

विश्व गुरु आदि शंकराचार्य के शब्दों में–

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं,
पुनरपि जननी जठरे शयनम्...

आरती जी कहना चाहती हैं, एक दिन ये तन छूट भी जाए। हो सकता है मैं इस संसार में नए तन के साथ आऊँ किन्तु मेरे शब्द ही इस संसार में मेरी पहचान बने रहेंगे। मेरा सृजन हर मानव के हृदय में बसा हो। यही वह अमरता है, अमृतमय जीवन है जो यह शब्द साधना, आप जैसे साधकों को प्रदान करती है। आपके शब्द इस संसार में शाश्वत रहेंगे, शब्द ही तो ब्रह्म का अंश हैं। वे अविनाशी हैं तो आपके अंतर्मन से निकली कविता 'मेरी अभिलाषा', निश्चित ही एक सार्थक कविता है।

कविता 'तलाश' में आरती जी की अंतर पीड़ा से निकले शब्द हैं। जीवन के नकारात्मक चक्र में घूमते, अपनी जिम्मेदारी व अनेक विरोधाभास के बाद भी वे आशावान हैं। घोर विरोधी वातावरण में भी अपनी सकारात्मक ऊर्जा को उन्होंने बचाए रखा है। वे लिखती हैं–

सम्बन्धों के ताने–बाने की
उलझी लटो में
अनसुलझा सा कोई अरमान
बुनती रही हूँ मै..

जीवन के संघर्ष, रिश्तों की आपसी टकराहट, इन सब के कारण एक निराशा का वातावरण.. किन्तु आरती जी भौतिक संसार के इस कड़वे यथार्थ को सहज स्वीकार कर, अपनी सृजनशीलता को निरंतरता प्रदान करती हैं।

अपनी आत्मकथा के कोरे पन्नों में
अपनी कहानी के शब्द
पिरोती रही हूँ मै..

आप के काव्य संग्रह 'प्रीत बसेरा' में एक अद्भुत दिव्य सृजन है, जो आरती जी को हिन्दी साहित्य के छायावाद के महान रचनाकारों के समकक्ष खड़ा करता है। हो सकता है, आपको मेरा मत अतिशयोक्तिपूर्ण लगे, किन्तु जब आप इस रचना को पढ़ेंगे तो आप मुझ से सहमत हो जाएँगे। भाषा का सौंदर्य, कल्पना की श्रेष्ठता, सब कुछ अद्भुत है।

इस कविता का शीर्षक है 'पागल प्रेमी'। इतनी सुन्दर कविता का शीर्षक इस से बेहतर हो सकता था, किन्तु ये आरती जी का अधिकार क्षेत्र है। वैसे भी विलियम शेक्सपियर ने कहा ही है What's in the name\ That which we call a rose by any other name would smell as sweet-ß यह कविता उनकी श्रेष्ठतम कविताओं में से एक है। मैंने कुल पाँच बार पढ़ी। तब स्वयं को इस योग्य अनुभूत किया इस कविता पर कुछ लिखूँ। ये राष्ट्रकवि की 'पुष्प की अभिलाषा' सी सीधी सरल अभिलाषा नहीं है। एक अल्हड़, शोर मचाती, अपने सौंदर्य पर इठलाती नदी है, और उसका अनन्य प्रेमी एक पत्थर, जो उस से विलग नहीं है, उसका ही सहयात्री है, यहाँ हम प्रेम को उसके उच्चतम शिखर पर अनुभूत करते हैं। प्रेमी पाषाण, जो अनन्य प्रेमी है, उसका आत्मकथ्य..

एकमार्गी प्रीत का राही,
समर्पण ही प्रत्युत्तर,
तू इठलाती वैतरणी,
मैं क्षुद्र प्राण नव प्रस्तर

वह अपनी प्रियतमा नदी से विलग नहीं है, उस में ही समाहित है। शिव सती में, सती शिव में कुछ भी अलग नहीं, मुझे तो उसके साथ ही बहना है। आरती जी ने लिखा...

आनंदमगन मन बहा चला,
प्रियतमा ले जाए जहाँ
अविरल अनवरत प्रवाहित,
अपूर्व रीत से वहाँ वहाँ..

इस साथ अविरल बहते–बहते, अनेक आघात सहे हैं किन्तु इनसे ही तो मेरा सुन्दर स्वरूप बना। नियति ने मुझे किनारे ला पटका, मेरा तो अस्तित्व ही तुम हो, मेरे होने का अर्थ ही तुम्हारा सान्निध्य है। तुम्हारा अनन्य प्रेम ही मेरी मुक्ति का कारण है। तुम ही मेरा अस्तित्व, तुम ही तुम और कुछ नहीं, यहाँ प्रेम संपूर्णता पाता है।

माना तेरे उपकार बहुत है,
कृतज्ञ सदा गुण गाऊँगा
अनन्य प्रेमी सिंधु जल में,
यदि अंत समाधि पाउँगा...
यहीं प्रेमी की सदगति है,
उसका मोक्ष है।

आरती जी के इस संग्रह की एक और रचना, जो आप के अंतर्मन को सुवासित करेगी, शीर्षक है– 'एक तेरे जाने के बाद' बड़ी अद्भुत रचना है। प्रत्येक के जीवन कोई बहुत विशेष होता है, उसका स्थ.ान इतना विशेष होता है कि उसका विकल्प संभव नहीं। किसी प्रियतम के लिए प्रियतमा का हो सकता है, किसी माँ का उसके बेटे के लिए हो सकता है। प्रेम गली अति संकरी आरती जी लिखती हैं–

वह तेरा मधुरिम अहसास
महकता सदैव आस–पास..

किन्तु वियोग की पीड़ा सहन करना दुष्कर है। वे आगे लिखती हैं–

बस एक तेरे जाने के बाद
हृदय लगा असीम आघात
मुक्ति अभिलाषा मोह–माया से
अब दुस्सह हुआ यह व्याघात..

निश्चित ही एक सार्थक रचना है। अंतर्मन को प्रकट करती कविताओं की तलाश में उनके तृतीय काव्य संग्रह 'षडगंधा' के पृष्ठ पलटते हैं। हमारी तलाश पूर्ण होती है 'प्रियतमा की आकांक्षा' में...। जैसा कि शीर्षक है, प्रियतमा अपने प्रिय से क्या कामना करती है, आरती जी के नारी हृदय से झरते शब्द पुष्प, इसे कुछ इस तरह बयाँ करते हैं..

अधरों से अंतर्मन को छू कर,
प्रेम प्रवाह पावन करना
प्रणय स्पंदन की झड़ी झर
आंदोलित नव सावन करना..

नारी का प्रणय निवेदन, उस के हृदय के भाव, पुरुष से सर्वथा भिन्न होते हैं। पुरुष के लिए स्त्री सौंदर्य का प्रतिमान है, उसी की देह से वह स्वयं उत्पन्न हुआ। उसके प्रति उसका तीव्र आकर्षण प्रकृतिजन्य है, उस के चिर स्वभाव में है, किन्तु नारी की अभिलाषा उस के प्रेम की प्राथमिकता, उस के हृदय से निकले भाव हैं, तन बाद में आता है। आरती जी की इस कविता में भी हमें चिर नारी स्वाभाव के दर्शन होते हैं।

समर्पित रह कर रात दिन,
मै घटकर भी परिपूर्ण हुई
तन जर्जर से अनुराग
निभा लो तो मैं सम्पूर्ण हुई..

बहुत ही सुन्दर अभिव्यक्ति..., उनकी अलंकृत भाषा, श्रेष्ठ शब्द विन्यास उनके विदुषी होने का प्रमाण हैं। कहीं कुछ कमतर नहीं, सब कुछ हिन्दी काव्य के छायावाद के स्वर्णिम युग के आदर्शवाद के अनुकूल, मानो महीयसी महादेवी की कोई प्रवीण शिष्या ने कलम थामी हो...

इसी क्रम में इन तीन काव्य संग्रह की ये रचनाएँ 'यूँ बनती है कविता', ' प्रकृति के स्वर', 'मौन', 'शक', 'यादें', 'विश्वास', 'पाती प्रेम की', 'अहसास', 'ओस', 'सजल : प्रीत के साए', भी आरती के अंतर्मन को प्रगट करती हैं।

उनकी कविताओं में नारी स्वाभिमान की, उसके प्रति हुए अन्याय के लिए शब्द हैं, भाव हैं। सत्य सनातन धर्म से उनका गहरा लगाव भी है, जैसे वे स्त्री के त्याग को शब्द दे रही हैं। उनकी एक महत्वपूर्ण रचना है 'कौन हो तुम माण्डवी'। रामायण में माण्डवी व उर्मिला, दो ऐसे पात्र है, जिनकी त्याग तपस्या को महत्व नहीं मिला। आरती जी ने रामायण के इस अद्भुत चरित्र को, उसके असीम त्याग को शब्द प्रदान कर नारी के उच्च चरित्र व त्याग का सम्मान किया है। वे माण्डवी के लिए लिखती हैं–

परिणय–बंधित मधुमास नहीं
प्रियतम प्रणय–विलास नहीं
निर्जीव निष्प्राण श्वास नहीं
नियति कटु विकास माण्डवी?

एक योगिनी का जीवन व्यतीत किया माण्डवी ने, किन्तु स्त्री के त्याग को समाज ने कब महत्व दिया? श्री राम, लक्ष्मण और भरत पुरुष होने के कारण त्याग की मूर्ति कहलाए किन्तु माण्डवी का त्याग भुला दिया गया। वे आगे लिखती हैं–

द्वापर युग हो या हो त्रेता
राम–लक्ष्मण पुरुष विजेता
स्मरण सुयश भरत प्रणेता
उस योगी निवेदित प्रभा माण्डावी?

नारी जीवन के यथार्थ को आरती जी ने अपनी कविता 'नूतन' में परिभाषित किया है। ऐसी मान्यता है स्त्री में सहनशीलता पुरुषों से सौ गुना होती है। स्त्री के जीवन में सब कुछ उस के मन का नहीं होता। उस के स्वप्न टूटते हैं, पर वह हारती नहीं। फिर नए स्वप्न देखती है और उन्हें पूर्ण करने जुट जाती है। वे लिखती हैं–

मैं नारी हूँ, नित्य प्रति,
मन के बिखरे टुकड़ों को
समेट सहेज के पुनः जोड़ कर
फिर नवीन रूप में ढाला करती हूँ

स्त्री विमर्श में वे एक कदम और आगे बढ़ती हैं। यहाँ एक तरह का विद्रोही तेवर है, शब्दों में पुरुष सत्ता को दी गयी सीधी चुनौती है। कविता का शीर्षक है 'अभिनय'

कब तक करना होगा अभिनय
मुझे स्त्री संस्कारी का..

इसी तरह नारी को परिभाषित करती कविता 'नारी.. ज्योति या ज्वाला', 'चित्र वाली स्त्री' भी पठनीय है। आरती जी के विद्रोह में, नारी सम्मान की कामना है किन्तु वामपंथी कटुता नहीं है। जो कुछ है हमारा अपना है, यदि कमी है, कुछ गलत है तो उसे सुधारना है, नष्ट नहीं करना है क्योंकि उनके इस चिंतन का आधार है, सनातन से उनका अतिशय प्रेम.।

उनके काव्य संग्रह 'षड्गंधा' में 'सर्वव्यापी कृष्ण', 'हिन्दी कवियों के प्रिय राम', 'रावण का शिव तांडव स्तोत्र', 'राधा और ध्यान–योग' इसके साक्षात् प्रमाण हैं। यदि हम उनके शिव तांडव स्तोत्र के हिन्दी काव्य अनुवाद का उल्लेख न करें तो निश्चित ही ये आरती जी के साथ अन्याय होगा। अद्भुत, अति सुन्दर, कालजयी...। महापंडित रावण के शिव तांडव का हिन्दी काव्य अनुवाद उतना ही मधुर व आनंद देने वाला है जितना कि मूल है। भाषा का सौंदर्य ऐसा कि पढ़ते–पढ़ते मन नृत्य करने लगता है। यह कार्य कोई साधक ही कर सकता है। आरती जी ने इसे संस्कृत से, हम जैसे संस्कृत की समझ नहीं रखने वालों के लिए इसे हिन्दी में पुनः लिखा है, वंदनीय कार्य ...।

कदम्ब पुष्प गुच्छ से,
मधु मधुर सुगंध से
चहुँ ओर मधुमक्षी डोले
आकर्षित मकरंद से।
मृदंग लय ढिमिड ढिमिड
करते तांडव नृत्य है,
मस्तक अग्नि नभ फैला
बने गरिमा का वृत्त है।

इसमें वही ध्वनि सौंदर्य है जो मूल पाठ में है। पाठक को मूल तांडव स्तोत्र पढ़ने का आनंद मिलता है। यह अनुवाद अभिनंदन के योग्य है।

शाश्वत शिव देवता ,
सदाशिव पूजा करें
सम्राट –प्रजा, तृण–अरविन्द,
भाव न दूजा करें।

यह निश्चित ही आरती जी का वंदनीय कार्य है। इसी सनातन के गौरव गान में यदि हम उनकी रचना 'सर्वव्यापी कृष्ण' का उल्लेख न करें तो हमारा यह समीक्षा का प्रयास अधूरा माना जाएगा। अद्भुत कविता है, लय है, कृष्ण के सम्पूर्ण जीवन को, उनके अवतार को, उनके देवत्व को बड़ी ही खूबसूरती से शब्दों की माला में पिरोया है, बहुत ही सार्थक कविता..

.
मीरा में तुम, राधामय तुम,
षोडश कला का काव्य तुम्ही हो।

हिन्दी और हिंदुस्तान से अतिशय लगाव भी हमें उनके रचना संसार में दिखाई देता है। कविता 'मेरा भारतवर्ष', 'तुमको नमन माँ भारती', 'हिन्द का गौरव हिन्दी', 'तेरे देश में', 'वतन से दूर', 'हमारी हिन्दी' इस के साक्षात् उदाहरण हैं। 'मेरे हिस्से के पाँव', 'यादों की गठरी' में उन्होंने अपने स्वर्णिम बचपन की सुखद स्मृतियों को बड़ी ही खूबसूरती से संजोया है। अपने पापा को याद कर बहुत भावुक हो जाती हैं, बस अश्रु जल, नेत्र की मर्यादा तोड़ बाहर निकल पड़ेंगे...

मेले सब जाए पैयाँ–पैयाँ
पापा के कंधे मेरा आसन,
इतराता बचपन सलोना
रहूँ ठाठ से अटरी मेरी।

पापा –दादा के कंधे पर बैठने का सौभाग्य जिनको भी मिला, उनका बचपन धन्य हुआ। सच में आरती जी!

यही मेरी जीवन पूंजी
मृत्यु पार जाएगी
यात्रा में साथ निभाएगी..
(मेरी कविता 'अनंत यात्रा' से)

जब किसी खदान से कोई रत्न निकलता है तो वह सामान्य पत्थर जैसा ही होता है। जौहरी उसे अपने हुनर से, तराशता है। आरती जी की प्रतिभा ईश्वर प्रदत्त है। उन्होंने अपनी साधना से, निरंतर ज्ञान अर्जन से, इसे उत्कृष्ट बना दिया। आपकी संस्कृतनिष्ठ भाषा, अलंकार के सुन्दर प्रयोग, भाषा पर गहरी पकड़, उनके समकालीन रचनाकारों में दुर्लभ है।

डॉ. आरती 'लोकेश' हमारी वैदिक ऋषि परम्परा की संवाहक हैं जहाँ स्त्री गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, अरुंधति बन ऋचाओं की रचना करती है, वैदिक ज्ञान–कर्मकांड में ऋषियों से शास्त्रार्थ करती है। आरती जी इसी परम्परा से आती हैं इसलिए उनका लिखा बहुत कुछ कालजयी होगा, हिन्दी को समृद्ध करेगा।

❑❑

विजया माउंटेनियर
उत्तराखंड

शहीद की मां

कश्मीर से आऊंगा मैं
तिरंगे में लिपटकर ,
संभाल लेना मां
तू सबको अपने
आंचल में समेटकर
आंसू किसी का
गिर ना पाए
एक भी जमीन में ,
सहारा देना तू सबको
अपनी गोद में ।
अपने वतन के
प्रेम की आग
कभी बुझ ना पाए
किसी के भी दिल से
ऐंसी कुछ अनोखी आंच
देना मा तू सबको
अपने आंचल से ।
मां तेरी गोद छोड़ मैं आज
भारत मां की गोद में
सो रहा हूं सदा के लिए
खुश हूं बहुत कि आज
तेरा बेटा काम आया
अपने वतन के
मां काम आया
अपने वतन के ।

❑❑

दिव्या माथुर
यू के

फुर्सत

मैंने अपनी मौत की
पूरी तैयारी कर ली है
शोक सभा से लेकर
मृत्यु भोज तक की
संगीत आवश्यक है
'ॐ त्र्यम्बक यजा महे'
बिना यह सोचे कि मेरी इच्छाओं
को कोई भी घास डालेगा
सुना है कि मृत्यु के तेरह दिनों तक
मृतक सब देख पाते हैं
धरती पर कौन क्या कर रहा है
उनकी किसी को याद भी है
किंतु आजकल
किसी को फुर्सत ही कहाँ है
फेसबुक/व्हाट्सएप पर
ओम शांति शांति की ईमोजीज लगा
जल्दी से जल्दी क्रियाकर्म निपटा
घर दफ्तर का रुख करते हैं
किंतु अपनी तरफ से मैंने
पूरी तैयारी कर ली है
न याद किये जाने पर भी
उस जहां में भी मस्त–व्यस्त रहने
की
आज मरे कल दूसरा दिन।

❑❑

अनिल सुरेश मिश्र
(मुंबई)

तजुर्बा

यहाँ हर मोड पर तजुर्बे हैं
तजुर्बा है नही कैसे तजुर्बे पालूँ मैं।
मुझे तो इतना तजुर्बा भी नही कि अपनी गजल
तजुर्बे वालो की महफिल में आज गा लूँ मैं।।

मुझे खुशियाँ का एक आशियां बनाना है
तजुर्बे वाले तो बस गम की बात करते हैं।
मैने उनको भी बड़ा दर्द से बोझिल पाया
जिनकी खुशियों से अपने दर्द को संभालू मैं।।

बड़े तजुर्बो से बस एक तजुर्बा सीखा है
कोई अपने से ना आगे किसी को जाने दे।
यहाँ तो महज बस एक ही तजुर्बा काफी है
कैसे गर्दिश में अपनी आन को बचा लूँ मैं।।

जिन्दगी सिर्फ तजुर्बों का कोई खेल नही
यहाँ तकदीर ही शह–मात की निर्णायक है।
कभी तो अपनी भी बाजी जरूर पलटेगी
इसी उम्मीद में हर शिक्के को उछालू मैं।।

❑❑

आराध्या सागर
आयु दस वर्ष /कक्षा पाँचवी
स्कूल-के.आर.मंगलम वर्ल्ड
स्कूल, पानीपत (हरियाणा)

ध्रुव मेहरा
वात्सल्य

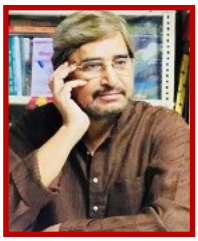

डॉ हरीश नवल
नई दिल्ली

आटे में से गिरती कार

आह! कार के बिना दुनिया कितनी बेकार है, यह हमें कई बरसों से पता है। पहले हम बस में जाते थे अतः बेबस नहीं थे किंतु जबसे अपने पास टूव्हीलर है तब से हम केवल बेबस भी हैं। टूव्हीलर भी क्या है समझो पिछली दशाब्दी का कोई ऐसा दीपक है जो जल जो रहा है किंतु रौशनी नहीं कर पा रहा। छह महीने जब महीने में छठी बार बीच मंझधार में पतवार खड़ी करके रुक गया और भरी रिंग रोड में एक घोर शहरी बस उसे छेड़ गई तबसे तिरछा देखने लगा है। मजबूरी है कि उसे चलाना पड़ता है पर तिरछा होकर योगिक मुद्रा बनानी होती है। उस रात घर लौट कर जब अखबार रद्दी के लिए रख रहा था हठात् उसमें से एक विज्ञापित पुर्जा निकला। उत्सुकता वश देखा, जिज्ञासा वश पढ़ा और बस उसके वशीभूत होने को मजबूर होना पड़ा। वाह! क्या बात थी आटे की थैली खरीदो और उसमें पाए गए कूपनों के आधार पर इनाम में नए मॉडल की एक नई कार पाओ। कार के अलावा टी वी, ए सी, स्कूटर वगैरह अन्य कई इनामात भी थे पर मा बदौलत को गुरु जी का एक सिद्ध ांत याद आ गया कि लक्ष्य ऊँचा रखो। हमने कागज के पुर्जे को ऊँचा करके बत्ती के पास चश्मे में से पढ़ा, चमचम. ाती मदमाती इठलाती कार के मुस्कराते चित्र को देखा और उसे प्राप्त करने का निश्चय दृढ़ कर लिया।

उस रात ब्लैक एण्ड व्हाइट के स्थान पर रंगीन सपने आए और उस मॉडल कार को कई रंगों में देखा। सपने में भी ध्यान रहा कि इसे पाकर ही दम लेना है गुरु जी ने कहा था, अवसर बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, कभी उसे छोड़ना नहीं चाहिए। हमने 'मत चूको चौहान' थ्योरी को अगली सुबह से अमली जामा पहनाना शुरू किया।

अभी तक अम्मा जी की अनुकंपा से घर में खारी बावली के बड़े बाजार से ढूंढ कर गेहूँ लाए जाते थे, घर में उनकी धुलाई कर आँगन में सुखाया जाता था। उस सुबह देखा, अभी ड्रम दो–तिहाई भरा था। यह लक्ष्य प्राप्ति में राह का रोड़ा था अतः चुपचाप हमने उसे उठा कर पार्क में बैठी तीन गऊ माताएँ और एक पिता को अर्पित कर दिया। उनकी आँखों की चमक ने कार की चमक की याद दिला दी थी।

ड्रम को हमने एक घंटे बाद पुनः आटे से भरा जरूर परंतु वह थैली का आटा था जिसमें हमारी कार, हमारी सांस, हमारी आस, हमारा सिद्धांत, हमारा व्यवहार सब अटके हुए थे। थैली ड्रम में लुढ़काते हुए हमारी दृष्टि कूपन की तलाश में वैसी ही हो गई जैसे केवल साढे पाँच हजार साल पहले मछली को बेध ाने को तत्पर अर्जुन की हुई थी .... रंग बिरंगा कूपन थैली से निकल कर ड्रम में कुदान भर रहा था कि उसे पकड़ने की तत्परता में कब हमारे हाथ से थैली छूटी पता ही नहीं चला। ड्रम में आटा, आटे में कूपन और फिर कूपन के ऊपर गिरता आटा। कूपन तो अंततः मिल गया पर रसोई में आटा ही आटा हो गया तब भी हमें कोई घाटा नहीं लग रहा था। आटे को टाटा करके कूपन को झाड़ कर दृष्टि बाँध कर परखा। कार के नाम के पहले तीन अक्षर दि खाई दे गए। हम खुशी से आर्किमिदीज की तरह क्या चिल्लाए कि पूरा घर छोटी सी रसोई में भर गया। पत्नी उत्तेजना में, अम्मा आकांक्षा से और गुड़िया और मुन्नू आश्चर्य से वहाँ पहुँच गए थे। रसोई में बिखरे आटे को देख पत्नी बिफर गई, अम्मा कूपन की बात सुन लालसा से आशीर्वाद बरसाने लगी। गुड़िया कूपन को देखने लगी और मुन्नु मियाँ पता नहीं क्यों रोने लगे ...

.... अब चाहत थी कि कार के नाम के शेष अक्षर शीघ्र मिल जाएं ताकि कार को फौरन हासिल किया जाए पर चावल पसंद परिवार में दस किलो आटा खर्च होने में कम से कम तीन सप्ताह तो लगने थे और दिन थे कि खतम ही नहीं हो रहे थे। हमने सोचा कि क्यों ना कार ड्राइविंग ही सीख ली जाए, इतने ही दिन में ट्रेनिंग हो जाएगी ताकि कार मिलते ही सेवा आरंभ कर सके।

कार सीखने के लिए फीस भी कार सी भारी लगी पर कोई बात नहीं कार तो मुफ्त में मिल रही थी। यह सोचकर दिल पर एक और नया पत्थर रख लिया। झटका तो जोर का था पर धीरे से सह लिया।

दूसरी थैली आई, पिछली कार्यवाही दोहराई गई किंतु पत्नी की उपस्थिति में उनके निर्देशन पर। रंग–बिरंगा कूपन छलछलाता हाथ लगा – इस पर किसी टेलीविजन के नाम के पहले तीन अक्षर थे। एक आह सी उठी – टेलीविजन तो घर में दो थे। व्यर्थही पिछली दीवाली पर एक टी वी कम्पनी के 'एक बड़े टी वी के साथ एक छोटा टी वी' स्कीम में प्राविडेंट फण्ड में से पैसा उधार निकलवा कर खरीद लिए थे। अब टी वी यूँ ही आटे की थैली में मिल जाता। अपने पूर्व निर्धारित लक्ष्य का ध्यान कर कूपन मुन्नु को खेलने के लिए दे दिया।

फिर पता चला कि लक्ष्य साधने की स्पीड़ बढ़ाई जा सकती है। पाँच किलो की थैलीमें भी कपून निकलता है। अतः क्यों न दो छोटी थैलियां खरीदी जाएं। दो थैलियां तो खरीद लीं परंतु पचास रुपए अधिक देने पड़े। अम्मा ने आशीर्वाद के साथ इस बार तसल्ली दी कि कार के आगे हजारों पचास के नोट भी क्या हैं? कार प्राप्ति के लिए उनकी तपस्या बहुत घनीभूत हो गई थी। वे प्रातः साढे चार बजे उठ कर ईश प्रार्थना करने लगी थीं। हमारे बेड टी पीने के समय वे छोटे टी वी में बाबा. ओं और महाराजो से ही साक्षात्कार

करतीं, माला जपते हुए भी राम के साथ कार की स्मृति भी करतीं, कह सकते हैं उनका राममय जीवन कार मय केवल हमारे लिए हो गया था।

गुड़िया स्कूल से लौटती ही पूछती, ''नई थैली लाए?'' ''क्या निकला?'' ''कार आ रही है?'' आदि आदि। मुन्नु मियां छोटे हैं पर सुभान अल्लाह हैं। उन्होंने गली के सब लड़कों पर रौब गाँठ दिया था कि उनकी कार आ रही है। पत्नी का साथ भी काफी रहा इस दौर में। उन्होंने बाकायदा एक रजिस्टर बना लिया और उस पर कूपनों के नम्बर और अक्षर अंकित करने लगीं। इनामी योजना का पूरा खुलासा उन्होंने फाईल बना कर रख लिया। अपनी अलमारी का एक दराज उन्होंने कूपनों के लिए खाली कर लिया था, उसमें हर दसवें–बारहवें दिन आने वाली आटे की थैलियों से गिरने वाले कूपनों को वर्गीकृत करके रख दिया गया था। धीरे–धीरे कार के साथ साथ अन्य पुरस्कार यथा स्कूटर, ऑवन, घड़ी, इलेक्ट्रिक तन्दूर आदि सबके खाने बना लिए गएथे। पत्नी को केवल कार से ही मोह नहीं था, वे उदारवादी हैं अतः उन्हें बाकी पुरस्कार ग्रहण करने में कोई ऐतराज नहीं था। उनके अनुसार जब ईश्वर उन्हें सभी कुछ देना चाहता है तो फिर क्यों न उनकी अभिलाषा की जाए।

चार माह के बाद किसी ने सलाह दी कि एक ही बाजार से थैली क्यों लेते हैं। कम्पनी ने हर इलाके में अलग–अलग कूपन दिए हैं अतः थैली और जगहों से भी खरीदी जाएं। अतः उसके बाद हर नई थैली एक नए बाजार से खरीदी जाने लगी। शहर के कितने ही बाजार ऐसे थे जिनके लिए हम खोजी बने। अधिक थैलियां जुटाने की योजना के तहत् चावल का निषेध किया गया। डबल रोटी की सेवाएँ हटा दी गईं।नाश्ते में बड़े बड़े पराठें, और संध्या को पूरी कचौड़ी अनुष्ठान भी किए जाने लगे।

थैलियों के आटे और संभवतः भोजन के अतिरेक से अम्मा जी के जीवन में अनेक व्यतिरेक आने लगे। अक्सर गुड़िया बाजार जाकर उनके पेट दर्द निवारण की गोलियाँ लाती। 'कार ला ला' के सत्कर्म से हम 'लाला' और पत्नी 'लालाइन' से दिखने लगे। कपड़े तंग होने लगे, नए खुले कपड़े सिलवाना पड़े। आटे की थैलियों के अतिरिक्त बोझ का असर घर के बिजली, पानी के बिलों पर भी पड़ेगा यह सोचा नहीं था। बिलों से हम बिलबिलाने लगे पर निराशा के हाथों अपने को गिरवी नहीं रखा।

कार सीखने के बाद हर रात हम सपने में अपनी ईनामी कार को शहर की सड़कों पर बेतहाशा दौड़ाते। हमें अब डर किस का था। चाँदी के जूतों ने हमें पक्का लाईसेंस जो दिलवा दिया था। दिन में हम कई बार अपने लाईसेंस को देखते, उस पर अंकित अपनी गर्वित मुखाकृति को निहारते और कभी कभी ट्रैफिक के सिगनलों के अनुसार पैदल होने के बावजूद भी सड़क पर चलते क्योंकि अहसास रहता था कि हम अपनी कार खुद चला रहे हैं।

धीरे धीरे चौराहों, कार पार्किंगों और बाजारों में हमने अपने जैसे अन्य दीवानों को पहचानना आरंभ कर दिया। हम किसी भी व्यक्ति को देखकर बता देते कि यह थैली की कार का मुरीद है अथवा नहीं। पीला पड़ता चेहरा, अनगढ़ फूलता पेट, आँखों में तैरती कार और चमकती आँखें, हाथ में थामी पर्चियों पर लिखे अक्षरों तथा अंकों को बार बार निहारने की आदत, ऋणदाता बैंकों और एजेंसियों के आगे लगातार खड़े होना, कभी हंसना, कभी मुस्कराना और कभी कभी रोने की अदाओं से हम अपने डुप्लीकेटों को पहचानने की कला में माहिर होते गए।

कल स्कीम खतम हो गई है। छह माह की कठिन परीक्षाओं का रिजल्ट 'शून्य' आया है। दूर दूर तक के हमारे जानकारों, रिश्तेदारों और मित्रों में कोई भी माई का लाल, इतना भाग्यवान नहीं निकला कि उसे पुरस्कार मिलता। देखते के देखते वर्ष बीत गया पर आटे की थैली में से कार निकलती देखने वाले रीत गए।

सुना है भारे मुनाफे की वजह से लॉटरी, आटे वालों की ही खुली है। सुना है उनके हर पार्टनर के परिवार के हर सदस्य को एक एक कार ही नहीं शेष सभी इनामी वस्तुएँ भी मिली हैं अलबत्ता हमारा आटा कंगाली में और गीला हो गया है।

❑❑

प्रथम एन.
कक्षा–7 / 13 साल.
श्री विवेक बालोध्यान पब्लिक स्कूल,
मैसूर

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज
बोधगया

किस्मत को सुंदर बनाने का तरीका

किस्मत एक ऐसी न दिखाई देने वाली शक्ति है, जो जीवन भर अपना चमत्कार दुःख सुख के रुप में लागातार दिखाते रहती है। किस्मत जो देना चाहती है, वही सामने लाकर खड़ी कर देती है। इसके प्रभाव से कोई बच नहीं पाता है और कई बार तो यह ऐसा कर देती है कि जो हमें पसंद नहीं है, उसे ही सामने ला देती है और बाद में पता चलता है कि यही हमारे लिये सबसे अच्छा रहा। किस्मत बड़ी रहस्यमय है। जब किसी की किस्मत को सुंदर और मजबूत बनाना हो तो उस व्यक्ति के लिए हमलोग यह काम करते हैं –

1. उस व्यक्ति की आकृति को ध्यान में लाते हैं।

2. किस्मत एक सूक्ष्म शक्ति रुप है और उस व्यक्ति के चारो ओर उपस्थित इस सूक्ष्म शक्ति का ध्यान करते हैं।

3. उस व्यक्ति के भले के लिये या उसकी कामना पूर्ति के लिये किस्मत के विस्तृत रुप में से उन शक्तियों का आह्वान करते हैं, जो उनकी मदद कर सके।

4. उस व्यक्ति के पूर्व जन्मों के कर्मों और विचारों के लिये परमपिता से बड़ी माफी मांगनी होती है।

5. उस व्यक्ति की जैसी भी हैसियत है, उसके अनुसार कुछ लेना होता है।

6. एक प्रसन्नता पूर्ण बनाये रखना पड़ता है।

7. सम्बंधों यानी रिश्तों की मिठास बनाये रखनी पड़ती है ताकि प्रयासों से बनाई स्थितियों में परिवर्तन कम से कम हो।

8. ग्रहों के परिवर्तन पर भी ध्यान देना पड़ता है।

9. दूसरे पक्ष से यदि उपेक्षा शुरु होने लगती है तो इधर से ऊर्जा भी कमने लगती है, जिससे आक. स्मिक घटनायें हो सकती हैं। इस प्रकार किसी की किस्मत को सुंदर और शानदार बनाया जा सकता है।

❑❑

अभिषेक त्रिपाठी
(बेलफास्ट)

बैठा है

एक समंदर उदास बैठा है
नीर की प्यास ले के बैठा है
अपनी खारी सी जिंदगानी में
मीत की आस ले के बैठा है

शमां के पास जा के बैठा है
अपनी हस्ती मिटा के बैठा है
एक परवाने का जुनूँ कहिए
प्यार में खुद को जला बैठा है

गीत कविता में और छंदों में
तुमको पाया है सभी रंगों में
आँधियों में भी जो परवान चढ़ें
प्रीति बसती है उन उमंगों में

चाह मेरी मचल के बैठी है
लेके आँखों को सजल बैठी है
होठ गुनते रहे सदा उसको
बनके मीठी सी गजल बैठी है !!

❑❑

रक्षिता एस गौड़ा
कक्षा–8 बी
मारिया निकेतन स्कूल मैसूर

कंचन सागर
वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर
प्रभारी पानीपत

लौट के बुद्ध घर को आए

पत्नी अपने पति के सफर की तैयारी करते हुए उसे हिदायतें दिए जा रही थी।ऐसे समझा रही थी जैसे पति पहली बार जा रहा था,

"अपने काम से थोड़ा समय निकाल कर, घर पर जरूर होकर आना। मम्मी का हालचाल पूछना और अगर रात रुकना ही पड़े तो घर पर ही ठहरना।"

"कोशिश करुंगा," कहते हुए वह मन ही मन हँस रहा था कि पगली तेरे मायके तेरी छोटी बहन बबिता से मिलने ही तो जा रहा हूँ। सरकारी काम का तो बहाना है, दफ्तर से तो छुट्टी लेकर आया हूँ। ड्रैसिंग–टेबल के आदमकद शीशे के सामने खड़े हो उसने एक बार फिर से स्वयं को निहारा। फिर मन ही मन कहा, 'बबिता, उम्र में तो मैं जरूर तुमसे सत्रह वर्ष बड़ा हूँ, पर देखने में तुम्हारा हमउम्र ही लगता हूँ।' अपने सिर पर चमक आए दो–तीन सफेद बालों को उसने बड़ी कोशिश के बाद पल्लकर से उखाड़ फेंका तथा बालों को फिर से संवारा। फिर चेहरे को रुमाल से पोंछता हुआ वह पत्नी के सामने जा खड़ा हुआ, "सुगन्धा, देखने में मैं सैंतीस का तो नहीं लगता।"

"इस सूट में तो तुम खूब जँच रहे हो। सैंतीस के तो क्या, मुझे तो पच्चीस के भी नहीं दिखते।" पत्नी ने प्यार भरी नजर से देखते हुए कहा तो वह पूरी तरह खिल उठा। रेलवे स्टेशन पर पहुंच कर उसने बुकस्टाल से एक पत्रिका खरीदी और गाड़ी में जा बैठा।

"भैया, जरा उधर होना।"

लगभग पचास वर्षीय एक औरत ने उससे कहा तो उसका मुख कसैला हो गया। गाड़ी चली तो उसने पत्रिका खोल कर पढ़ना चाहा,

(शेष भाग पृष्ट–55 पर)

डॉ जयशंकर शुक्ला
दिल्ली

ॐ तत् सत् : संकल्पना की नदी के भक्ति भाव जल से छान्दसिक भावांजलि

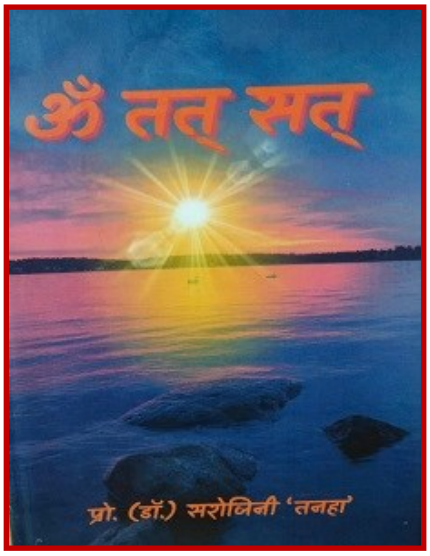

वांग्मय के अंतर्गत साहित्य की सुदीर्घ सृजनवादी परंपरा में शब्दों के माध्यम से अपनी उपस्थिति को अंकित कराते रहने वाले रचनाकारों में जो प्रमु ख नाम अभिलेखीय कार्यों के सृजनकर्ता के रूप में हमारे सामने आता है वह समष्टि में रहकर भी व्यष्टि का आभास देने वाली डॉक्टर सरोजिनी तन्हा का है। स्वयं की उर्वरा शक्ति एवं नैसर्गिक क्षमता से कविता में सिद्ध परंपरा एवं साधक परंपरा के मध्य एक सेतु के रूप में सतत सृजनशील रहने वाली कवयित्री के रूप में चर्चित नाम डॉक्टर सरो. जिनी जी का है। अपने लेखन के द्व ारा सामाजिक सरोकारों एवं प्रतिबद्ध ताओं का निर्माण कर स्वयं के अनुभूतियों को शाब्दिक व्यंजन के रूप में जो अंकित करते रहे हैं डॉ सरो. जिनी तन्हा उनमें से एक मानी जा सकती हैं।

वास्तव में डॉ सरोजिनी तन्हा सामाजिक ताने–बाने और मानवीय सरोकारों को अपनी लेखनी के माध्यम से आवाज देने वाली ऐसी कवयित्री हैं जिनकी रचनाएं पाठकों के मन मस्तिष्क को बहुत देर तक अपने आप से जोड़े रखने की सामर्थ्य रखती हैं। कवयित्री डॉ सरोजिनी तन्हा का काव्य रचना में एक विशिष्ट मुकाम रहा है। यह मुकाम उन्होंने एक लंबी और निरंतर आबाद गति से चलने वाली काव्य साधना के माध्यम से स्वयं अर्जित किया है। कोई भी रचनाकार अपने समय के सामाजिक ताने–बाने का शास्त्रीय परंपराओं एवं मानवीय प्रतिबद्धताओं के संदर्भ में सृजन करता है। परवर्ती काल में इसी सृजन के माध्यम से युगबोध का निरंतर गायन संभव हो पाता है।

डॉ सरोजिनी तन्हा काव्य में प्रतिबद्धता की हिमायती रही हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय सामाजिक परंपराओं को न केवल सुरि क्षत रखा अपितु उनके विविध आयामों को शाब्दिक रूपों से संचित करके र खने का कार्य भी किया है,जो डॉ सरो. जिनी तन्हा को साहित्य रचना के अनन्यतम रचनाकारों में शामिल र खेगा ऐसा मेरा प्रबल मत है। रचनाकार की दक्षता उसके सृजन के साथ–साथ उसके अवलोकन के प्रति उसकी निष्ठा की जवाब देही ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। जब मानवीय संवेदनाओं को जातीय अस्मिता के साथ जोड़कर देखा जाता है तो युग ध र्म सहज ही प्रकट होता है। यह एक रचनाकार की शाश्वत उपलब्धि मानी जा सकती है।

गीतकार गीतों को लिखता नहीं बल्कि गीत उसके मनोभाव से हार्दिक स्फुटन के उपरांत शब्द रूप से आकार लेने वाली एक ऐसी रचना होती है जो कवि के मनोभावों को जन सामान्य एवं उनके अपने जीवन लक्ष्य को पारिभाषित करने की ओर निरंतर प्रवाह शील रखता है । संग्रह रचनाकार की दक्षता के साथ–साथ उसके साधना को भी स्पष्ट रूप से हमारे सामने प्रदर्शित करती है। काव्य सृजन जड़ और चेतन के मध्य सामंजस्य बैठाने का एक अभूतपूर्व प्रक्रियागत प्रयत्न माना जा सकता है जिसके माध्यम से हम उनके अंतर संबंधों की व्याख्या करते हैं। व्याख्या और विवेचना का यह कम मानव समाज में आदिकाल से ही चला आ रहा है। और अनवरत चलता रहेगा कविता इसकी साक्षी मानी जा सकती है।

डॉक्टर सरोजिनी तन्हा द्वारा लि खित अथवा रचित नवीन काव्य संग्रह आध्यात्मिकता एवं भागवत चेतना के भाव से पूरी तरह संतृप्त है जिसे आपने **ॐ तत् सत्** नाम प्रदान किया है। **ॐ तत् सत्** का पठन किसी भी पाठक के लिए मात्र मंत्र वाचन नहीं है बल्कि उसके द्वारा शब्द गंगा का अभिवादन है यानी शब्द सलिला में अवगाहन करना माना जा सकता है। शब्द ब्रह्म कहा जाता है और इनके माध्यम से सृजन से उत्पन्न ले और लाल ब्रह्म नाथ की श्रेणी में गिना जाता है। कविता शब्दों के आप सी ताने–बाने के माध्यम से जटिल सामाजिक बंधनों के व्याख्यात्मक प्रतिकार को कहते हैं।

ॐ तत् सत् पुस्तक छंद बद्ध भावनाओं से संपृक्त विवरणात्मक शैली में रची गई है जिसमें कतिपय प्रसंग विश्लेषण परक भी हैं। पुस्तक में अवसर–अनुकूल पद्यात्मक बिंब की नवता उदाहरण अवबोधन हेतु

पुष्टिकारक हैं। भाषा की सहजता हर स्तर के पाठकों को आकर्षित करने में सतत समर्थ है। पुस्तक के आरम्भ में ही कवयित्री का स्वयं के बारे में ईश्वरी संचेतना के आलोक में संक्षिप्त जीवन उद्‌बोधन एवं रचना प्रक्रिया का परिचय विवेचन विधा का प्रतिनिधित्व करता है। रचना प्रक्रिया काव्य के दोनों पक्षों को अपने अंदर समय हुए आगे बढ़ती है यह दो पक्ष कविता के (टेक्स्ट एंड क्राफ्ट) कथ्य और रूप की स्थिति में हमारे सामने आते हैं।

उसके बाद की रचनाएं अपनी उपादेयता को लेकर विमर्श नामक विहंगावलोकन को पुस्तक में प्रविष्टि का आमंत्रण देता है। कवयित्री ने गीतों में नए प्रयोगों को पुरातन अवधारणाओं के आधार पर स्थापित करने का सफल यत्न किया है जिसमें वह पूरी तरह सफल सिद्ध हुई हैं। तन्हा जी की रचनाएँ मस्तिष्क से नहीं बल्कि मन से पढ़े जाने के योग्य है। कविता पढ़ी नहीं जाती अपितु कविता को जिया जाता है। ऐसे ही कविता लिखी नहीं जाती अपितु कविता योग्य व्यक्ति के मानस पटल पर ईश्वरीय वरदान से स्वयं प्रस्तुत होती है। इस तरह हम देखते हैं की कविता भौतिक जगत की लौकिक वस्तु नहीं है बल्कि यह आध्यात्मिक जगत की पारलौकिक अनुभूति की वस्तु है।

आरंभिक वाणी वंदना नान्दी "प्रस्तावना" और पुष्पिका के रूप में विनायक अर्चना के सामग्र रूप में आभार ज्ञापन से सुगठित यह पुस्तक मानवीय प्रवृत्तियों एवं संवेदनाओं के रहस्यानुभूति के साथ–साथ आत्मानुभूति एवं परम प्रभु के प्रति प्रेमानुभूति के विविध सोपान का विश्लेषण है। गीतों की प्रस्तावना में ईश्वर और ईश्वरीय शक्तियों के प्रति गूढ़ प्रेमानुभूति तथा सहज आत्मानुभूति को रचने के प्रति कवयित्री अपनी रचना प्रक्रिया में आंतरिक उहापोह का भी सहज शाब्दिक चित्रण प्राप्त होता है।

पुस्तक में कुल 42 गीतों को स्थान दिया गया है जो कथ्य, भाव, विचार एवं शिल्प में बहुविध होते हुए भी एक ही पारंपरिक अनुभूति का सूत्रपात करते हुए दिखाई पड़ते हैं। कवयित्री की रचना धर्मिता उसे अपने पूर्व की परंपराओं के साथ जोड़ते हुए आने वाली पीढ़ियों के प्रति भी सजग करती है। कृति की रचनाएँ वास्तव में अपने अंतः में धारा की तीव्रता लिए हुए मानवीय चेतना को झंकृत करने की सामर्थ्य से युक्त है। यह पुस्तक रचनाकार के सृजन संभावनाओं की प्रवणता की ओर संकेत करता है। यहां उथलापन नहीं है अपितु असीम गहराई है, जो काव्य में उतरने वाले को सहज ही अनुभव में आ सकती है।

पुस्तक की शुरुआत में पहली रचना "त्वदीयं वस्तु गोविंदम तुभ्यमेव समर्पयामि" को आधार मानकर समर्पण के रूप में प्रस्तुत की गई है, जो अपने आप में किसी भी तरह की लिप्सा, आकांक्षा, अथवा अभिलाषा से रचनाकार को अलग करती है। शब्द ब्रह्म के माध्यम से रचित कृति को ब्रह्म के लिए समर्पित कर रचनाकार ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। किसी प्रकार अंतिम गीत योग को समर्पित है। योग अर्थात जुड़ाव, योग अर्थात "योगः कर्मसु कौशलम्" का उद्‌घोष कर कवयित्री ने अपना मंतव्य प्रकट कर दिया है।

इस पुस्तक की रचनाएं भाव जगत की संवादात्मक उद्‌बोधन हैं इस कारण जगत के लिए। यहां पर कही गई बातें अपने अर्थ के लिए व्यक्ति से स्वयं में वह पात्रता विकसित करने का आग्रह भी करती है, जिनके माध्यम से वह उन शब्दों में छिपे हुए अर्थों को सामने ला सके और अपना जीवन धन्य कर सके। रचनाकार का मंतव्य सामान्य यश लिप्सा नहीं है अपितु पारलौकिक उत्कर्ष की आदमी अभिलाषा प्रतिद्वनित होती है।

पुस्तक की रचनाओं में छंदों का बहुत अधिक ध्यान रखा गया है। भर्ती के शब्दों से बचा गया है। मनोभाव जितने वाक्यों में अथवा पंक्तियों में अथवा अंतरों में पूरे हो जाते हैं कविता को वहीं पर संपूर्ण मान लिया गया है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि यह साधना अवस्था से उत्पन्न शब्दवार्तिकों का वह समूह है जो एक साधक को सिद्ध ावस्था से तुरीयावस्था तक ले जाता है। और रचनाकार इस कला में पूरी तरह निष्णात है। जिसका उन्होंने अप. नी इस पुस्तक में यत्र तत्र सर्वत्र दिग्दर्शन करने के लिए आधार प्रस्तुत किया है।

मंगलाचरण का ध्यान रखते हुए पुस्तक में सबसे पहले गणेश वंदना की गई है। और गणेश वंदना करने के उपरांत वाणी वंदना की प्रक्रिया को पूरा किया गया है। यह एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के कई गीत है जो पूरी तरह मौलिक एवं छांदस परंपरा से युक्त हैं। कई रचनाएं एकल अंतरे की है तो कई रचनाओं के कई अंतरों में विभक्त रूप को भी प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में कई बड़े कथा गीत भी है, जो नए खंडकाव्य एवं महाकाव्य की अवधारणा को संभावित बनाते हैं। यहां पर शंकराचार्य विरचित स्रोतों का काव्यगत अनुवाद है तो विशुद्ध मौलिक रूप से संस्कृत में लि खे हुए गीतों को भी कवयित्री ने प्रस्तुत किया है।

अखिल ब्रह्मांड नायक भगवान शिव को समर्पित गीतों की श्रृंखला को देखें तो ऐसे गीत मन को मोह लेने वाले हैं। गीतों में प्रयुक्त शब्दावलियों का उच्चारण हृदय में डमरू का नाद करते हैं और एक अलौकिक सुख की अवधारणा को सत्य सिद्ध करते हैं। इसी प्रकार महाविष्णु को प्रणाम करते हुए कवयित्री के रचनाओं में क्षीरसागर का अंतरनाद सुनाई पड़ता है। इसी प्रकार श्री कृष्णा पर केंद्रित गीतों में बांसुरी की ध्वनि चित्त को पूरी तरह आकर्षित कर मन को परमब्रह्म में लीन होने के लिए आमंत्रण देती हुई सी प्रतीत होती है। भगवान राम को

समर्पित गीतों की शृंखला तो हमें कवित्री के सगुण भक्ति शाखा के रामाश्रयी स्वरूप में दीक्षित विग्रह की भांति प्रतीति देती है।

डॉ सरोजिनी तन्हा सांसों में सरगम के सौंदर्य का सहज ही दिग्दर्शन करा देने वाले प्रेम पंचम पुरुषार्थ की कवयित्री हैं, जिन्होंने ईश्वर को अपने प्रेम का हेतु मन है। इस तरह से तन्हा जी मीरा की परंपरा में आती है। अनिर्वचनीय अनुभूति की दिव्यता का परत–दर–परत साक्षात्कार करना और फिर अपने बोध को बैखरी में उतारना एक साधना है, जो कि इस पुस्तक की रचनाओं में हमें सहज रूप से प्राप्त होती हैं।

गीत सृजन में अन्यान्य मानवीय एवं ईश्वरीय प्रवृत्तियों के माध्यम से वैखरी, पश्यन्ति, मध्यमा से आगे जाकर परा वाणी में प्रेम विषयक लिखना अर्थात घनघोर हलचल में आत्मिक दृढ़ता से स्थिर हो जाना है। इसी स्थिरता की अभिव्यक्ति है– ऊं तत्सत कृति। डॉ सरोजिनी तन्हा जी ने अपने सृजन हेतु प्रतीति के महासागर में गोते लगाते हुए स्वयं को कई बार अतीव लघुकाय महसूस किया है जो कि उनकी स्वयं के प्रति ईमानदारी की स्वीकृति है।

अनुभवगम्य समष्टिभाव को क्रमशः लिखना और लिखते चले जाना निःसन्देह दुर्लभ कार्य है। प्रसन्नता का विषय है कि आज भी हमारे मध्य में कबीर, सूर, तुलसी और मीरा जैसे महाकवियों की परंपरा को अपनी लेखनी से निरंतर जीवित रखने की चेष्टा से युक्त कवि हैं जो कि हमारे सुदीर्घ पारंपरिक छान्दसिक परिवेश में स्वयं को अपनी मान्यताओं के माध्यम से स्थापित रखने की कला में प्रवीण है।

कवयित्री भाषागत शास्त्र सम्मत परंपराओं के स्थापन में पूरी तरह से सफल रही है । वह नए नए शब्दों के माध्यम से सृजनरत रहते हुए भी पुरातन से अपने मोह को त्याग नहीं पाती यही उनकी अपने परंपरा के साथ चुनाव और सत्य के आग्रह के निर्वाह हेतु तत्पर रहना सिद्ध करता है। अपनी जड़ों के प्रति कवयित्री का झुकाव उसे उसकी श्रेष्ठ चेतना से जोड़ती है जो सृजन के लिए उसकी अधिष्ठात्री है।

ईश्वरीय प्रेमानुभूति की अजस्र धारा में वर्तनी के प्रति रचनाकार की सजगता स्पष्ट है। ईश्वर और ईश्वर की सृष्टि के प्रति प्रेम और प्रेमास्पद के लिए सृजन में त्रुटियां क्षम्य होती हैं लेकिन पुस्तक में त्रुटियाँ अपराध हैं क्योंकि पुस्तक पढ़कर अध्येता अनुगामी बनते हैं। और भरतमुनि भी ''हितं बुद्धिविवर्धनम्'' की उपस्थापना करते हैं।

मानव जीवन सृष्टि द्वारा प्रकृति को दिया हुआ सर्वोत्तम उपहार यह उपहार अपने जन्मदाता के प्रति सदैव ही रेडी रहता है और अपनी कृतज्ञता उसके प्रति निरंतर प्रदर्शित करता रहता है। ईश्वरीय प्रेम मानवीय समर्पण की चिरंतन परीक्षा है। यहाँ स्व का विलय करते हुए पूर्ण लय हो जाना ही सफलता है। इसी हवन में स्वाहा होते रहने में ही जिजीविषा बढ़ती है। स्थूल से अभिव्यक्त होकर भी प्रेम स्थूल–मुक्त है।

दुर्लभ प्रेमिल अनुभूतियों की यात्रा पाप–पुण्य के सतही संसार से ऊपर उठते हुए सत्यलोक तक पहुँच रही होती हैं। जीवन यात्रा में बहुत सारे उतार–चढ़ाव हमें लक्ष्य के नजदीक लाते हैं और कभी–कभी लक्ष्य से दूर भी ले जाते हैं। रचनाकार जब अपने मनोगत भावों को हमारे सामने रखती है तो उसे बेहद सावधानी पूर्वक इस पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है । बड़े ही हर्ष का विषय है कि डॉ सरोजिनी तन्हा इस बिंदु पर भी बेहद सजग एवं समर्पित रही हैं।

गीत साधन है, उस परम जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो मनुष्य मात्र के लिए परम आवश्यक है । जब हम स्वर, भाव, लय और ध्यान से पारलौकिक जीवन की समग्रता से एक रेखा में जुड़ते हैं तो निश्चित रूप से हम उस ईश्वर की आराधना कर रहे होते हैं। मानव के हृदय में स्फुटित मानवीय प्रेम जो कि परा सत्ता के साथ एकाकार होकर ईश्वरी प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। यही मानव को अपवर्ग तक पहुँचा देता है क्योंकि इसमें प वर्ग का अभाव हो जाता है। शास्त्रीय नियोजन एवं सतत उद्बोधन कवयित्री डॉ सरोजिनी तन्हा की रचनाओं में स्पष्ट रूप से अपनी भूमिका निर्धारित करती है। यहां कवयित्री की प्रतिबद्धता उसके निष्ठा से जुड़कर के एक नए विधान की रचना करती है।

प वर्ग मतलब प फ ब भ म। प से पाप, फ फलाकांक्षा, ब से बदनामी, भ से भय, म से मरण। इस प्रकार प्रेमिल उज्ज्वल–आभा में पाप, फलाकांक्षा, बदनामी, भय, मरण का पूर्णतया अभाव होता चला जाता है। यहीं अमरता है। यही ''सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम्'' है.....! जिस प्रकार नर्मदा नदी में पाए जाने वाला हर कंकड़ शंकर होता है उसी तरह से काव्य पुस्तक में उनकी रचनाएं भाव के स्तर पर सुदृढ़ एवं रचना के स्तर पर स्वतःसिद्ध हैं।

डॉ. सरोजिनी तन्हा की कविताओं में सहज बोधगम्यता उनकी अनुभूतियों को विचारानुभूति के साथ–साथ भावानुभूति एवं प्रेमानुभूति लिखने में अस्तित्व की अंतर्यात्रा मूर्त होती हुई प्रतीत होती है। भावों की धवल–धारा निर्बाध लिप्यान्तरित होकर अनुभूतियों को विजेता घोषित कर देती हैं। यह विजय रचनाकार की स्वयं सिद्ध साधना विजय मानी जा सकती है जिसके माध्यम से वह संसार में लोगों को चेतना से जुड़े रहकर के स्वयं को सिद्ध करने की प्रेरणा देती हुई दिखाई पड़ती है।

डॉ सरोजिनी तन्हा की रचनाएं मात्र भौतिक जगत को ही अपने शाब्दिक उद्बोधन में स्थापित करती हैं, ऐसा नहीं है अपितु वे सूक्ष्म शरीर के कोशत्रय मनोमय कोश – विज्ञानमय कोश – आनन्दमय कोश में व्याप्त भावसम्पदा अन्नमय–प्राणमय कोश का आश्रय लेकर रूपायित हो

पाठकों के हृदय पटल पर साकार रूप से अंकित हो जाती है, इस तरह से कवयित्री कला मनुष्य के लिए परिकल्पना को आधार लेते हुए जन मन के हृदय में भाव के प्रस्फुटन एवं उनके अध्ययन के लिए सक्रिय रूप से क्रियाशील दिखाई पड़ती हैं जिसके लिए मैं कवयित्री को संबोधित करते हुए बधाई देना चाहूंगा।

बाजारीकरण के दौर में साधना और सिद्धि केंद्रित रहस्य मयी ईश्वरीय प्रेमपरक यथार्थ चित्रण के लिए कवि डॉ सरोजिनी तन्हा को हार्दिक साधुवाद...! यह पुस्तक मानवीय प्रवृत्तियों, सरोकारों एवं संवेदनाओं की गझिन अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति हैं, जिसे शब्द–समुच्चय के स्तर पर "ऊं तत् सत्" शीर्षक से कवयित्री डॉ सरोजिनी तन्हा द्वारा अभिहित किया गया है । कवयित्री डॉ सरोजिनी तन्हा की यह रचना दीर्घकाल तक जनसामान्य के साथ–साथ साहित्य की विभिन्न विधाओं के मध्य अपनी उपस्थिति को बरकरार रखेगी ऐसा मेरा प्रबल मत है। मैं डॉ सरोजिनी तन्हा जी के गीतिमय उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ.....!

*पुस्तक – **ॐ तत् सत्***
रचनाकार– प्रो. (डॉ.) सरोजिनी 'तनहा'

❑❑

धृति वी. शाह
कक्षा–7 ,सटीसीएस

सम्पूर्ण विश्व को एक धागे में पिरोती हिंदी भाषा

कुलदीप बरतरिया, गाजियाबाद

अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक तथा आर्थिक मुद्दो की संवाहक तथा सम्पूर्ण विश्व के मन की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने का जो हुनर हिंदी भाषा में है। वो वास्तव में एक अनूठा उदाहरण है। आज वैश्विक पटल पर हिंदी स्वयं को एक संपर्क भाषा, प्रचार भाषा और राजभाषा के साथ–साथ वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करती जा रही है। विश्व के लगभग एक सौ चालीस देशों के लगभग पांच सौ केंद्रों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है, जहां न जाने कितने विद्वान अपना योगदान दे रहे हैं। कंप्यूटर, मोबाइल और आइ–पैड के कीबोर्ड पर हिंदी की पहुंच ने यह बात सिद्ध कर दी है कि आने वाले समय में हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर मान और बढ़ेगा।

आज विभिन्न देशों से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं ने भी हिंदी को वैश्विक पटल पर ले जाने में एक बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति (संयुक्त राज्य अमीरात), मॉरीशस हिंदी संस्थान, विश्व हिन्दी सचिवालय, हिंदी संगठन (मॉरीशस,) हिंदी सोसाइटी (सिंगापुर), हिंदी परिषद (नीदरलैंड) आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।हम सभी जानते हैं कि आज हिंदी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही है, जैसे एशिया के अधिकतर देशों चीन, श्रीलंका, कंबोडिया, लाओस, थाइलैंड, मलेशिया, जावा आदि में रामलीला के माध्यम से राम के चरित्र पर आधारित कथाओं का मंचन किया जाता है। हिंदी की रामकथाएं भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संवाहक बन चुकी हैं। विदेशी सिनेमाघरों में चल रही हिंदी फिल्मों के माध्यम से हिंदी की उपस्थिति बहुत अच्छे से समझी जा सकती है।

प्रत्येक देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है, जो उसका गौरव होती है तथा राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के स्थायित्व के लिए पूरे देश में उसका उपयोग होता है। इसी तरह देश की अपनी एक राजभाषा भी होती है, राजभाषा मतलब सरकारी कामकाज की भाषा और जिससे एक आम नागरिक भी सरकार के कामकाज को समझ सके। हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। किसी भी भाषा को राजभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य रचना, बनावट की दृष्टि से सरलता और वैज्ञानिकता, सब प्रकार के भावों को प्रकट करने की सामर्थ्य आदि गुण होने अनिवार्य होते हैं। यह सभी गुण हिंदी भाषा में हैं।

जिस देश में सभ्यता और संस्कृति का विकास, वेदों की महिमा, सांख्य पद्धति, योग, दार्शनिक प्रणाली, ग्रह नक्षत्रों की दूरी आदि जैसे विराट कार्य सदियों पहले ही कर दिए हो तो ऐसे भारतवर्ष की भाषा, मात्र एक भाषा ही नहीं अपितु एक गहरी भावना है। एक ऐसी भावना की धारा जिसमें सम्पूर्ण विश्व खुद को जोड़ने के लिए स्वयं आगे आ रहा है। भारतवासियों का हिन्दी के प्रति समर्पण और इसके विकास के प्रति कर्मनिष्ठता हमें गौरवान्वित करती है कि वैश्विक पटल पर हिंदी नजर आने लगी है।करोड़ों भारतवंशी और प्रवासी भारतीय विश्व के चालीस देशों में रहते हैं उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक स्थितियाँ निश्चित तौर पर परस्पर भिन्न हो सकती हैं, परन्तु भाषा और भावना एक ही है। आज हिंदी माँ के आँचल के समान है, जिससे प्रेम, साधना और सदभाव की प्रेरणा मिलती है।

❑❑

क्षमा कल्याण द्वारा व्यवहार दर्शन से मनोगत पवित्रता

डॉ. अजय शुक्ल (व्यवहार वैज्ञानिक)

" अन्तर्मन की पवित्रता को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने हेतु मानवीय संवेदनशीलता सर्वाधिक प्रखर एवं मुखर रूप से प्रेरणादायी भूमिका निभाती है जिसमें मानवनिष्ठ सरोकार के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ ही अन्तःकरण की पवित्र भावना का स्वरूप भाषायी शुचिता के द्वारा प्रतिबिम्बित होता है । जीवन में सुख. शाँति एवं आनंद के प्रकल्प की तलाश करते हुए व्यक्ति सैद्धान्तिक रूप से – ' रहिमन मीठे वचन से सुख उपजत चहुँ ओर...' तक पहुँच जाता है जहाँ उसे स्वयं की भावना पर कार्य करने का सुअवसर प्राप्त होते ही – '' जाकी रही भावना , जैसी , प्रभु मूरत देखी तिन तैसी...' का व्यावहारिक एवं निष्पक्ष व्याख्या अनुगमन हेतु प्राप्त हो जाती है हृदय की निर्मलता से ही मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले विचारों की स्पष्टता अर्थात् बोधगम्यता के संदर्भ एवं प्रसंग में विश्लेषण निर्धारित हो पाता है जिसे मर्यादित आचरण द्वारा सम्प्रेषण को वृहद स्तर पर सामाजिक स्वीकारोक्ति के स्वरूप में मान्यता प्राप्त होती है । "

आत्मगत स्वरूप से क्षमा कल्याण : –

व्यवहार जगत में पवित्र अंतर्मन से स्वयं का अतिसूक्ष्म मूल्यांकन क्षमा कल्याण की भावभूमि को स्वीकार करते हुए – क्षमा द्वारा आत्महित एवं परहित के संज्ञान से आत्मगत स्वरूप में उत्तम क्षमा का यथार्थवादी प्रयोग किया जाना जीवन की उच्चता का प्रमाण है । सर्व मानव आत्मा के लिए मंगलकारी परिवेश की व्यापकता हेतु शुभ भावना एवं शुभ कामना जीवन की श्रेष्ठतम प्रार्थना के साथ–साथ व्यावहारिक दृष्टि से घटित और फलित के प्रति वृहद् कल्याणकारी प्रवृत्ति की शुभेच्छा का सात्विक परिणाम होता है ।जीवन में निमित्त स्थिति की अनुभूति द्वारा सर्वजनहिताय कार्य करते हुए स्वयं को उन्मुक्त रखना ही निर्माण चित्त अवस्था की व्यावहारिकता है जो निर्मल हृदय के स्वरूप में निरन्तर प्रवाहित होती रहती है तथा क्षमा कल्याण की सद्भावना शक्ति से निर्वाण को भी प्राप्त हो जाती है ।

दया धर्म के मूल सिद्धांत को आत्मसात करके जीवन में व्यावहारिक रूप से अनुपालन करने पर जीव दया का संवेदनशीलता पक्ष , क्षमा के कल्याणकारी श्रेष्ठतम स्वरुप में परिलक्षित एवं प्रस्फुटित होकर वीरों का आभूषण बन जाता है । प्रकृति के पंच तत्वों का नैसर्गिक धर्म और व्यावहारिक कर्म सृष्टि के संपूर्ण प्राणी मात्र को दाता स्वरूप बनकर उन समस्त जीवात्मा के प्रति – दया , करुणा , प्रेम , वात्सल्य , सहयोग एवं सहानुभूति रूपी सद्गुणों के सानिध्य में जीवन पर्यन्त सूक्ष्म और स्थूल स्वरूप से पालनहार की भूमिका में क्षमा कल्याण का भाव जगत भी सन्निहित रहता है ।

मानवीय आचरण द्वारा व्यवहार दर्शन : –

जीवात्मा संपूर्ण जीवन काल में स्वयं को आत्मगत स्वभाव के आधारभूत पक्ष से नियम–संयम के प्रति संचेतना द्वारा सजगता हेतु मर्यादित शैली में चेतावनी प्रदान करती है क्योंकि उसके वृहद परिदृश्य में मानवीयआचरण की गरिमामयी स्थिति को बनाए रखना का मूलभूत उद्देश्य अर्न्तनीहित होता है । सामाजिक जीवन में मानवीय आचरण को अत्यधिक संवेदनशील स्वरूपमें विश्लेषित किया जाता है जिसे अध्यात्म की आत्मिक ऊर्जा को आत्मसात करके ही स्वीकृत एवं सुनिश्चित किया जा सकता है जिसमें आत्मा की त्रिविध शक्तियाँ– मन, बुद्धि और संस्कार के श्रेष्ठतम सांमजस्य की कला समाहित रहती है । चेतना की पवित्रता से उपजने वाली उन्मुक्त अवस्था श्रेष्ठ व्यवहार को निभाने हुए मानवतावादी संबंध को विकसित करने में विश्वास रखती है जिसके परिणाम स्वरूप आत्मीय जुड़ाव के अंतर्गत निष्ठापूर्ण व्यावहारिकता की कुशलतम पृष्ठभूमि निर्मित हो जाती है ।

आध्यात्मिक चिंतन के परिवेश की विराटता द्वारा– मन, वचन, कर्म, समय, संकल्प ,सम्बन्ध एवं स्वप्न में भी पवित्रता का पुरुषार्थ करने में संलग्न साधक –आचरण के आचार्य स्वरुप में पारदर्शी जीवन से सदा सृजित रहकर व्यवहार दर्शन की उपयोगिता को प्रतिपादित कर देते हैं। जीवन में उच्चतम व्यवहार की दीर्घकालीन अपेक्षा का आरम्भिक परिवेश निज आत्मन से सर्व आत्मन बन्धुओं की ओर सम दृष्टि के सानिध्य में अग्रसर होता है जिसमें क्षमा भाव का कल्याणकारी दृष्टिकोण आत्मिक परिष्कार के हितार्थ सम्पूर्ण सक्रियता से क्रियाशील बना रहता है ।

आत्मिक उत्कर्ष में मनोगत पवित्रता : –

मनोगत पवित्रता की अवधारणा जीवात्मा के कल्याणकारी स्वरूप का महत्वपूर्ण बिन्दु होता है जहाँ से मन की शुद्धता का आरम्भिक काल श्रेष्ठतम के प्रतिश्रद्धा को अभिव्यक्त करते हुए – शुभम करोति कल्याण' में आस्था का बीजारोपण कर देता है जिससे व्यक्तिगत मान्यता पवित्र कर्म को क्रियान्वित करने के लिए अग्रसर हो जाती है । आत्म हित की दिशा में जब स्व–परिवर्तन को स्वीकार कर लिया जाता है तब अन्तर्मन में रूपान्तरण की क्रियाविधि

आत्मानुभूति के लिए सम्पूर्ण रूप से तत्पर हो जाती है और चेतना स्वयं को परिमार्जित करने के साथ ही परिवर्धन अर्थात आत्मगत विकास को आत्मिक परिष्कार के सम्बन्ध में पूर्णतया स्वीकार कर लेती है । व्यावहारिक जगत में मनोगत पवित्रता से अन्तःकरण के परिवेश को शक्तिशाली बनाने का कार्य पुरुषार्थ के द्वारा गतिशील रहता है जिसमें बाह्य जगत से भी मदद प्राप्त करने हेतु क्षमा भाव के कल्याणकारी परिदृश्य को अनुकरण एवं अनुसरण करने की सदा अनिवार्यता बनी रहती है ।

अनहद नाद का निरंतर अभ्यास आत्म तत्व एवं परमात्म सत्ता के पवित्रम सम्बन्धों का आधार बनता है जिसमें स्वयं से संवाद हेतु आत्म दर्शन की प्रक्रिया को आत्मसात करना होता है इसके साथ ही परमात्म दर्शन से परमानंद स्वरूप की अनुभूति आत्मिक उत्कर्ष का कारण बन जाती है । जगत में – मन, वचन एवं कर्म से पवित्र आत्माओं को ही चरित्रवान और महान आत्मा की संज्ञा से निरूपित किया जाता है तथा उनके जीवन को मूल्यवान स्वरूप में स्वीकार करके सर्व मानव आत्माओं के कल्याण में सहयोगी बनने के कारण आभार युक्तभाव अभिव्यक्त किया जाता है ।

भाव भासना का नैसर्गिक उपयोग : – प्रकृति प्रदत्त सृजनात्मक विद्या के अंतर्गत – ' सृजन के लिए सृजन ' की उत्पत्ति एवं उसका नैसर्गिक उपयोग चिन्तनशील स्वरूप में विद्यमान रहता है जिसमें मानवीय भावना और भासना अपनी सूक्ष्म तरंगों के माध्यम से जीवात्मा की उन्नति में सहायक सिद्ध होते हैं । आत्मीयता से युक्त भाव एवं भासना मनुष्य जीवन में मधुर सम्बन्धों महत्वपूर्ण आधार होते हैं जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व को क्षमा के कल्याणकारी गुण के साथ जोड़ देने पर आत्मगत चिंतन का परिवेश ही परिष्कृत स्वरूप में परिवर्तित हो जाता है । भाव जगत की पवित्रता को बनाये रखने के लिए आध्यात्मिक क्षेत्र मेंतत्व चिंतन की ओर अभिमुखित होते हुए आत्मा और परमात्मा के गुणानुवाद से समर्पित चेतना को सम्पूर्णता एवं सम्पन्नता अर्थात आत्म वैभव की भासना से अभिसिंचित करने का पुरुषार्थ सहजता से किया जाना परम आवश्यक होता है ।

आन्तरिक और बाह्य जगत के वातावरण को सौहार्दपूर्ण बनाये रखने हेतु भाव एवं भासना का नैसर्गिक उपयोग क्षमा कल्याण के सद्गुण से सुसज्जित होकर अर्न्तमन को शक्तिशाली बनाने की क्रियाविधि में गहनता से संलग्न रहता है। मानवीय व्यवहार के केन्द्र में जीवन के मूल्यपरक गुणों एवं शक्तियों से युक्त विभिन्न प्रकार की आदर्श स्थितियां होती हैं जिनके अनुगमन हेतु अंतः करण की पवित्रता सेयुक्त मनोगत की उपस्थिति सदा ही उपयोगी होती है ।

सुख शांति हेतु भावना भासना : –

आत्म जगत से सम्बंधित सम्पूर्ण स्वरुप का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि आत्मा के स्वमान , स्वरूप एव स्वभाब में अर्न्तनीहित तत्व क्षमा के कल्याणकारी स्वरूप स प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध हैं जिसके द्व ारा सर्व मानव आत्माओं को व्यवहार दर्शन से आत्म साक्षात्कार सुनिश्चित हो जाता है । अन्तर्मन की पवित्रता को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने हेतु मानवीय संवेदनशीलता सर्वाधिक प्र खर एवं मुखर रूप से प्रेरण्यी भूमिका निभाती है जिसमें मानवनिष्ठ सरोकार के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ ही अन्तःकरण कीपवित्र भावना का स्वरूप भाषायी शुचिता के द्वारा प्रतिबिम्बित होता है । जीवन में सुख. शाँति एवं आनंद के प्रकल्प की तलाश करते हुए व्यक्ति सैद्ध न्तिक रूपसे – ' रहिमन मीठे वचन से सुख उपजत चहुँ ओर...' तक पहुँच जाता है जहाँ उसे स्वयं की भावना पर कार्य करनेका सुअवसर प्राप्त होते ही – '' जाकी रही भावना , जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी...' का व्यावहारिक एवं निष्पक्ष व्याख्या अनुगमन हेतु प्राप्त हो जाती है ।

हृदय की निर्मलता से ही मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले विचारों की स्पष्टता अर्थात् बोधगम्यता के संदर्भ एवं प्रसंग में विश्लेषण निर्धारित हो पाता है जिसे मर्यादित आचरण द्व ारा सम्प्रेषण को वृहद स्तर पर सामाजिक स्वीकारोक्ति के स्वरूप में मान्यता प्राप्त होती है । आध्यात्मिक परिदृश्य के अन्तर्गत प्रविष्ठता से मुक्ति एवं जीवन मुक्ति की प्रासंगिकता को ढूंढ़ने का जतन मानवीय स्वभाव की प्रवृत्ति में समाविष्ट होता है जिसे क्षमा की पवित्र भावना एवं विचार द्वारा कल्याणकारी स्वरूप में प्राप्त करके आत्महित से शुद्ध उपयोग का श्रेष्ठतम परिवेश निर्मित किया जा सकता है।

❑❑

– **डॉ. अजय शुक्ल**
(व्यवहार वैज्ञानिक)
– स्वर्ण पदक , अंतरराष्ट्रीय मानवाधि ाकार सहस्राब्दी पुरस्कार – संयुक्त राष्ट्र संघ
–अंतरराष्ट्रीय ध्यान एवं मानवतावादी चिंतक और मनोविज्ञान सलाहकार प्रमु ख – विश्व हिंदी महासभा – भारत .
– राष्ट्रीय अध्यक्ष , अखिल भारतीय हिंदी महासभा
– समन्वय , एकता एवं विकास , नई दिल्ली .
– अध्यक्ष , राष्ट्रीय सलाहकार परिषद , प्रधान मार्गदर्शक और सलाहकार ,
राष्ट्रीय सलाहकारमंडल – आदर्श संस्कार शाला , आदर्श युवा समिति , मथुरा , उतर प्रदेश .
– संपादक एवं संरक्षक सलाहकार , अनंत शोध सृजन– वैश्विक साहित्य की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका – नासिक , महाराष्ट्र .
– प्रधान संपादक – मानवाधिकार मीडिया , वेब पोर्टल– विंध्य प्रांत , मध्य प्रदेश .
– प्रबंध निदेशक – आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययनएवं शैक्षणिक प्रशि क्षण केंद्र , –देवास – 455221
मध्य प्रदेश .
दूरभाष : 91 31 09 90 97

कंचन सागर
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
"हिन्दी की गूँज" प्रभारी
पानीपत (हरियाणा)

रमा पूर्णिमा शर्मा

हिंदी की गूंज का द्वितीय समारोह

टोक्यो,जापान से निकलने वाली हिन्दी की एक मात्र पत्रिका "हिन्दी की गूँज" का भारत के हरियाणा राज्य के पानीपत शहर में दूसरा भव्य अन्तर्राष्ट्रीय समारोह 18 अक्तूबर 2024 को होटल में "हिन्दी की गूँज" की प्रभारी श्रीमती कंचन सागर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

हम सब के लिए बड़े हर्ष और गौरव का विषय है कि "हिन्दी की गूँज" की संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा जी हमारी मातृभाषा हिन्दी का परचम विदेशों में फहरा रहीं हैं।वह हिन्दी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए पुरजोर मेहनत कर रहीं हैं और अपने इस प्रयास सफल भी हुईं हैं।

रमा शर्मा जी के संग न्यूयार्क से श्री इन्द्रजीत जी और भारत की धरती से श्रीमती विदुषी जी,श्रीमती मीनाक्षी जी,श्रीमती सोनिया अक्स जी, सुश्री कविता गुप्ता जी और श्री अमित कुमार कौशल जी ने कार्यक्रम का हिस्सा बन कर हमें गौरवान्वित किया।

पानीपत की श्रीमती मोनिका सलूजा जी ने अपनी चिर–परिचित शैली में सब को "काव्य गोष्ठी" के लिए आमन्त्रित किया और मंच संचालन कर के कार्यक्रम में चार चॉद लगाए। समय का पता ही नहीं चला कि कैसे बीत गया। श्रीमती कंचन सागर ने नारी कल्याण समिति की गतिविधियों के बारे में बताया जब कि श्रीमती रमा शर्मा जी ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि सराहना की। उपहारों के आदान–प्रदान के साथ ही कार्यक्रम अपनी समाप्ति की ओर बढ़ चला।

ये चिरस्मरणीय पल आजीवन याद किए जाएँगे। सच्चाई यही है कि यह "जापान की गुड़िया" हम सब का दिल ही ले गई है। अंत में इस थिरकती शाम में शामिल हो कर उस में नए रंग भरने के लिए इन लम्हों को यादगार बनाने के लिए और कार्यक्रम की शोभा में चार चाँद लगाने के लिए दिल से धन्यवाद करतें हैं और अपना बहुमूल्य समय देने के लिए दिल से आप का आभार व्यक्त करतें हैं।

❑❑

हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका की टीम का पानीपत में भव्य स्वागत

हिंदी की गूँज एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पत्रिका है, जो जापान से संचालित होती है और हिंदी भाषा और साहित्य को विश्व स्तर पर फैलाने का कार्य करती है। इस पत्रिका की टीम का पानीपत में आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है, जो न केवल स्थानीय साहित्यिक समुदाय के लिए, बल्कि पूरे हिंदी जगत के लिए एक उत्सव का अवसर है। कंचन सागर जी, जो इस पत्रिका के पानीपत प्रभारी हैं, उनके नेतृत्व में यह टीम साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रतिबद्ध है।

इंद्रजीत शर्मा जी जो वैश्विक शांति दूत के रूप में प्रसिद्ध हैं ने अपने वक्तव्य से सब को समाज सुधार के लिए भी प्रेरित किया । डॉ विदुषी शर्मा जो 4 वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर हैं, अपने लाजवाब व्यक्तव्य से सब को अभिभूत कर दिया। उन्होंने कंचन सागर जी और उनकी समस्त टीम की भूरि भूरि प्रशंसा की और भविष्य में एक वर्ल्ड रिकॉर्ड बुक पानीपत से निकालने का अपना निर्णय बताया । कविता गुप्ता और डॉ अमित कुमार कौशल हिंदी की गूँज के संपादक और सह संपादक ने भी अपनी रचनाओं से पानीपत टीम , नारी कल्याण समीति का आभार व्यक्त किया और अपनी शानदार रचनायें सुनाई ॥ सोनिया अक्स जी और मीनाक्षी जोशी जी जो हिंदी की गूँज की अतिथि के रूप आमंत्रित थी का भी पानीपत में शानदार स्वागत हुआ। सोनिया अक्स जी की मनमोह लेने वाली गजलें पूरी महफिल को मंत्र मुग्ध कर गई ।मीनाक्षी जोशी जी ने पानीपत टीम का हृदय से आभार व्यक्त किया ।

पानीपत, जिसे ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है, साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र भी रहा है। यहां के साहित्य प्रेमियों और लेखकों ने हमेशा से हिंदी भाषा को समृद्ध करने में योगदान दिया है। ऐसे में हिंदी की गूंज पत्रिका की टीम का स्वागत करना न केवल एक औपचारिकता है, बल्कि यह एक संकल्प है कि हम सभी मिलकर हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे।

कंचन सागर जी की अगुवाई में, नारी कल्याण समीति की पूरी टीम ने पानीपत के साहित्यिक समुदाय से संवाद स्थापित किया। उन्होंने सभी को प्रेरित किया कि वे अपनी रचनाओं को साझा करें और हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करें। इस संवाद के दौरान, कई स्थानीय लेखकों ने अपनी रचनाओं के बारे में चर्चा की और अपने विचार साँझा किए। यह एक ऐसा अवसर था, जहां नए विचारों का आदान–प्रदान हुआ और सभी ने मिलकर हिंदी भाषा की महत्ता पर विचार किया।

कविता गुप्ता
संपादक
हिंदी की गूंज
टोक्यो जापान

हिंदी की गूंज, टोक्यो जापान पानीपत में

हिंदी की गूँज की संपादक होने के नाते पहली बार मैं अतिथि की रूप में पानीपत के मैत्री समारोह में पहुंची।

अतिथि की रूप में ये मेरा पहला अनुभव था जो बहुत ही यादगार रहा। आदरणीया रमा शर्मा जी के सानिध्य में रहते हुए मुझे ये अवसर मिला इसके लिए मैं आदरणीया रमा जी की आभारी हूँ। पानीपत के समारोह में पहुंचते ही पुष्प वर्षा और माल्यार्पण से हमारा बहुत ही शानदार स्वागत किया गया। तत्पश्चात दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। वहाँ मुझे आदरणीया कंचन सागर जी से मिलने का अवसर मिला जो बहुत ही गुणी व्यक्तित्व की महिला हैं। वे समाज सेवा के साथ साथ हिंदी भाषा के क्षेत्र में भी अपना अतुलनीय योगदान दे रही हैं। उनके द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन करना हमारे लिए बड़े गर्व की बात है। उन्होंने हमपर जो प्रेम की वर्षा की उसकी व्याख्या शब्दों में कर पाना मुश्किल है। इसके लिए मैं उनका तहे दिल से शुक्रिया करना चाहती हूँ। इसी के साथ वहाँ उपस्थित सभी विद्वान और गुणी विद्वानों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला और मैं उसे अपने जीवन में जरूर अपनाऊंगी। आदरणीय इंद्रजीत शर्मा जी, आदरणीया डॉ विदुषी शर्मा जी, आदरणीय डॉ अमित कुमार कौशल जी और जितने भी विद्वान गण वहाँ उपस्थित थे सभी धनी प्रतिभा के व्यक्तित्व से परिपूर्ण हैं। और इस कार्यक्रम में सभी पानीपत के सदस्यों से जो प्रेम और स्नेह मिला उसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करती हूँ और ऐसे शानदार कार्यक्रम आयोजन और उसकी सफलता के लिए धन्यवाद और शुभकामनाएं देती हूँ।

❑❑

इस स्वागत समारोह में साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया, जिसमें कवि सम्मेलन, आपस के विचारों का आदान–प्रदान, सम्मान समारोह और अंत में सामूहिक नृत्य । जिसमें सब ने बहुत जोर शोर से हिस्सा लिया और कार्यक्रम को यादगार बना दिया । इन कार्यक्रमों ने न केवल स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया, बल्कि हिंदी की गूँज पत्रिका के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई। इससे यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी भाषा और साहित्य में एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है, जो हमारे समाज को एकजुट करने का कार्य करेगा।मोनिका सलूजा जी का मंच संचालन भी अद्वितीय रहा।सिमरन गिरधर, नीलम मेहता, ज्योत्सना गर्ग, सरोज आहूजा और रश्मि अखौरी जी जो पानीपत में हिंदी की गूंज के सदस्य हैं, के भावपूर्ण स्वागत ने सब को भावविभोर कर दिया। गीता बब्बर जी की कविता बहुत शानदार रही।

समापन में, कंचन सागर जी ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया और आशा व्यक्त की कि हिंदी की गूंज पत्रिका आगे भी इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी साहित्य को बढ़ावा देती रहेगी। इस प्रकार, पानीपत में हिंदी की गूंज पत्रिका की टीम का स्वागत एक नई शुरुआत का प्रतीक है, जो हिंदी भाषा के लिए नए आयामों को खोलने में सहायक होगा।

मुझे गर्व है कंचन जी और उनकी समस्त टीम और नारी कल्याण समीति पर जिन्होंने हिंदी की गूंज को एक यादगार अनुभव दिया । मुझे ही नहीं समस्त हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय परिवार को गर्व है कि हम इस शानदार यात्रा का हिस्सा बने हैं ।

बहुत बहुत आभार सहित

❑❑

तनिष्का डी
कक्षा–8 बी
मैरिया निकेतन
अंग्रेजी
स्कूल मैसूर

(पृष्ट –47 का शेष भाग)

लेकिन मन नहीं लगा। उसका ध्यान बारबार सामने बैठी सुंदर युवती की ओर चला जाता। युवती को देख उसकी आँखों के सामने बबिता का सुंदर हँसमुख चेहरा घूम गया। बीस वर्षीय गुलाब के फूल–सी गदराई बबिता। बबिता को लुभाने के लिए ही तो उसने ससुराल के नजदीक ही अपना तबादला करवाया था और सरकारी काम के बहाने वहाँ महीने में एक चक्कर तो लगा ही आता है। अब तो उसने नए फैशन के कपड़े सिलवाए हैं, बालों को सैट करवाया है। सिर में से सभी सफेद बाल उखाड़ फेंके हैं। अब तो वह पूरी तरह नवयुवक दिखता है। अब की बार वह बबिता को जरूर पटा लेगा–इस विश्वास के साथ ही वह न जाने किन ख्यालों में खो गया।

"अंकल, जरा मैगजीन देना," सामने बैठी युवती ने उसकी तंद्रा को भंग किया। उसके दोनों हाथ एकदम सीट पर कसे गए, मानो अचानक लगे झटके से नीचे गिर रहा हो। युवती को पत्रिका थमाते हुए उसकी नजरें झुकी हुईं थीं।

पता नहीं अचानक उसे क्या हुआ, अगले ही स्टेशन पर उतर कर वह घर के लिए वापसी गाड़ी में सवार हो गया।

❑❑

मोनिका सलूजा
मंच संचालक
पानीपत

पानीपत में हिंदी की गूँज का समारोह

आज का दिन नारी कल्याण समिति के इतने वर्षों के अध्याय का एक बहुत ही विशेष दिन रहा। जापान से निकलने वाली एकमात्र पत्रिका "हिंदी की गूँज" की संपादिका रमा शर्मा जी अपनी पूरी टीम के साथ जापान से पानीपत आई और जो वक्त सब ने एक साथ बिताया,यह हम सबके लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था। रमा शर्मा जी के साथ उनकी टीम में इंद्रजीत जी, अमित जी, कविता जी, विदुषी जी,मीनाक्षी जी एवं सोनिया जी उपस्थित रहे। रमा जी जापान से, इंद्रजीत जी न्यूयॉर्क से और बाकी सबने भारत से इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। सबका स्वागत नीलम मेहता जी, ज्योत्सना गर्ग जी और रश्मि अ खोरी जी ने तिलक लगाकर और फूलों की बरसात के साथ किया। ताजे फूलों की रंगोली भी सबका मन मोह रही थी। ज्योत्सना गर्ग जी ने अपने सहयोगियों के साथ पूरे हाल की साज सज्जा की जो देखते ही बन रही थी। उसके बाद प्रभु को याद करते हुए प्रेम और उत्साह का दीपक जलाया गया । इस प्रकार शनैः शनैः यह कार्यक्रम अपनी रवानगी की की ओर बढ़ने लगा। सबको भाव–विनय शब्दों से सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत कार्यक्रम की संचालिका मो. निका सलूजा ने की। उसके बाद कंचन सागर जी ने रमा शर्मा जी का और उनकी पूरी टीम का भावपूर्ण शब्दों में स्वागत किया। मुख्य अतिथि रमा शर्मा जी ने भी अपने सुंदर शब्दों से सबको संबोधित किया और अपने आने का लक्ष्य और सबके इतने प्रेम पूर्वक स्वागत के लिए धन्यवाद किया। इसके बाद इंद्रजीत जी ने भी अपनी जीवन यात्रा के विषय में संक्षेप में सबको जानकारी दी और सबका धन्यवाद किया । रमा शर्मा जी की अथक और निर्बाध जीवन यात्रा पर प्रकाश डालते हुए मोनिका सलूजा जी ने शब्दों का ऐसा समां बाँधा कि सब भाव विभोर हो उठे।रश्मि अखोरी जी ने अपनी बचपन की यादों को ताजा करते हुए सभी अतिथियों के स्वागत में एक बहुत ही खूबसूरत और मीठा गीत सुनाया। माधवी वर्मा जी ने भी क्लासिकल नृत्य प्रस्तुत करते हुए अपनी सादगी और भाव भंगिमा से सब का मन मोह लिया। भारत में इस दम तोड़ती हिंदी पर तंज कसते हुए मोनिका जी ने शब्दों के ऐसे बाण छोड़े जिसने सबको सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या अपने ही देश में हमारी अपनी ही भाषा हिंदी गूंगी और बहरी होती जा रही है? इस सच्चाई को सुनकर एक पल के लिए सन्नाटा–सा छा गया। कार्यक्रम को एक नया मोड़ देते हुए मोनिका सलूजा जी ने मुशायरे की सूचना दे डाली। बस फिर क्या था फिर तो शब्दों का ऐसा समां बंधा कि सब कुछ भूल कर सब एक अलग ही दुनिया में पहुंच गए। आज वह खूबसूरत दिन था जब हिंदी बोली जा रही थी, सुनी जा रही थी, कही जा रही थी, परोसी जा रही थी, सजाई जा रही थी और दिल तक महसूस की जा रही थी। सच में आज हिंदी गूँज रही थी।

मुशायरे में रश्मि अखोरी जी, ज्योत्सना गर्ग जी, सिमरन गिरधर जी,नीलम जी और मोनिका ने अप. नी–अपनी रचनाएँ सुनाईं। अब तो कार्यक्रम ने जैसे एक नई दिशा ले ली। अमित जी,कविता जी, सोनिया जी, मीनाक्षी जी सभी ने कविता के माध्यम से अपने–अपने सुंदर भाव र खे। सरोज आहूजा जी ने भी अपने मन की बातों से संबोधित किया।विदुषी जी बीच–बीच में अपने आप को रोक नहीं पा रही थी। उन्होंने भी अपने यथासंभव भाव रखे। पूरा माहौल एक अलग ही जोश से भर गया।

शोभा गोयल जी ने नारी कल्याण समिति की प्रधान कंचन सागर जी के लिए अपना विशेष लगाव जताते हुए कविता ही कह डाली।

नारी कल्याण समिति द्वारा सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न और उपहार भेंट करते हुए आभार व्यक्त किया गया। हिंदी की गूँज के माध्यम से ही आज इतने सारे मेधावी और विदुषी जन एक स्थान पर एकत्रित हुए थे। यह हिंदी की जीत थी।

इसके बाद रमा जी ने प्रेम पूर्वक लाये गए तोहफों के माध्यम से सबके दिलों पर अपने हस्ताक्षर किए। इस प्रकार सुंदर विचारों और तोहफों के आदान–प्रदान हुए।

अन्त में ज्योत्सना गर्ग जी ने बताया कि नारी कल्याण समिति पिछले छब्बीस वर्षों से समाज सेवा कर रही है। जिस का आरम्भ कुसुम गुप्ता जी ने किया था। उन के कुछ वर्ष पहले विदेश जाने से उन्होंने समिति की बागडोर कंचन सागर जी को सौंप दी थीं। समिति असहाय लोगों की मदद,निर्धन बच्चों की स्कूल फीस,उन की पढ़ाई का पूरा खर्च,स्कूल में विभिन्न प्रतियोगिताएँ रक्तदान शिविर, जरूरतमंद रोगियों का इलाज,
चिकित्सा शिविर, गरीब कन्याओं के विवाह आदि हर सम्भव व असम्भव कार्य करती है।उन्होंने सब का आभार व्यक्त किया और सब को बहुत ही शानदार भोजन करने को आमन्त्रित किया। सबने भोजन का पूरा आनंद लिया और दिलों में नारी कल्याण समिति द्वारा दिए गए इस अति प्रेम सागर को समेटे हुए हिंदी की गूँज की पूरी टीम दिल्ली के लिए रवाना हो गई।

❑❑

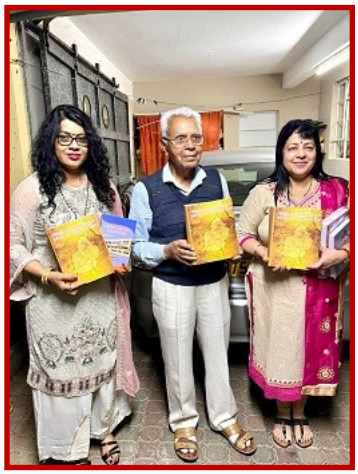

TULSI JAYANTI
WELCOME

RAMAYANA
CENTRE

गुनगुन
15 वर्ष
सेंट मेरी पब्लिक स्कूल ,मैनपुरी

तोशारिका कौशल
7 वर्ष/ प्रथम
माउंट एरा प्री स्कूल,अंबाला

पूर्वी एम के
आयु -10 वर्ष / कक्षा -5
श्री पी एम केंद्रीय विद्यालय मैसूरु

मानसी
कक्षा 10
सर्वोदय कन्या विद्यालय
नंद नगरी दिल्ली

कवर पृष्ठ
एलेना.एम.एस / कक्षा 6 बी
क्राइस्ट द किंग कॉन्वेंट
हायर प्राइमरी स्कूल मैसूर

साहिल, कक्षा-9

ऋचा
कक्षा आठ ए
स्कूल-एसकेवी
पीरागढ़ी गांव
नई दिल्ली